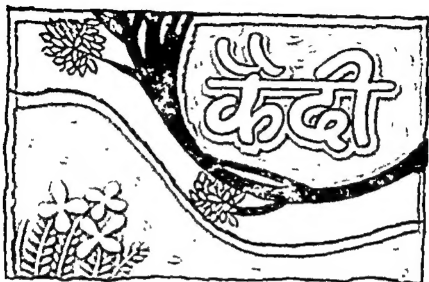
शान्ताकुमार



दो शब्द

नाहन जेल में हमारी पहली दीवाली थी। प्रातः से ही सब गुमसुम थे। एक सप्ताह से कुछ बन्दियों में यह आशा झलकती रही थी कि शायद दीवाली पर सबको रिहा कर दिया जाए। प्रतिदिन रेडियो ध्यान से सुना जाता था। पर दीवाली आ गई और जेल के दरवाज़े न खुले।

हममें से कुछ खूब मस्ती में रहते थे। सामान मंगवाया। नाहन जेल की उस सूनी कोठरी को दीपों से जगमगा दिया। सब बंदी बड़े प्रसन्न हुए। एक आजीवन बंदी ने कहा कि उसने आठ साल के बाद दीवाली का दीप देखा है। बढ़िया भोजन बनाया। खाया। पूजा भी की।

बाहर से सब मस्ती का लबादा ओढ़े थे, पर मन ही मन घर की याद सबके दिल में टीस डाल रही थी। जेल में पटाखे चलाने की आज्ञा नहीं दी गई। नाहन नगर से पटाखों की आवाज़ बराबर आ रही थी। उस आवाज़ की आवाज़ में गूंजती गूंज हमारे दिलों की धड़कनों को तेज़ कर देती और हमारी आंखों के सामने अपना घर व परिवार घूम जाता।

सब सो गए। कुछ करवटें बदलते रहे। मुझे नींद नहीं आ रही थी। करवटें बदल-बदलकर भी थक गया। आंखों के पानी ने सिरहाने को गीला कर दिया।

कमरे के एक कोने में परदा लगाकर एक मेज़-कुर्सी रखे थे। जो रात को पढ़ना चाहे, वह वहीं चला जाता था। परदा इसलिए था कि साथियों की नींद में खलल न पड़े। पढ़ने के बहाने से कई वहां सारी रात तक बैठे थे। बहाना पढ़ने का होता था, पर अधिकतर घर की याद में आंसू बहाते थे।

रात के बारह भी बज गए, पर नींद न आई। उठा और उसी परदे के पीछे बिजली जलाकर बैठ गया। नगर से पटाखों की आवाज़ अभी भी कमरे को गुंजा रही थी।

तभी बिजली की तरह एक विचार मनमस्तिष्क पर घूम गया—'मुझे कुछ लिखना चाहिए, तभी दिल हल्का हो सकेगा।'

मैं उछल-सा पड़ा। धीरे से अपने विस्तर के पास आया, कापी-पेन लिया और परदे के पीछे की कुर्सी पर बैठ गया। पेन की नोक कापी के कागज़ पर पड़ी और यह उपन्यास यों शुरू हो गया, जैसे परीक्षा में छात्र रटे-रटाए उत्तर लिख रहा हो। उसी रात कई पृष्ठ लिख गया। उपन्यास वहीं से शुरू हुआ, जहां मैं था, अर्थात दीवाली की रात को एक कैदी जेल में बन्द है…

'कैदी' नाहन जेल में लिखी मेरी प्रथम रचना है। यह मेरा प्रथम उपन्यास है।

पता नहीं पाठकों को कैदी कैसा लगेगा… कुछ भी हो, यह एक कैदी द्वारा लिखी एक कैदी की कहानी है। जेल अधिकारियों की नज़रों से बचाने के लिए इसे भी कैद रहना पड़ा…किसी प्रकार पाण्डुलिपि बाहर भेज दी गई थी।

मेरे प्रथम प्रकाशित उपन्यास 'मन के मीत' पर कितने ही पाठकों की प्रतिक्रिया व सम्मति मुझे मिली है। उन्हें पढ़कर मुझे आनन्द भी आया, सन्तोष भी और भविष्य के लिए दिशा भी मिली।

'कैदी' पर भी मेरे पाठक मुझे कुछ लिख भेजें तो स्वागत करूंगा।

—शान्ताकुमार

मुख्यमंत्री
हिमाचल प्रदेश
शिमला-१७१००२

आज दीवाली की रात थी। चारों ओर से दीपों, मोमबत्तियों व बिजली के बल्बों का प्रकाश दिशाओं को प्रकाशित करता हुआ राजीव की इस बैठक भी अपनी धीमी किरणें बिखेर जाता था। पटाखों की गूंजती आवाजों को दहला रही थी। इस गुलजार कोने की नीरवता भी आज जगमगा में प्रकाशित होने व पटाखों की आवाज से गुंजित होने का प्रयत्न करती-सी लग रही थी। राजीव जब दूर शून्य के घने अन्धकार में दृष्टि घुमाता देखता कि आतिशबाजियां धरती से आकाश छूने निकल पड़तीं, दूर आसमान में जाकर प्रकाश का एक पुंज बिखेरतीं और फिर शोर के पटाखे की आवाज आती। रात्रि का प्रथम पहर दिन की तरह जगमगा रहा था।

जेल की अपनी बैरक के दरवाजे की लोहे की सलाखों पर सिर टिका राजीव कब से यह सारा दृश्य देख रहा था। आज प्रातः से ही वह उदास था। वह प्रतीक्षा करता रहा था, पर वह नहीं आई थी। अब रात का दूसरा पहर भी दस्तक दे रहा था, पर राजीव दरवाजे पर सिर टिकाए मानो गुम हुआ जा रहा था। उसे न सर्दी लग रही थी, न आंखों में नींद थी।

"राजीव! उठो, यहां बैठे क्या सोच रहे हो? एक क्या अभी कितनी ही दीवालियां इन्हीं सीखचों के अन्दर घुट-घुटकर हमें बितानी हैं। इस तरह घण्टों सोचते रहने से पागल हो जाओगे। उठो, सो जाओ।" साथी मोहन ने उसके कन्धे पर हाथ रखकर कहा। राजीव का मानो नशा टूट गया। उसे कल्पना के पंखों पर उड़ते हुए मानो किसी ने धरती पर पट

दिया। तभी एक तरफ से ज़ोर से 'सब ठीक है' की कर्ण-कटु आवाज़ गूंजी।

"मोहन, मुझे यहीं रहने दो," सिर घुमाकर राजीव बोला।

"नहीं। यों सोचते रहने से न कभी कुछ हुआ है और न ही कुछ होगा राजीव! तुम तो बहुत समझदार हो।"

"तभी तो यहां खड़ा हूं।"

"क्या मतलब ?"

"दिल में घुट रहा गुब्बार कुछ निकल जाए, इसीलिए तो यहां खड़ा था।"

"पर इस तरह गुब्बार निकलता नहीं। अकेले सोचते रहने से तो चिन्ता का धुआं घुटता है और अन्तर् को जला देता है। उठो। चलो सो जाओ।"

"···टक···टक···" बूटों की एक कर्कश आवाज़ ने दोनों का ध्यान खींच लिया।

"अरे! रात के दस बज गए। तुम दरवाज़े पर क्या कर रहे हो? पाजी कहीं के! औरों को भी सोने नहीं दोगे? जाओ, सो जाओ। वरना···।" पहरे पर तैनात वार्डर की क्रोध-भरी आवाज गूंजी।

"वरना···वरना क्या ?" मोहन बोल उठा।

"अबे पाजी···उल्लू···ज़बान खोलता है ?"

"कैद मुझे हुई है मेरी ज़बान को नहीं। मैं कैदी हूं, मीसा का नज़रबन्द नहीं।" मोहन तुनककर बोला।

"वार्डर साहब! ज़रा दीवाली की जगमगाहट में घर की याद सता रही थी। यहां बैठ गया। हम कुछ भी तो नहीं कर रहे। आप व्यर्थ में गाली देकर हमारा दिल भी दुखा रहे हैं और अपनी ज़बान भी गन्दी कर रहे हैं।" राजीव की गम्भीरता से कही यह बात सुन वार्डर दूसरी तरफ चला गया।

मोहन राजीव को उठाकर अपने बिस्तर पर ले आया। फिर उसीके पास बैठकर बोला, "राजीव! आखिर बात क्या है? तुम आज प्रातः से ही इतने अधिक उदास क्यों हो? तुम्हारे चेहरे पर इतनी अधिक उदासी पहले कभी नहीं देखी। याद रखो तुम्हें पूरे सात साल यहीं, इसी कोठरी में बिताने हैं। एक नहीं पूरी सात दीवालियां।"

"मोहन! जबसे मैं जेल आया हूं, आज पहली बार मेरी पत्नी रेखा अपने वायदे के अनुसार मुझे मिलने नहीं आई। उसने पत्र में लिखा था कि वह

छत की ओर एकटक लगाए पागल की तरह देख रहा था। उसकी नज़रें छत से हटकर साथी कैदियों के चेहरों पर तैरने लगीं।

"बाबूजी ! क्या बात है ? यदि आपको कोई रोग या तकलीफ है तो बताएं। हम आपकी कोई सेवा करें।" सूरत ने उसके पास आकर अपनी भोली आंखें मलते हुए कहा।

"रोग-तकलीफ कुछ भी नहीं। मैं सपना देख रहा था। अभी-अभी अपने घर में अपनी पत्नी व बच्ची के साथ मैं दीवाली मना रहा था। एक फुलझड़ी से मेरी सुन्नो का हाथ जल गया। वह पीड़ा से तड़प उठी। मैं उसकी तड़प देख छटपटा उठा।" कहते-कहते राजीव का गला आंसुओं से जकड़-सा गया। उसने साथी कैदियों से इस असुविधा के लिए क्षमा मांगी। सबने उसे फिर सान्त्वना व सहानुभूति के शब्द कहे और सो गए।

दीवाली की खुशियां समेट रात घोर अन्धकार में समा गई थी। वातावरण शांत था। लगता था सारा व्यक्त ब्रह्म इसी प्रकार अव्यक्त ब्रह्म में लीन होता होगा। अगले दिन का दूसरा प्रहर शुरू होने को था। जेल का बड़ा दरवाज़ा हिला। उस बड़े दरवाज़े के दाईं ओर का एक छोटा-सा दरवाज़ा कुछ खुला। जेल का यह बड़ा गेट तभी खुलता है, जब जेल अधीक्षक या कोई बड़ा अधिकारी भीतर आ रहे हों। बाकी सबके लिए तो बड़े दरवाज़े के एक ओर बना छोटा-सा खिड़की की तरह का दरवाज़ा ही खुलता है।

प्रातः के तीन बज रहे थे। वार्डरों की ड्यूटी बदल रही थी। अन्दर के वार्डर बाहर गए व बाहर से अन्दर आए। वे अपने-अपने स्थान पर तैनात हो गए।

बड़े गेट से सीटी की आवाज़ गूंजी और उसीके साथ 'ठीक है', 'ठीक है' की तीखी आवाज़ें उभरीं। राजीव फिर चौंक पड़ा।

'ठीक है ! क्या ठीक है ? कुछ भी तो नहीं। दीवाली बीत गई, रेखा नहीं आई। उसके हाथ की मिठाई तक भी न मिली। सपना आया पर उसमें भी सुन्नो का हाथ जल गया। इधर यह मेरी लुटी-पिटी दुनिया और उधर 'ठीक है' का यह उद्घोष ! क्या विडम्बना है !' राजीव मन ही मन बड़बड़ाया। उसने करवट बदली और सो गया। फिर से स्वप्न-लोक में जा पहुंचा।

राजीव चुपचाप दबे पाव एक कमरे से दूसरे कमरे की ओर गया। सुन्नो को उसने कुछ मिठाई दे दी। वह उसे खाने में लग गई। दूसरे कमरे में टंगी लक्ष्मी की तसवीर के पास खड़ी होकर रेखा आंखें बन्द किए धूप जलाए वन्दना में मग्न थी। दबे पांव राजीव उसके ठीक पीछे खड़ा हो गया। पीछे से अपनी भुजाएं आगे बढ़ा उसने रेखा को समेट लिया।

"रेखा ! क्या माग रही हो लक्ष्मी देवी से ? पहले इस धरती के अपने देवता को तो सन्तुष्ट कर लो। देखो यह आज का दिन और ये प्यारे-से होंठ।" रेखा का मुंह अपनी ओर घुमाकर वह उसकी आखों की गहराइयों में डूब गया। रेखा के हाथ में सुलग रही धूप का उठता लहराता व बलखाता धुआं दोनों के बीच धुएं की एक बारीक जाली बुन रहा था। धुएं की उस बारीक धुंधली बदली में दोनो एक-दूसरे में खोए एक गहरी सोच में डूब रहे थे।

"रेखा ! मैं जानता हूं तुम लक्ष्मी से क्या माग रही हो ! यही न कि खूब धन-धान्य, कोठी, कार, साड़ियां, ऐश्वर्य की सब सुविधाएं तुम्हारे पास हों !" राजीव ने मौन तोड़ते हुए कहा। पर तभी रेखा ने उसके मुंह के शब्दों पर अपनी कोमल हथेली रख पूर्ण विराम लगा दिया। राजीव ने पास पड़े मिठाई के डब्बे से एक गुलाब जामुन निकाला और उसे रेखा के मुंह में डालने का यत्न करते हुए बोला, "रेखा मैंने हार मान ली है। अब जीवन दाव पर लगाकर भी तुम्हारे लिए एक विशाल ऐश्वर्य का साम्राज्य खड़ा करूंगा, पर मेरे दिल की रानी, मेरी रेखा, अभी तो यह गुलाब जामुन ही लो।"

ज्यों ही गुलाब जामुन पकड़े राजीव की अगुलियां आगे बढ़ीं रेखा के होंठ गुलाब जामुन के लिए नही, अपितु एक तेज चीख मारते हुए खुल गए। एक ज़ोर की चीख मारती हुई रेखा राजीव के हाथों से निकल भागी।

"रेखा···रेखा···!" चिल्लाता हुआ राजीव रेखा के पीछे भागने लगा। रेखा ओझल होती गई।

"बाबुजी ! बाबुजी ! क्या देखा ? आप देखा-देखा क्या कह रहे हैं ?" पास के बिस्तर से जगकर सूरत बोला।

राजीव आंखें मलता हुआ उठ बैठा। उसकी आखों में रेखा की मूर्ति

छत की ओर एकटक लगाए पागल की तरह देख रहा था। उसकी नजरें छत से हटकर साथी कैदियों के चेहरों पर तैरने लगीं।

"बाबूजी ! क्या बात है ? यदि आपको कोई रोग या तकलीफ है तो बताएं। हम आपकी कोई सेवा करें।" सूरत ने उसके पास आकर अपनी भोली आंखें मलते हुए कहा।

"रोग-तकलीफ कुछ भी नहीं। मैं सपना देख रहा था। अभी-अभी अपने घर में अपनी पत्नी व बच्ची के साथ मैं दीवाली मना रहा था। एक फुलझड़ी से मेरी सुन्नो का हाथ जल गया। वह पीड़ा से तड़प उठी। मैं उसकी तड़प देख छटपटा उठा।" कहते-कहते राजीव का गला आंसुओं से जकड़-सा गया। उसने साथी कैदियों से इस असुविधा के लिए क्षमा मांगी। सबने उसे फिर सान्त्वना व सहानुभूति के शब्द कहे और सो गए।

दीवाली की खुशियां समेट रात घोर अन्धकार में समा गई थी। वातावरण शांत था। लगता था सारा व्यक्त ब्रह्म इसी प्रकार अव्यक्त ब्रह्म में लीन होता होगा। अगले दिन का दूसरा प्रहर शुरू होने को था। जेल का बड़ा दरवाजा हिला। उस बड़े दरवाजे के दाईं ओर का एक छोटा-सा दरवाजा कुछ खुला। जेल का यह बड़ा गेट तभी खुलता है, जब जेल अधीक्षक या कोई बड़ा अधिकारी भीतर आ रहे हों। बाकी सबके लिए तो बड़े दरवाजे के एक ओर बना छोटा-सा खिड़की की तरह का दरवाजा ही खुलता है।

प्रातः के तीन बज रहे थे। वार्डरों की ड्यूटी बदल रही थी। अन्दर के वार्डर बाहर गए व बाहर से अन्दर आए। वे अपने-अपने स्थान पर तैनात हो गए।

बड़े गेट से सीटी की आवाज गूंजी और उसीके साथ 'ठीक है', 'ठीक है' की तीखी आवाजें उभरीं। राजीव फिर चौंक पड़ा।

'ठीक है ! क्या ठीक है ? कुछ भी तो नहीं। दीवाली बीत गई, रेखा नहीं आई। उसके हाथ की मिठाई तक भी न मिली। सपना आया पर उसमें भी सुन्नो का हाथ जल गया। इधर यह मेरी लुटी-पिटी दुनिया और उधर 'ठीक है' का यह उद्घोष ! क्या विडम्बना है !' राजीव मन ही मन बड़बड़ाया। उसने करवट बदली और सो गया। फिर से स्वप्न-लोक में जा पहुंचा।

राजीव चुपचाप दबे पांव एक कमरे से दूसरे कमरे की ओर गया। मुन्नो को उसने कुछ मिठाई दे दी। वह उसे खाने में लग गई। दूसरे कमरे में टंगी लक्ष्मी की तसवीर के पास खड़ी होकर रेखा आखें बन्द किए धूप जलाए वन्दना में मग्न थी। दबे पांव राजीव उसके ठीक पीछे खड़ा हो गया। पीछे से अपनी भुजाएं आगे बढा उसने रेखा को समेट लिया।

"रेखा ! क्या मांग रही हो लक्ष्मी देवी से ? पहले इस धरती के अपने देवता को तो सन्तुष्ट कर लो। देखो यह आज का दिन और ये प्यारे-से होंठ।" रेखा का मुंह अपनी ओर घुमाकर वह उसकी आखों की गहराइयों में डूब गया। रेखा के हाथ में सुलग रही धूप का उठता लहराता व बलखाता धुआं दोनों के बीच धुएं की एक बारीक जाली बुन रहा था। धुएं की उस बारीक धुंधली बदली में दोनों एक-दूसरे में खोए एक गहरी सोच में डूब रहे थे।

"रेखा ! मैं जानता हूं तुम लक्ष्मी से क्या मांग रही हो ! यही न कि खूब धन-धान्य, कोठी, कार, साड़िया, ऐश्वर्य की सब सुविधाएं तुम्हारे पास हों !" राजीव ने मौन तोड़ते हुए कहा। पर तभी रेखा ने उसके मुंह के शब्दों पर अपनी कोमल हथेली रख पूर्ण विराम लगा दिया। राजीव ने पास पड़े मिठाई के डब्बे से एक गुलाब जामुन निकाला और उसे रेखा के मुंह में डालने का यत्न करते हुए बोला, "रेखा मैंने हार मान ली है। अब जीवन दाव पर लगाकर भी तुम्हारे लिए एक विशाल ऐश्वर्य का साम्राज्य खड़ा करूंगा, पर मेरे दिल की रानी, मेरी रेखा, अभी तो यह गुलाब जामुन ही लो।"

ज्यों ही गुलाब जामुन पकड़े राजीव की अंगुलिया आगे बढी रेखा के होंठ गुलाब जामुन के लिए नही, अपितु एक तेज चीख मारते हुए खुल गए। एक जोर की चीख मारती हुई रेखा राजीव के हाथो से निकल भागी।

"रेखा…रेखा…!" चिल्लाता हुआ राजीव रेखा के पीछे भागने लगा। रेखा ओझल होती गई।

"बाबुजी ! बाबुजी ! क्या देखा ? आप रेखा-रेखा क्या कह रहे हैं ?" पास के बिस्तर से जगकर सूरत बोला।

राजीव आंखें मलता हुआ उठ बैठा। उसकी आखों में रेखा की मूर्ति

झलक रही थी। जेल की बैरक व विस्तर देखकर एकबार तो वह चौंक ही पड़ा।

"क्या सपने में आपने कुछ देखा? आप तो आज वस सपने ही लेते रहे। सोएंगे नहीं क्या?" सूरत ने अपना कम्वल नीचे से खींचते हुए कहा। राजीव ने इधर-उधर देखा। वह कुछ शरमा गया। अवकी वार केवल सूरत की आंख ही खुली थी। वाकी कैदी सोए रहे।

"सूरत! किसीसे कुछ मत कहना। मुझे सपना आ रहा था। मेरी पत्नी रेखा···!" धीरे से राजीव ने कहा। फिर वह कम्वल सिर पर लेकर लेट गया। तभी वाहर घण्टे की चार वार वजने की आवाज़ आई। फिर सीटी की वारीक आवाज़ ने अन्धकार के सीने को चीर डाला और उसके वाद 'ठीक है' की कर्णभेदी गूंज से जेल का नीरव वातावरण भी कांप-सा गया।

नींद नहीं आ रही थी। कम्वल मुंह तक लेकर राजीव ने अपने अतीत की ओर झांकना शुरू किया। सिनेमा रील की तरह एक-एक परत उघड़ने लगी। इस सारे नाटक का आदि व अन्त उसके कम्वल के ताने-वाने पर पड़ रहे झीने प्रकाश की किरणों में चित्रित हो उठा।

२

पांच वर्ष पूर्व राजीव का रेखा से विवाह हुआ था। राजीव एक साधारण गरीव परिवार में एक छोटे-से गांव में पैदा हुआ था। वड़ी कठिनाई से मैट्रिक किया। पिता लोगों की ज़मीन काश्त करके अपना गुज़र चलाते थे। मां भी खेतों में काम करती। पर सनातनी विचारों की थी। व्रत-पूजा का क्रम भी सदा चलता रहता था। खेत में हल चलाते वैलों को घास डालते व भूमि के रोड़े तोड़ते-तोड़ते राजीव ने जव अच्छी श्रेणी से मैट्रिक पास कर लिया तो आगे पढ़ने की उसकी इच्छा हुई। पर पिता न आगे पढ़ने की वात सोच सकते थे न ही निभा सकते थे। कभी ट्यूशन, कभी किसी दूकान की छोटी-सी नौकरी करके राजीव ने जैसे-तैसे प्राइवेट वी० ए० पास कर लिया। उसके इस परिश्रम को गांव व परिवार में खूब सराहा गया था।

फिर दिल्ली के एक बड़े सरकारी कार्यालय मे एकाउंट विभाग मे उसकी नियुक्ति हो गई। अपनी योग्यता व परिश्रम के कारण वह शीघ्र ही एक मुख्य पद पर पहुंच गया था।

विवाह हुआ तो राजीव व रेखा ने प्यार के नशे में प्यार की दुनिया मे पैर रखा था। सुहागरात का अधिक समय एक-दूसरे के प्यार की कसमें खाने में बीता था। जीवन की ऊषा लहलहाते प्यार की उल्लासमयी लाली से रक्ताभ हो उठी थी। छोटा-सा घर प्यार से लबालब हो गया था। जो कुछ भी मिल गया था, वह राजीव के लिए बहुत कुछ ही नही, बल्कि सब कुछ था। पास-पड़ोस के लोग उनके एक-दूसरे के प्रति प्यार की चर्चा करते व सराहते।

प्रातः कार्यालय जाते समय राजीव कितनी ही देर दरवाज़े पर खड़ा रहता। रेखा उसे विदा देने के लिए दरवाज़े के अन्दर सामने खड़ी रहती। शाम को जल्दी आने का रेखा वायदा लेती। राजीव चलने लगता तो रेखा फिर आवाज़ दे देती। पास बुला लेती, और कोई चीज़ लाने की याद दिला देती। ज्यों ही राजीव के पैर आगे बढ़ते रेखा फिर किसी बहाने उसे आवाज़ देती। उसे अन्दर बुला लेती, रुआंसी हो जाती, उसके कन्धे पर अपना सिर रखकर बोलती, "अब इस मकान में मैं अकेली कैसे रहूंगी?" तब उसे अपनी बाहों में समेटकर राजीव कहता, "बस शाम को ही तो मैं आ जाऊंगा।" इस पर रेखा मुह ऊपर उठा उसकी आंखों मे आंखें डाल बोलती, "जानते हो शाम कब होगी? अभी पूरे सात से भी कुछ अधिक घण्टे हैं। एक घण्टे के साठ मिनट, एक मिनट के साठ सैकिण्ड और एक सकिण्ड में कितनी ही धड़कनें—मुझसे इतना समय नही काटा जाता।"

तब राजीव उसे अपनी बाहो मे और कस लेता और उसके श्वासों की गर्मी को अनुभव करते हुए कहता, "रेखा! मैं तुम्हारे पास लौट आने के लिए आफिस जा रहा हूं। फिर मैं तो जा नही रहा, बस मेरा यह शरीर ही जा रहा है। मैं, मेरा मन, मेरा दिल सब तुम्हारे पास है। गीता पढ़ी है तुमने! मैं कोई मांस-हड्डी का शरीर ही तो नही हूं। मैं तुम्हारे पास तुम्हारे दिल में, तुम्हारे दिल का कैदी। और यह तुच्छ शरीर आजीविका कमाने आफिस जाएगा। ठीक है न मेरी अच्छी रेखा?" यह कहते हुए वह रेखा के गाल पर

हलकी चपत लगाकर वाहर निकल पड़ता।

"ज़रा सुनो तो !" रेखा फिर आवाज़ लगा देती, "कुछ पढ़ने के लिए लेते आना। अकेली सारा दिन वोर होती रहती हूं।" रेखा वात पूरी करती।

"तो तुम्हें दिल लगाने के लिए खिलौना चाहिए। ठीक है, आज शाम विरला मन्दिर चलेंगे। वहां भगवान से एक सुन्दर-सा, तुम्हारी तरह का एक गोल कोमल नन्हा मुन्ना···" राजीव चुटकी लेकर वाहर चला जाता। लगभग हर रोज़ इसी प्रकार से विदाई के ये क्षण रंगीन हो झूम उठते।

आफिस में राजीव को दिल लगाना मुश्किल हो जाता। पांच वजते और उसके कदम घर की ओर भागते। रेखा तो चार वजे ही दरवाज़े पर आना-जाना शुरू कर देती। वह प्रति सायं उसका उसी प्रकार स्वागत करती, जैसे वर्षों के वाद कोई सैनिक युद्ध जीतकर घर लौट रहा हो।

दोनों के प्यार का बीज स्नेहशील धरती पर बड़े दुलार से अंकुरित हो रहा था। परस्पर समर्पित जीवन की गाड़ी ठीक पटरी पर स्वाभाविक गति से चल रही थी। उन्हें लगता था अव इस प्यार के आगे दुनिया में और कुछ भी नहीं है, जिसे उन्हें पाना है। सव मिल गया उन्हें, सर्वस्व पा लिया उन्होंने। रेखा की घुंघराली अलकों में अपनी अंगुलियां नचाते कभी-कभी राजीव कहता, "रेखा ! संसार का सारा ऐश्वर्य, वैभव व सौन्दर्य मुझे तुम में मिल गया है। यदि तुम्हारे लिए मुझे सर्वस्व भी देना पड़े तो मैं परम सन्तोप का अनुभव करूंगा। इस दुनिया में मेरी तरह शायद ही कोई सुखी हो।"

और रेखा उसके होंठों पर अपनी अंगुली रखकर बोलती, "तुम्हें पाने से वढ़कर भी इस दुनिया में और कुछ हो सकता है, मैं इसकी कल्पना भी नहीं कर सकती। पता नहीं कितने जन्मों की प्यास बुझी है इस मिलन से।"

दोनों प्यार के आदर्शों के आकाश पर ऊंची उड़ानें भर रहे थे। उन्हें यह जानने का समय ही न था कि आदर्श के आकाश से यथार्थ की धरती वहुत नीचे होती है।

उधर विवाह के दो वर्ष पूरे हुए और इधर रेखा की गोद एक नन्हीं वेटी से लहलहा उठी। यद्यपि मनौतियां लड़के के लिए मनाई गई थीं तो भी लड़की का भरपूर स्वागत हुआ। अपने प्यार का साकार रूप पाकर दोनों

की प्रसन्नता का पारावार न रहा। इसके साथ ही परिवार की आवश्यकताएं भी बढने लगी। राजीव ने अपने साधनों के अनुसार उन सब आवश्यकताओं को पूरा किया।

पड़ौस मे एक पुरी दम्पति रहता था। उनके घर भी कुछ दिन पूर्व एक लड़का पैदा हुआ था। उनकी अपनी कोठी व कार तो थी ही, पर नवागत बच्चे की देखभाल करने के लिए एक आया थी व घर का बाकी काम करने के लिए एक अलग नौकर था। बाहर का काम करने के लिए पुरी के आफिस से मिला हुआ अरदली था।

रेखा को सब काम स्वयं करना पड़ता था। स्वयं काम करने में उसे कुछ कठिनाई नहीं होती थी, क्योंकि उसके पिता का घर भी साधारण दर्जे का था। घर का सारा काम करने की उसे आदत थी। पिता के घर तो गाय व भैंसें भी थीं; वह बचपन से ही प्रातः उठकर सब प्रकार का घर का काम करने की अभ्यस्त थी। पर यहां जब भी वह अपने मकान से बाहर निकलती और श्रीमती पुरी को अपने आगन में धूप मे कुर्सी पर आराम करते या अखबार पढ़ते देखती तो उसे अन्दर ही अन्दर कुछ चुभन-सी होती। श्रीमती पुरी की आया बच्चे को उठाए घूमती रहती। जब दिल करता श्रीमती पुरी कुछ देर के लिए बच्चे को गोद मे लेती, उसे प्यार करती, पर जब वह टट्टी-पेशाब करता या रोने लगता या श्रीमती को पुरी को 'विविध भारती' से गाने सुनने होते तो वह तुरन्त बच्चे को आया के पास देकर चली जाती। जब श्री पुरी आफिस से आते तो नौकर बाहर मेज रखता। चाय का सारा सामान सजाता। वे दोनों चाय पीते और फिर कार में बैठ-कर सिनेमा या कहीं और घूमने चले जाते।

इधर रेखा अब जकड़ी-सी गई। बेटी ने घर का काम दुगना कर दिया। प्यार का उफान कुछ उतरने लगा। अब बाजार घूमना व सिनेमा जाना तो बिलकुल बन्द हो गया। न नन्ही सुन्नो को किसीके पास छोड़ सकते थे, न ही साथ लेकर जा सकते थे। वह प्रसूति की दुर्बलता से उभर भी न पाई थी कि घर का सारा काम उसे ही करना पड़ता था। अब वह राजीव से कभी-कभी मीठी शिकायत भी करने लगी।

भला राजीव अपनी रेखा की शिकायत अनसुनी कैसे कर सकता था!

हलकी चपत लगाकर वाहर निकल पड़ता।

"ज़रा सुनो तो !" रेखा फिर आवाज़ लगा देती, "कुछ पढ़ने के लिए लेते आना। अकेली सारा दिन वोर होती रहती हूं।" रेखा वात पूरी करती।

"तो तुम्हें दिल लगाने के लिए खिलौना चाहिए। ठीक है, आज शाम विरला मन्दिर चलेंगे। वहां भगवान से एक सुन्दर-सा, तुम्हारी तरह का एक गोल कोमल नन्हा मुन्ना···" राजीव चुटकी लेकर वाहर चला जाता। लगभग हर रोज़ इसी प्रकार से विदाई के ये क्षण रंगीन हो झूम उठते।

आफिस में राजीव को दिल लगाना मुश्किल हो जाता। पांच वजते और उसके कदम घर की ओर भागते। रेखा तो चार वजे ही दरवाज़े पर आना-जाना शुरू कर देती। वह प्रति सायं उसका उसी प्रकार स्वागत करती, जैसे वर्षों के वाद कोई सैनिक युद्ध जीतकर घर लौट रहा हो।

दोनों के प्यार का वीज स्नेहशील धरती पर वड़े दुलार से अंकुरित हो रहा था। परस्पर समर्पित जीवन की गाड़ी ठीक पटरी पर स्वाभाविक गति से चल रही थी। उन्हें लगता था अव इस प्यार के आगे दुनिया में और कुछ भी नहीं है, जिसे उन्हें पाना है। सव मिल गया उन्हें, सर्वस्व पा लिया उन्होंने। रेखा की घुंघराली अलकों में अपनी अंगुलियां नचाते कभी-कभी राजीव कहता, "रेखा ! संसार का सारा ऐश्वर्य, वैभव व सौन्दर्य मुझे तुम में मिल गया है। यदि तुम्हारे लिए मुझे सर्वस्व भी देना पड़े तो मैं परम सन्तोप का अनुभव करूंगा। इस दुनिया में मेरी तरह शायद ही कोई सुखी हो।"

और रेखा उसके होंठों पर अपनी अंगुली रखकर वोलती, "तुम्हें पाने से वढ़कर भी इस दुनिया में और कुछ हो सकता है, मैं इसकी कल्पना भी नहीं कर सकती। पता नहीं कितने जन्मों की प्यास वुझी है इस मिलन से।"

दोनों प्यार के आदर्शों के आकाश पर ऊंची उड़ानें भर रहे थे। उन्हें यह जानने का समय ही न था कि आदर्श के आकाश से यथार्थ की धरती वहुत नीचे होती है।

उधर विवाह के दो वर्ष पूरे हुए और इधर रेखा की गोद एक नन्हीं वेटी से लहलहा उठी। यद्यपि मनौतियां लड़के के लिए मनाई गई थीं तो भी लड़की का भरपूर स्वागत हुआ। अपने प्यार का साकार रूप पाकर दोनों

की प्रसन्नता का पारावार न रहा। इसके साथ ही परिवार की आवश्यकताएं भी बढ़ने लगीं। राजीव ने अपने साधनों के अनुसार उन सब आवश्यकताओं को पूरा किया।

पड़ौस में एक पुरी दम्पति रहता था। उनके घर भी कुछ दिन पूर्व एक लड़का पैदा हुआ था। उनकी अपनी कोठी व कार तो थी ही, पर नवागत बच्चे की देखभाल करने के लिए एक आया थी व घर का बाकी काम करने के लिए एक अलग नौकर था। बाहर का काम करने के लिए पुरी के आफिस से मिला हुआ अरदली था।

रेखा को सब काम स्वयं करना पड़ता था। स्वयं काम करने में उसे कुछ कठिनाई नहीं होती थी, क्योंकि उसके पिता का घर भी साधारण दर्जे का था। घर का सारा काम करने की उसे आदत थी। पिता के घर तो गाय व भैंसें भी थी। वह बचपन से ही प्रातः उठकर सब प्रकार का घर का काम करने की अभ्यस्त थी। पर यहां जब भी वह अपने मकान से बाहर निकलती और श्रीमती पुरी को अपने आंगन में धूप में कुर्सी पर आराम करते या अखबार पढ़ते देखती तो उसे अन्दर ही अन्दर कुछ चुभन-सी होती। श्रीमती पुरी की आया बच्चे को उठाए घूमती रहती। जब दिल करता श्रीमती पुरी कुछ देर के लिए बच्चे को गोद में लेती, उसे प्यार करती, पर जब वह टट्टी-पेशाब करता या रोने लगता या श्रीमती को पुरी को 'विविध भारती' से गाने सुनने होते तो वह तुरन्त बच्चे को आया के पास देकर चली जाती। जब श्री पुरी आफिस से आते तो नौकर बाहर मेज रखता। चाय का सारा सामान सजाता। वे दोनो चाय पीते और फिर कार में बैठकर सिनेमा या कहीं और घूमने चले जाते।

इधर रेखा अब जकड़ी-सी गई। बेटी ने घर का काम दुगना कर दिया। प्यार का उफान कुछ उतरने लगा। अब बाजार घूमना व सिनेमा जाना तो बिलकुल बन्द हो गया। न नन्हीं मुन्नी को किसीके पास छोड़ सकते थे, न ही साथ लेकर जा सकते थे। वह प्रसूति की दुर्बलता से उभर भी न पाई थी कि घर का सारा काम उसे ही करना पड़ता था। अब वह राजीव से कभी-कभी मीठी शिकायत भी करने लगी।

भला राजीव अपनी रेखा की शिकायत अनसुनी कैसे कर सकता था!

उसने एक आया का प्रवन्ध कर दिया। वाहर का काम राजीव के आफिस का चपरासी करने लगा। रेखा ने कुछ राहत का अनुभव किया। पर यह अनुभूति वहुत क्षणिक सिद्ध हुई।

रेखा पुरी के घर जो कुछ भी देखती उसे अपने घर भी चाहने लगती। वे अपने मुन्ने के लिए जो कुछ लाते, रेखा वही सब अपनी मुन्नो के लिए भी लाना चाहती। राजीव रेखा की वात को 'न' कहना सीखा नहीं था। वह उसे दिल की पूरी गहराई से प्यार करता था। रेखा की ज़वान से निकली हर वात को उसी दिन पूरा करने के लिए राजीव के मन व शरीर की सारी शक्तियां मचल उठती थीं।

परन्तु पुरी व राजीव में ज़मीन-आसमान का अन्तर था। पुरी एक लखपति वाप का वेटा था। सर्विस भी एक विदेशी फर्म में करता था। तीन हज़ार रुपया मासिक वेतन के अलावा एक या दो हज़ार प्रति मास वह घर से मंगवाता था। उसके घर रोज़ नये-नये मेहमान आते। श्रीमती पुरी प्रायः हर सप्ताह नई साड़ी खरीदती। दिल्ली के किसी भी कोने में लगने वाली नई पिक्चर को सबसे पहले देखने वे जाते थे। पुरी हर वर्ष नये मॉडल की नई कार लेता और पुरानी वेच देता था।

राजीव एक निर्धन परिवार से था। सर्विस भी साधारण थी। अपने सात-आठ सौ रुपये के वेतन में से गांव में अपने वृद्ध माता-पिता के लिए भी वह कुछ भेजता था। शेष में गृहस्थी का गुज़र चलाना पड़ता था।

ज्यों-ज्यों दिन वीतते गए, रेखा का पुरी के घर आना-जाना वढ़ता गया और रेखा में एक हीन भावना का ज़हर घुलता गया। वह अन्दर ही अन्दर अपने घर को अभाव के एक मनहूस साए तले देखने लगी। उसे अव यह अनुभूति कचोटने लगी कि उसका घर हर दृष्टि से अभावों से भरा है। उसके पास आधुनिक जीवन की सुविधाओं के नाम पर कुछ भी नहीं है। जीवन की न्यूनतम सुविधाओं से भी वह वंचित है। अभावों की इस तड़प में उसकी गृहस्थी के सव भाव उसकी आंखों से ओझल हो गए।

राजीव ने उसकी सभी इच्छाओं को पूरा करने की भरसक कोशिश की। वह रेखा के चेहरे पर ज़रा-सा मलाल देखकर परेशान हो उठता। पर रेखा जितना प्राप्त करती, उसकी भूख उतनी ही वढ़ जाती। परिणाम यह हुआ कि

कुछ ही समय के बाद राजीव एक भारी ऋण के नीचे दब गया। आय कम थी, परन्तु व्यय अधिक होने लगा था। श्रीमती पुरी के संसर्ग से रेखा का मिलना-जुलना उसी स्तर के परिवारों से बढ़ने लगा। अभावों की अनुभूति और तेज होने लगी। अब उसे अपने ही नहीं राजीव के कपड़े भी घटिया लगने लगे। घर के रहन-सहन से उसे स्वयं ही घृणा होने लगी।

राजीव चुपचाप चलता रहा। पर जब उधार अधिक बढ़ गए तो वह परेशान हुआ। एक दिन वह कुछ हिम्मत करके रेखा से बोला, "रेखा! मैं समझता हूं तुम्हारी आवश्यकताएं मैं पूरी नहीं कर पा रहा हूं। पर देखो हमारी अपनी आर्थिक सीमाएं हैं। क्या यह ठीक नहीं है कि हम अपनी आय के अनुसार अपना जीवन स्तर बनाएं? आने वाली पहली तारीख को केवल आठ सौ रुपये मिलने हैं, परन्तु इस समय ही दूध वाले का तथा किराने वाले का कुल मिलाकर एक हजार उधार हो गया है। बैठक के कमरे के लिए जो नई दरी ली थी व तुम्हारी दो साड़ियां ली थी, उनका भी पांच सौ अभी देना है। यह आखिर किस प्रकार निभेगा?"

"तो क्या आप यह समझते हैं कि मैं फिजूल-खर्ची करती हूं? ये जीवन की साधारण-सी जरूरतें भी पूरी न की जाएं? आज ही दुपहर को पुरी के घर गई थी। उनके कुछ मेहमान आए थे। उनके सामने इस फूहड़ वेश-भूषा में मैं तो शर्म से गड़ गई। मैं ही थी जो वर्षों पुराने फैशन की साड़ी पहने थी।"

"रेखा! फैशन की गति मेरी आय बढ़ने की गति से बहुत तेज है। उस दौड़ में तो तुम्हें शामिल ही नहीं होना चाहिए।"

"पर समाज में तो मुझे रहना है।"

"तुम्हारी साड़ी उधार खरीदता हूं, पर उसके दाम चुका नहीं पाता और तब तक फैशन बदल जाता है। फैशन तो प्रति-क्षण बदल रहा है।"

"मैं कुछ भी नहीं करती। बिलकुल सादा रहती हूं। तब भी आप मुझे सुनाते हैं। आखिर समाज में कोई स्तर तो रखना है?" रेखा अब अपनी आंखें पोंछने लगी थी।

"रेखा! मनुष्य का स्तर केवल नये फैशन के नये कपड़ों से ही नहीं बनता। मनुष्य अपने मन की पवित्रता व महानता से ऊंचे स्तर तक पहुंचता है। और फिर कपड़ों, कोठियों व कारों की दौड़ में हम कितना आगे जा सकते

हैं ? आज हमारे सामने यह पुरी परिवार है। यदि इनकी तरह का हमारा स्तर हो जाए तो इनसे बड़े धनवान को देखकर हमारा वही हाल होगा जो आज इन्हें देखकर होता है। सन्तोप किसी भी वस्तु में नहीं है। सन्तोप वस्तुगत नहीं अपितु भावगत है। हम जितना प्राप्त करते हैं, उतनी ही और इच्छा करने लग जाते हैं। इच्छाएं कभी भी समाप्त नहीं होतीं, मनुष्य समाप्त हो जाता है।"

"आप मेरी कोई भी इच्छा पूरी न करें, पर यह भापण भी न पिलाएं।" रेखा ने राजीव की गम्भीर बातों को यों ही उड़ा दिया।

"रेखा ! तुम्हारी इच्छा मेरे लिए एक मिशन है। यही सोच सब कुछ पूरा किए जा रहा हूं। पर तुम इतना तो सोचो कि ये प्रतिदिन बढ़ते उधार हमें कहां ले जाएंगे। मैं तुम्हारे लिए कुछ भी कर सकता हूं, पर इस आर्थिक परेशानी का कुछ तो हल हो।"

रेखा सारी स्थिति को मन की भावनाओं से तोलती थी, बुद्धि से नहीं। नारी थी वह। नारी दिल से अधिक बोलती व सोचती है बुद्धि से कम। इसीलिए राजीव के तर्कों का उसपर कोई भी प्रभाव नहीं हुआ। अब तक सुन्नो उसकी गोद में आ गई थी। उसे प्यार करती हुई रेखा बोली, "इस बेचारी की भी क्या किस्मत है ! पुरी के लड़के के खिलौने देखो। प्रतिदिन आने वाले बढ़िया कपड़े देखो···उनका घर सजावट फर्निचर···सब कुछ···और यहां तो···यह तो घर लगता ही नहीं। किसीको अपने घर भी कैसे बुलाया जाए ! ये काठ की दसवीं सदी की पुरानी टूटी कुर्सियां।"

"रेखा ! तुम्हारा जीवन के प्रति दृष्टिकोण एकदम बदल कैसे गया ?"

"इसमें दृष्टिकोण की बात ही क्या है ! समाज में रहना है तो सबकी नज़रों में गिरकर तो रहा नहीं जा सकता।"

"क्या वह तुम ही नहीं थी, जो कहती थी कि मुझे प्राप्त करके तुम्हें विश्व का सारा ऐश्वर्य मिल गया है।"

"आपके बारे में कुछ नहीं कहा मैंने।"

"पर इन कुर्सियों के बारे···।"

"हां, यह सब कुछ तो मुझे खलता रहता है।"

"रेखा ! जिसे हमसे स्नेह है, वह यहां आकर इन कुर्सियों पर भी बैठ

लेगा। और जिसे केवल बढ़िया सोफे पर बैठने के लिए ही आना है, वह किसी बढ़िया रेस्टोरेंट या फर्नीचर की दुकान पर जा सकता है। रेखा, क्या जीवन का परम लक्ष्य यह बाहरी सजावट या दिखावा—ये सोफे, कुर्सियां, कपड़े ही हैं?"

"यह लम्बा व्याख्यान रहने दें। आप मुझसे काफी तंग आ चुके हैं। मुझे कुछ दिन मायके भेज दें।" रेखा ने आखिरी तीर चला दिया।

"हां वहां तो तुम्हारे लिए झूला लगा रखा है।" राजीव का संयम भी जवाब दे गया। रेखा गुस्से में उठकर चली गई।

यह संघर्ष दिन-प्रतिदिन बढ़ने लगा। विचारों का टकराव नोक-झोंक में और फिर कलह में बदल गया। मनमुटाव रहने लगा। प्यार की बातें बीते युग की भूली-बिसरी कहानियां बन गईं। रेखा को लगने लगा कि उसका जीवन ही व्यर्थ चला गया। वह सदा चिन्तित रहने लगी। उसका स्वास्थ्य भी बिगड़ने लगा। जो छोटा-सा घर पहले प्यार की बहार से खिला रहता था, अब वहां एक घुटन का धुआं सुलगने लगा। जीवन भार बनकर खलने लगा।

परन्तु इसका अधिक प्रभाव राजीव पर था। वह सदा उदास व चिन्तित रहने लगा। रेखा के प्रति उसका इतना अधिक प्यार था कि उसे दुःखी देख उसका दुःख चौगुना हो जाता। उसके मन को दो बातें कचोटती थीं। एक तो यह कि वह रेखा की मनचाही आवश्यकताएं पूरी नहीं कर पाता और दूसरे यह कि रेखा दिन-प्रतिदिन शारीरिक व मानसिक रूप से अस्वस्थ होती जा रही थी।

रेखा को प्रसन्न करने के लिए उसने एक प्रयत्न किया। उसने आफिस से एडवांस लिया। रेखा के कई दिनों के आग्रह पर उसके लिए नये फैशन के गहने बनवा दिए। पर इस सबने मानो तपे तवे पर पानी की बूंद-सा काम किया। राजीव अपनी हैसियत से बढ़कर व अपनी आय से भी अधिक रेखा के लिए हर संभव साधन जुटाता, पर वह सब आग में घी की आहुति की तरह उसकी इच्छाओं को और भी बढ़ा देता।

राजीव भोजन के बाद बाहर टहलने लगा था। रेखा भी पास आ गई। बोली, "आप कुछ ऊपर की आय का प्रबन्ध क्यों नहीं कर लेते? बाहर घूमने को दिल करता है। कार न सही, स्कूटर तो होना ही चाहिए।"

ाहता तो मैं भी हूं कि हमारे पास सब कुछ हो, परन्तु यह ऊ
ाला सिद्धांत मुझे कभी भी समझ नहीं आया। ईमानदारी व परिश्रम
ाये धन में जो आनन्द है, वह उस ऊपर की कमाई में नहीं।"

"आप न जाने किस लोक से उतर आए हैं। इस दुनिया में सब इसी
र ऐश किए जा रहे हैं। किसीका कुछ भी तो विगड़ता नहीं। आप थोड़ा
ओर सोचें तो हमारे पास भी सब कुछ हो सकता है।"

"रेखा! इस 'सब कुछ' की आज तक कोई भी ठीक परिभाषा नहीं की
सकी है। एक इच्छा पूरी हुई तो दूसरी जागती है और यह क्रम कभी भी
माप्त नहीं होता। पैदल व्यक्ति साइकल वाले को, साइकल वाला स्कूटर
वाले को, स्कूटर वाला कार वाले को देखकर सदा असन्तोष की आग में जलता
रहता है। कार वाला भी सन्तुष्ट नहीं, क्योंकि उसे दो कारों वाला, बढ़िया
कार वाला व हर वर्ष नये मॉडल की कार खरीदने वाला दिखाई देता है। यह
दूषित क्रम कभी भी समाप्त नहीं होता। सन्तोष वहां होता है, जहां मनुष्य
सन्तोष कर लेता है।" राजीव ने समझाने की कोशिश की।

"आपकी बातें सुनकर मुझे लगता है, जैसे आकाश का कोई देवता मुझे
उपदेश दे रहा है। मैं तो इसी धरती की हूं और इसी पर रहना भी चाहती
हूं। भला 'कुछ भी नहीं' से सन्तोष कैसे हो सकता है?" रेखा ने उवासी
लेते हुए कहा।

"एक साइकिल से भी सन्तोष हो सकता है और दस कारों वाला भी
असन्तोष में बिलख सकता है। एक झोंपड़ी में रहनेवाला भी सन्तोष व सुख
की नींद सो सकता है और एक महल में रहनेवाला भी असन्तुष्ट हो आत्म-
हत्या कर सकता है। यही कारण है कि आज विश्व के सबसे अधिक समृ
देशों में सबसे अधिक आत्महत्याएं होती हैं। कुछ सम्पन्न देशों के अति धनवा
परिवारों के युवक व युवतियां मानसिक शान्ति व सन्तोष के लिए भारत
तीर्थों में नंगे घूमते व गांजा-सुलफा पीते, दर-दर भटकते दिखाई दे रहे हैं
राजीव चलते-चलते रुक गया था। रेखा के कन्धे पर हाथ रखकर
गम्भीरता से उसने कहा।

"यह तो हुआ रजनीश भगवान जी का प्रवचन। पर मुझे तो एक गृ

चलानी है व संवारनी है। आप अपने लिए न सही, मेरे व मुन्नों के लिए ही कुछ करें।"

"कुछ क्यों ? मैं तुम्हारे लिए प्राण तक भी दे सकता हूं···पर···" आज कई दिनों के बाद राजीव की भुजाएं रेखा को समेटने के लिए मचल उठीं।

समय बीतता गया, पर पूरे परिवार के संसर्ग में रेखा की इच्छाएं सुरसा के मुंह की तरह बढ़ती गईं। राजीव का सारा विचार-दर्शन व्यर्थ रहा। तर्क से, प्यार से, मनोवैज्ञानिक तरीकों से उसने रेखा को अपनी गृहस्थी की अपनी सीमाओं में सन्तुष्ट रहकर जीवन जीने की प्रेरणा दी, पर वह हार गया।

अब कई बार रेखा के प्यार के पागलपन में वह यह भी सोचने लगा कि कहीं रेखा ठीक ही तो नहीं कहती ? उसे भी अपने से अधिक सुखी लोग दिखने लगे। अपने अभावों पर उसकी दृष्टि भी घूमने लगी। उसे रेखा के ये शब्द बार-बार याद आते, 'आज कौन मूर्ख है, जो केवल अपने वेतन पर ही बैठा है।'

राजीव के चिन्तन में भी धीरे-धीरे कुछ बदलाव आने लगा। समाज को देखने की उसकी नजरें रेखा की नज़रों के रंग में रंगने-सी लगीं। वह सोचता, कितने ही लोग बेईमानी से जीवन की पूरी मौज उड़ा रहे हैं। दुनिया कितनी आगे बढ़ रही है। उसका मन उसीसे प्रश्न कर उठता···"क्या दुनिया भर की ईमानदारी का सारा ठेका मैंने ले रखा है ? बड़े अफसर, नेता, सब रातों-रात अमीर हो रहे हैं। मैं व रेखा घुल-घुलकर जीवन को व्यर्थ आत्महत्या के मार्ग पर धकेले जा रहे हैं।"

आज मास की पहली तारीख थी। राजीव इस दिन बहुत अधिक व्यस्त रहता था। उसे कुछ कर्मचारी साथ लेकर बैंक जाना होता था। वहां से लगभग एक लाख रुपया निकलवाकर सारे आफिस के कर्मचारियों को वेतन बांटना होता था। सदा की भांति वह उस दिन भी बैंक गया व धन निकलवाया। उन नये चमकीले चमकते नोटों की गड्डियां देख उसके मन में एक अजीब-सी सिहरन अनुभव हुई। उसे लगा, जैसे उसके मन में कुछ स्फुरण-सा हो रहा है। जब धन लेकर गाड़ी में बैठा तो अपने हाथ पर माथा टेक वह सोच में डूब-सा गया।

"क्यों राजीव जी ! बड़े परेशान नज़र आ रहे हैं।" एक साथी ने पूछ लिया।

"नहीं। कुछ भी तो नहीं।"

"कुछ तो है। अधिक खोये से नजर आ रहे हैं।"

"वैसे ही सिर कुछ भारी-सा है।" राजीव ने टाल दिया। फिर राजीव ने ठीक होने का प्रयत्न किया, पर उसे लगा जैसे उसे कुछ हो रहा है। उसके अन्तर् में कुछ घुल रहा है। आफिस आकर उसने वेतन बांटा, पर सायंकाल घर पहुंचते तक वह सोचता ही रहा।

"रेखा! इधर आओ।" अन्दर के कमरे में कपड़े बदलते हुए राजीव ने पुकारा।

"देखो। मैं कपड़े नहीं बदलूंगा यदि तुम मेरे पास नहीं आई।" रेखा से कोई उत्तर न मिलने पर राजीव फिर बोला।

"कपड़े नहीं बदलेंगे! पर आज तो स्वयं भी बदले-बदले से लग रहे हैं। कितने दिनों के बाद इतने प्यार से बुलाया है! लो आ गई!" रेखा सामने आकर चहक उठी।

"रेखा, हमारा प्यार कितनी जल्दी मुरझाए जा रहा है! यदि यही गति रही तो हम दोनों सारा प्यार ही नहीं, स्वास्थ्य भी लुटाकर शीघ्र ही हस्पताल पहुंच जाएंगे।"

"यही तो मैं कितने दिनों से सोच रही हूं। पर इसका इलाज निकालिए।"

"मेरा व तुम्हारे आदर्शों का मतभेद रहा है। पर अब सवाल यह नहीं कि कौन-सा आदर्श ठीक है, पर यह है कि इस प्रति-क्षण की घुटन से बाहर कैसे निकला जा सकता है! रेखा, मैं इस निश्चय पर पहुंचा हूं कि तुम धन ऐश्वर्य के बिना खुश नहीं रह सकती और तुम्हें खुश किए बिना मैं जीवित नहीं रह सकता।"

रेखा आज हैरान थी। उसे लगा कि भूला-बिसरा प्यार आज फिर से ताजा हो गया है। वह थोड़ा सरककर राजीव के पास आ गई। उसके साथ सटकर बैठ गई। उसके हाथ को अपने हाथ में लेकर सहलाती हुई बोली, "आज तुम कितने अच्छे लग रहे हो! कितने दिनों के बाद तुमने प्यार से मुझे पास बैठाया है और मेरे मन की बात कह रहे हो।"

"मेरे वेतन में से तो मुश्किल से दो समय की रोटी ही पूरी हो सकती है।

यदि तुम्हारे आदर्शों के अनुसार जीवन चलाना है तो मुझे आज एक तरकीब सूझी है।"

"सच ! क्या ऐसा हो सकता है ?" रेखा उछल पड़ी।

"हाँ सकता ही नहीं, राजीव तुम्हारे लिए करके भी दिखाएगा।" रेखा के कन्धे पर हाथ रखकर उसे कसते हुए वह बोला।

"बताओ जल्दी बताओ !" रेखा को अब प्रतीक्षा करना कठिन हो रहा था।

"हर मास की पहली तारीख को मैं लगभग एक लाख रुपया बैंक से निकलवाकर अपने आफिस लाता हूं। किसी योजना से वह धन उड़ाया जाए, फिर नौकरी छूट जाए या छोड़ दी जाए और उस धन से अपना उद्योग चलाया जाए।" राजीव का हाथ कुछ ढीला पड़ गया। वह सामने शून्य में देखने लग पड़ा।

"फिर ? चुप क्यों हो गए ?"

"फिर कार, कोठी, ऐश्वर्य···"

"सच···बहुत बढ़िया···खूब मजा आएगा···जीवन जीने का।" रेखा खुशी से उछल पड़ी। उसने अपना सिर राजीव की गोद में रख दिया। उसकी आंखों में एक सपना तैरने लग पड़ा। उसने देखा उसकी गरीबी व अभाव के दिन फुर्र से उड़े जा रहे हैं।

"पर कितनी भी सावधानी रखी जाए, यह भी संभावना है कि पकड़ा जाऊं और जेल भेज दिया जाऊं।"

"नहीं···नहीं···तुम्हें जेल भिजवाकर मुझे कुछ नहीं चाहिए।" रेखा मानो आसमान से जमीन पर आ गिरी।

"देखो रेखा, वैसे तो योजना ऐसी बनाऊंगा कि साफ बचकर निकल आऊं, पर यदि पकड़ा भी गया तो क्या है, दो-तीन वर्ष की कैद ही तो होगी! धन तुम तक पहुंच जाएगा। अपने सारे जीवन को सुखी बनाने के लिए यदि दो-तीन वर्ष की कैद भी भुगत ली जाए तो कोई बड़ी बात नहीं है। इसके सिवाय और कोई चारा भी तो नहीं।"

"क्या योजना ऐसे तरीके से नहीं बन सकती कि तुम पर किसीको सन्देह तक न हो सके ?"

"बिलकुल वैसे ही सारा काम करूंगा। अब इस मार्ग पर कदम रखने का निश्चय कर लिया है तो सब प्रकार से पूर्ण योजना बनाऊंगा।" राजीव ने चेहरे पर आत्मविश्वास की दमक लाने की कोशिश करते हुए कहा।

रेखा को योजना जंच गई। थोड़ी विपत्ति व कष्ट सहने को भी वह तैयार हो गई। पिछले कुछ वर्षों से ऐश्वर्यमय जीवन की उसकी लालसा तीव्र होते-होते एक ऐसे पागलपन में बदल गई थी कि उसे इस योजना में कुछ भी बुरा न लगा व कोई संकट न दिखाई दिया।

राजीव अब इसी योजना में लग गया। उसके आफिस का एक और कर्मचारी उसका साथी बन गया। रेखा को दूर की एक बस्ती में एक नया मकान ले दिया गया। उस नये मकान का पता राजीव व उसके साथी सुनील सेन के अतिरिक्त किसी और को न बताया गया।

सुनील सेन बंगाल का रहनेवाला था। कई वर्षों से दिल्ली में था। यहीं रहता था। वह अपने घर कभी नहीं जाता था और न ही उसके घर का किसीको कुछ पता ही था। आफिस में उसने अपना दिल्ली का पता ही बताया हुआ था। राजीव व सुनील में काफी गाढ़ी मित्रता थी। जब राजीव ने उसे विश्वास में लेकर सारी योजना बताई तो सुनील ने उसे बड़े उत्साह के साथ स्वीकार किया। इस अप्रत्याशित उत्साह से राजीव को प्रसन्नता भी हुई और हैरानी भी। उसने सोचा था कि सुनील को इस काम के लिए तैयार करने में उसे प्रयत्न करना पड़ेगा। पर उसे लगा जैसे सुनील पहले से ही इसके लिए तैयार बैठा था।

"सुनील, मुझे डर था शायद तुम इस योजना में मेरा साथ देने के लिए तैयार न होगे।" राजीव ने उसे सब कुछ बताकर कहा।

"राजीव! तुमने यह योजना बनाकर मेरे अतीत की कुछ परतों को उघाड़ दिया है। तुम्हारी इस योजना से मेरे जीवन की कहानी की एक अधूरी कड़ी पूरी होने को लालायित हो उठी है।"

"वाह सुनील! यह भी खूब रही। कैसी कड़ी?"

"आज तक दिल का एक बहुत बड़ा राज दिल में ही रखा था। आज तुम्हें बताऊंगा। क्योंकि आज से हम दोनों हमराज़ हो गए हैं। राजीव, कलकत्ता नगर से कोई सौ मील दूर एक गांव में मेरा घर है। यहां पर

असली घर का पता किसीको भी मालूम नहीं। मैंने बताया · नहीं, क्योंकि मैं अपने घर से भागकर दिल्ली आया था।

मेरे गाव के साथ के एक गाव की एक लड़की से मेरा प्यार हो गया था। हम दोनों विवाह करना चाहते थे। मेरे माता-पिता तो मान गए, पर लड़की वाले राजी न हुए। कई मास संघर्ष चलता रहा। हमारा प्यार दिन-प्रतिदिन बढ़ता गया और बढ़ते-बढ़ते दीवानापन हो गया। हम लुक-छिपकर मिलने लगे। लड़की का पिता गांव का प्रभावशाली मुखिया था और क्रूर स्वभाव का था। यदि हम दोनों को उसका डर न होता तो हम कैसे भी विवाह कर लेते।"

दोनों टहलते-टहलते अब कनाट प्लेस के बीच के फव्वारे के पास आ गए थे। कुछ देर फव्वारे की ऊंची उठती धारों को देख वे एक तरफ हरी घास पर बैठ गए।

"शुरु करो सुनील···यह कहीं नहीं पूरी कहानी है।"

"एक शाम गांव के एक पुराने टूटे मकान के खण्डहर की दीवार के साथ मैं अपनी प्रेमिका से बातें कर रहा था। हम दोनों प्यार की कसमें खा रहे थे। वह रो रही थी। मैं उसके आसू पोंछ रहा था। मैंने उसे कहीं दूर भाग चलने को कहा तो वह अपने पिता की क्रूरता की याद करके सहम गई। उसने कहा कि यदि वह मेरे साथ भाग भी गई तो उसका पिता उसका पता लगवाकर दोनों की हत्या करवा देगा। ये प्यार की मनुहारें हो ही रही थी कि पास की झाड़ी से किसीके आने की आवाज आई। हाथ में एक मोटा डंडा घुमाता हुआ उसका पिता आ धमका। मैं उसे देख भी न पाया था कि एक भरपूर डंडे की चोट मेरे सिर पर आ पड़ी। वह क्रोध से लाल हुआ गालियां दिए जा रहा था। मेरे सामने और कोई चारा न था। अपने पांव सिर पर रख प्यार की बगिया की उस कालिका को वहीं छोड़ मैं भाग गया।

मारे गाव में शोर मच गया होगा और लड़की का वह क्रूर पिता मेरे प्राणों का प्यासा बन मुझे तलाश करेगा···यह सोचकर मैं घर भी नहीं गया। सारी रात भागता रहा। फिर किसी प्रकार कलकत्ता पहुंच गया।

वहां कुछ दिन एक चाय की दुकान पर नौकर हो गया। एक मित्र से पता करवाया तो उसने बताया कि उस लड़की के पिता ने मुझे खूब तलाश किया है और वह कहता है कि मेरे प्राण लेकर ही उसे चैन आएगा। मैं दिल्ली चला आया। घरवार, परिवार, प्रेमिका सब कुछ छुड़वाकर भाग्य का चक्र मुझे यहां ले आया।" सुनील की आंखें सजल हो गई थीं और उसकी गीली आंखों के चमकते किनारों में उसके अतीत के वे सारे चित्र तैर रहे थे। उसका हृदय आज छलक रहा था। वर्षों का रुका बांध आज टूट रहा था। जो राज कब का दिल में छिपाकर रखा था, उसे वह आज कह देना चाहता था।

"यार ! तुम भी छिपे रुस्तम निकले। प्यार की बलिवेदी पर सब कुछ चढ़ाकर भी प्यार से हाथ धोने पड़े तुम्हें। और इतना बड़ा राज अपने ही दिल में लिए तुम जीवन चलाए जा रहे हो।" सुनील के कन्धे पर प्यार से हाथ रखकर राजीव बोला।

एक गहरी सांस लेकर सुनील ने अपनी बात आगे बढ़ाई, "इस घटना को पूरे सात वर्ष हो गए। पिछले वर्ष एक मित्र के द्वारा मैंने अपने घर व प्रेमिका का कुशल समाचार पता किया था। पता लगा कि उसे उसके पिता ने महीनों यातनाएं दीं। उसका विवाह करना चाहा। पर वह मेरा ही नाम लेती थी। उसे खूब मारा-पिटा गया, भूखा रखा गया व कई प्रकार से प्रताड़ित भी किया गया। गांव के कुछ समझदार लोग व मेरे पिता मेरी तलाश भी करते रहे। उनकी इच्छा थी कि उस लड़की का मेरे साथ विवाह करने का यत्न किया जाए। कलकत्ता तक मेरी खोज की गई। जब मेरा कुछ भी पता न चला तो वह लड़की भी हार मान गई। दो वर्ष के बाद उसका विवाह कर दिया गया।

"परन्तु भाग्य का चक्र देखो कि दूसरे ही वर्ष वह विधवा हो गई। ससुराल में रह न सकी, इसलिए पिता के घर आ गई। पिछले वर्ष उसके पिता की मृत्यु हो गई। मेरा मित्र उसके पास गया था। वह अब भी मेरी याद करती है। उसे अब भी मेरे वापिस आने की आशा है। राजीव, मैं उस योजना में तुम्हारा साथ दूंगा। यहां से धन लेकर घर जाऊंगा और सात वर्ष से बिछुड़ी अपनी प्रेयसी के साथ विवाह करूंगा।" सुनील की आंखें अब एक नये व उज्ज्वल

भविष्य की कान्ति से दमक उठी थी।

आफिस के कर्मचारियों को अगले मास के वेतन के साथ बढ़े महंगाई भत्ते का बकाया मिलने वाला था। कुल डेढ़ लाख रुपया निकलवाया जाना था। राजीव वह सुनील ने पूरा एक मास उस योजना के लिए लगाया। वे कई बार बैंक गए। सारा मार्ग देखा। राजीव ने रेखा से सुनील का परिचय करवाकर सब बता दिया। अगले मास की पहली तारीख की बेताबी से प्रतीक्षा की जाने लगी।

उस दिन ठीक समय पर योजना शुरू कर दी गई। बैंक से धन लेने के बाद राजीव अपने दूसरे साथी के साथ बात करने खड़ा हो गया। कैश का थैला सुनील को थमा दिया। सुनील कुछ देर पास खड़ा रहा, फिर यह कह-कर चला गया कि वह संरक्षक के साथ बाहर गाड़ी पर चलता है। राजीव ने सिर हिलाकर उसे जाने की अनुमति दे दी। सुनील कुछ आगे गया, फिर बाईं तरफ के दरवाज़े की ओर मुड़कर बैंक के भीतर से किसी दूसरे रास्ते से बाहर निकल गया।

राजीव कुछ देर वहीं खड़ा बातें करता रहा। फिर एकदम कुछ याद करके बैंक के भीतर चला गया। अपने आफिस के हिसाब के सम्बन्ध में कुछ बातें करता रहा। उसके साथ के आफिस के अन्य लोगों में से कुछ उसके साथ थे व कुछ बाहर गाड़ी के पास थे। राजीव जान-बूझकर समय बिता रहा था। कुछ ही समय बाद उसने घड़ी देखी और बाहर निकला। ड्राइवर व अन्य लोग खड़े थे।

"अरे! सुनील नहीं आया?" उसने चेहरे पर पूरी हैरानी की दिखावट बनाकर कहा।

"नहीं सर!" ड्राइवर बोला।

"प्रमोद! देखो तो वह बैंक में ही तो नहीं है?"

"वह तो कब का बाहर आ गया था।" कहकर प्रमोद भीतर चला गया। वापिस आकर उसने बताया कि अन्दर नहीं है।

"वह किसी और गाड़ी में ही तो नहीं चला गया?" राजीव ने कुछ खिसयाने होकर पूछा।

"इस प्रकार जाने का कोई मतलब ही नहीं हो सकता।"

"हो तो नहीं सकता, पर अब क्या किया जाए ! चलो आफिस चलते हैं। फिर अगली बात सोचेंगे। वह ऐसे जा भी कहां सकता है ! इतना कैश…!" राजीव गाड़ी की तरफ लपका। ड्राइवर ने चाबी घुमाई। "घूं…घूं…"की आवाज के साथ ही सभी के दिमाग आशंकाओं के धुंए से धुंधले हो गए।

आफिस पहुंचे। इधर-उधर पूछा। फिर बड़े अधिकारियों को कहा गया। और उसके बाद पुलिस में रपट दर्ज करवाई गई।

पुलिस के पास जब रपट दर्ज की जा रही थी तब तक सुनील कलकत्ता जाने वाली गाड़ी के एक डब्बे के कोने में चुपचाप बैठा था। वह इसी बीच एक लाख रुपया राजीव के नये मकान में रेखा को दे आया था। शेष पचास हजार उसके पास था। अपना मकान तो उसने कुछ दिन पूर्व ही छोड़ दिया था। सामान पहले से ही स्टेशन के सामान घर में रखा था।

दो दिन तक पुलिस सुनील की खोज करती रही और राजीव से पूछताछ करती रही। ड्राइवर तथा अन्य कर्मचारियों ने सारी घटना का सच्चा ब्योरा अपने बयानों में दे दिया। उससे राजीव पर सन्देह हुआ। तीसरे दिन उसे गिरफ्तार कर लिया गया।

इस बीच योजना के अनुसार रेखा ने नया मकान ले लिया था। कुछ सामान व एक लाख रुपया नये मकान में रख दिया। रात वहीं रहती, पर दिन में वह पुराने मकान में चली आती। जब पुलिस राजीव के मकान की तलाशी लेने आई तो रेखा ने सब सामान खोलकर दिखा दिया। वहां पर कुछ भी न मिल सका। कुछ दिन के बाद रेखा सारा सामान व धन लेकर अम्बाला चली आई। वहां पहले से ही एक मकान लेकर रखा हुआ था।

राजीव पर मुकदमा चला। अपराधपूर्ण लापरवाही तो सिद्ध हो ही गई। परिस्थितियों व सबकी गवाहियों के आधार पर राजीव को तीन अपराधों का दोषी ठहराया गया। उसे सात वर्ष के कठोर कारावास का दण्ड दिया गया। कुछ दिन उसे दिल्ली की तिहाड़ जेल में रखा गया, परन्तु उसने अपने राज्य में भेजे जाने की प्रार्थना की। उसका घर सोलन के पास के एक गांव में था। कुछ ही दिन बाद उसे नाहन जेल भेज दिया गया। पिछले कुछ महीनों से वह नाहन की इस जेल में था।

३

प्रातःकाल का घण्टा बज चुका था। सभी कैदी अपने-अपने काम पर जाने की तैयारी कर रहे थे। बैरक में सीमेंट के लम्बे-ऊँचे चबूतरे बने थे। इन्हीं पर कैदियों को सोना होता था। चारपाई के बराबर लम्बे, पर चौड़ाई में कम थे। सब कैदी अपने-अपने बिस्तर पर बैठे चाय पी रहे थे। कुछ ही दिनों से जेल में प्रातः की चाय भी मिलने लग पड़ी थी।

"बाबूजी! उठिए चाय पीजिए।" सूरज राजीव के सिरहाने से चाय लेकर उसके पास आया। राजीव उठ बैठा और आँखें मलने लगा।

पास के बिस्तर पर से मोहन ने रात की बात की चर्चा चलाते हुए कहा, "राजीव! तुम रात बड़े परेशान रहे। यह ठीक है, तुम्हारी जेल में यह पहली दीवाली थी। हर पहला त्योहार इसी प्रकार बीतता है। मुझे यहाँ आए दस वर्ष हो गए हैं। पहली दीवाली में भी रात-भर करवटें ही बदलता रहा था। पर धीरे-धीरे अभ्यस्त हो गया। इन्हीं दीवारों में दिल लग गया। इसी मिट्टी में मन मिल गया। अब याद आती तो है, पर उतना सताती नहीं है। स्मृति की तीव्रता व तीखापन, समय कुन्द कर देता है। तुम रात भर सपने ही लेते रहे।"

"बाबूजी एक बार तो बड़ी जोर से चिल्ला पड़े…देखा…देखा…बाबूजी आपने क्या देखा था?" भोली सूरत वाला सूरज बोल उठा। सब राजीव की ओर ध्यान से देखने लगे। वे यह जानने के लिए लालायित थे कि राजीव ने सपने में क्या देखा था!

"कुछ नहीं। बस सपने में मैंने अपनी पत्नी को पुकारा था…देखा…देखा…पर सूरत ने देख लिया देखा…देखा…।" राजीव के यह कहने पर सब ओर से खिलखिला पड़े। राजीव ने भी सबकी हँसी में शामिल होने की कोशिश की।

बैरक के कोने में से बसर की मोटी भारी आवाज गूँजी, "मैं भी रात भर के सपने ही लेता रहा। मैंने देखा कि मैं घर पर अपने बिस्तर पर सोता हूँ। साथ की चारपाई पर मेरी पत्नी सोई है। मैं ज्यों ही अपनी करवट पत्नी की तरफ बदलता हूँ कि मेरी नींद खुल जाती है।"

"तुम्हारी नींद खुल गई थी या तुम्हारी पत्नी ही दूर हट गई थी ?" मोहन ने चुटकी ली।

"आप घर खाली हाथ गए होंगे। इसीलिए आपकी पत्नी आपसे नाराज होगी।" सूरत भी विनोद में शामिल हो गया।

"खाली हाथ क्यों ? हाथ तो खूब भरे हुए थे।"

"क्या लेकर गए थे घर ?

"दोनों हाथों में दो भारी-भारी हथकड़ियां जो थीं।" अमर की इस बात से जेल की वह क्रूर बैरक भी खिलखिला पड़ी।

तभी एक वार्डर ने आकर बैरक का दरवाजा पूरा खोल दिया। बड़े गेट पर से एक आवाज गूंजी, "चलो पंजा नम्बर एक···नम्बर दो···।" कुछ कैदी उठकर नीचे गेट की ओर चले गए। कुछ फैक्टरी जाने की तैयारी करने लगे। पांच-पांच कैदियों की एक टुकड़ी जेल के बाग में व खेतों में काम करने के लिए ले जाई जाती थी, इसे ही पंजा कहा जाता था। हर एक पंजे के साथ एक वार्डर रहता था। उन्हें जेल के बड़े गेट से बाहर के खेतों में काम करना होता था।

"टन···!" घण्टे की एक आवाज गूंजी। यह फैक्टरी का काम शुरू होने की सूचना थी। बाकी कैदी अपनी बैरकों से निकले और फैक्टरी के बाहर के मैदान में इकट्ठे हो गए। लाइनें लग गई और गिनती शुरू हो गई। जेल में गिनती एक बहुत महत्त्वपूर्ण काम है। बैरक से निकलते समय, फैक्टरी में प्रवेश करते समय, फैक्टरी से निकलते समय···हर बार कैदी उसी तरह पूरे गिने जाते हैं, जैसे एक गड़ेरिया अपनी भेड़ें गिनता रहता है।

राजीव को जेल के आफिस में ही काम करना होता था। आज वह रोज की तरह काम तो करता रहा, पर रह-रहकर उसे घर की याद सताती रही। रात के सपने याद आते और उसकी यादों की परतों को एक-एक कर उधेड़ते। उसके घाव हरे हो जाते। उसे समझ नहीं आ रहा था कि रेखा उसे मिलने क्यों नहीं आई ! पिछले लगभग एक वर्ष से वह प्रतिमास उसे मिलने आती थी। कभी-कभी मास में दो बार भी आ जाती थी। जिस दिन आने को वह कह जाती, उस दिन को राजीव बेसब्री से प्रतीक्षा करता और ठीक उस दिन रेखा अवश्य आती। पहली बार उसका वायदा अधूरा रहा था।

अभी दुपहर की खाने की छुट्टी का घण्टा बजा न था कि बड़े गेट के अन्दर से किसी के रोने व चिल्लाने की आवाज आई। राजीव का ध्यान काम में तो था ही नहीं, वह उधर चला आया। देखा तो कुछ वार्डर अमर को बुरी तरह से पीट रहे थे। वह उछल-उछलकर चिल्लाता, रोता व कराहता। इस प्रकार जेल के कैदियों की पिटाई जेल की दिनचर्या का आवश्यक भाग था। ज़रा-ज़रा-सी बात पर इतनी निर्दयता से मार पिटाई की जाती थी कि स्वयं निर्दयता भी शर्म से मुंह छिपा लेती थी। यद्यपि यह जेल सरकार द्वारा आदर्श कारागार के नाम से घोषित की गई थी, परन्तु वह 'आदर्श' बड़े गेट के बाहर लगे जेल के नामपट पर लिखे 'आदर्श' शब्द के अतिरिक्त और कहीं भी न था। उस नामपट के आगे दीवारों के अन्दर का वातावरण सदियों पुरानी जेलों से कुछ विशेष भिन्न न था।

अपनी बैरक के साथी कैदी की इस प्रकार बेरहमी से होती पिटाई को देख राजीव सहम गया। पर करता क्या! वह भी तो एक कैदी ही था। अमर अब सिसक रहा था और वार्डर उसे पीटते चले जा रहे थे। पूछने पर पता चला कि आज प्रातः अमर पंजे में काम करने के लिए बाहर गया था। जेल अधीक्षक के घर के साथ के बाग में वह काम कर रहा था। वहीं पर दाव लगाकर वह घर के एक कमरे में चुपके से घुसा और अधीक्षक की पैंट में रखे बटुए में से दो रुपये निकाल लिए। तभी वार्डर ने उसे देख लिया। उसने हैडवार्डर के पास शिकायत की। और उसीकी आज्ञा से अब यह दण्ड दिया जा रहा था।

अमर को बारी-बारी तीन वार्डरों ने पीटा। एक थक जाता था तो दूसरा पीटना शुरू करता था। बाज़ुओं की पूरी शक्ति अमर के शरीर पर आजमाई गई। उसके चेहरे पर थप्पड़ों की मार से खून उतर आया था। शरीर का मांस घूंसों की मार से कहीं फट गया था, कहीं उभर आया था। कई जगह खरोंचें आ गई व खून निकल पड़ा था।

राजीव को देखते ही अमर गिड़गिड़ा पड़ा, "मैंने चोरी नहीं की। वार्डर ने झूठ बोल दिया। मैं भगवान की कसम खाता हूं। अपने बच्चों की कसम खाता हूं। मुझे छुड़ा दो राजीव...!"

"चल...साला...बदमाश झूठ बोलता है।" एक वार्डर ने उसके कान

"तुम्हारी नींद खुल गई थी या तुम्हारी पत्नी ही दूर हट गई थी ?" मोहन ने चुटकी ली।

"आप घर खाली हाथ गए होंगे। इसीलिए आपकी पत्नी आपसे नाराज़ होगी।" सूरत भी विनोद में शामिल हो गया।

"खाली हाथ क्यों ? हाथ तो खूब भरे हुए थे।"

"क्या लेकर गए थे घर ?

"दोनों हाथों में दो भारी-भारी हथकड़ियां जो थीं।" अमर की इस बात से जेल की वह क्रूर बैरक भी खिलखिला पड़ी।

तभी एक वार्डर ने आकर बैरक का दरवाजा पूरा खोल दिया। बड़े गेट पर से एक आवाज़ गूंजी, " चलो पंजा नम्बर एक···नम्बर दो···।" कुछ कैदी उठकर नीचे गेट की ओर चले गए। कुछ फैक्टरी जाने की तैयारी करने लगे। पांच-पांच कैदियों की एक टुकड़ी जेल के बाग में व खेतों में काम करने के लिए ले जाई जाती थी, इसे ही पंजा कहा जाता था। हर एक पंजे के साथ एक वार्डर रहता था। उन्हें जेल के बड़े गेट से बाहर के खेतों में काम करना होता था।

"टन···!" घण्टे की एक आवाज गूंज़ी। यह फैक्टरी का काम शुरू होने की सूचना थी। बाकी कैदी अपनी बैरकों से निकले और फैक्टरी के बाहर के मैदान में इकट्ठे हो गए। लाइनें लग गई और गिनती शुरू हो गई। जेल में गिनती एक बहुत महत्त्वपूर्ण काम है। बैरक से निकलते समय, फैक्टरी में प्रवेश करते समय, फैक्टरी से निकलते समय···हर बार कैदी उसी तरह पूरे गिने जाते हैं, जैसे एक गड़ेरिया अपनी भेड़ें गिनता रहता है।

राजीव को जेल के आफिस में ही काम करना होता था। आज वह रोज की तरह काम तो करता रहा, पर रह-रहकर उसे घर की याद सताती रही। रात के सपने याद आते और उसकी यादों की परतों को एक-एक कर उधेड़ते। उसके घाव हरे हो जाते। उसे समझ नहीं आ रहा था कि रेखा उसे मिलने क्यों नहीं आई ! पिछले लगभग एक वर्ष से वह प्रतिमास उसे मिलने आती थी। कभी-कभी मास में दो बार भी आ जाती थी। जिस दिन आने को वह कह जाती, उस दिन की राजीव बेसब्री से प्रतीक्षा करता और ठीक उस दिन रेखा अवश्य आती। पहली बार उसका वायदा अधूरा रहा था।

अभी दुपहर की खाने की छुट्टी का घण्टा बजा न था कि बडे गेट के अन्दर से किसी के रोने व चिल्लाने की आवाज़ आई। राजीव का ध्यान काम में तो था ही नहीं, वह उधर चला आया। देखा तो कुछ वार्डर अमर को बुरी तरह से पीट रहे थे। वह उछल-उछलकर चिल्लाता, रोता व कराहता। इस प्रकार जेल के कैदियों की पिटाई जेल की दिनचर्या का आवश्यक भाग था। ज़रा-ज़रा-सी बात पर इतनी निर्दयता से मार पिटाई की जाती थी कि स्वयं निर्दयता भी शर्म से मुह छिपा लेती थी। यद्यपि यह जेल सरकार द्वारा आदर्श कारागार के नाम से घोषित की गई थी, परन्तु वह 'आदर्श' बड़े गेट के बाहर लगे जेल के नामपट पर लिखे 'आदर्श' शब्द के अतिरिक्त और कहीं भी न था। उस नामपट के आगे दीवारों के अन्दर का वातावरण सदियों पुरानी जेलों मे कुछ विशेष भिन्न न था।

अपनी बैरक के साथी कैदी की इस प्रकार बेरहमी से होती पिटाई को देख राजीव सहम गया। पर करता क्या ! वह भी तो एक कैदी ही था। अमर अब सिसक रहा था और वार्डर उसे पीटते चले जा रहे थे। पूछने पर पता चला कि आज प्रात. अमर पंजे में काम करने के लिए बाहर गया था। जेल अधीक्षक के घर के साथ के बाग में वह काम कर रहा था। वहीं पर दाव लगाकर वह घर के एक कमरे मे चुपके से घुसा और अधीक्षक की पैंट मे रखे बटुए में से दो रुपये निकाल लिए। तभी वार्डर ने उसे देख लिया। उसने हैडवार्डर के पास शिकायत की। और उसीकी आज्ञा से अब यह दण्ड दिया जा रहा था।

अमर को बारी-बारी तीन वार्डरों ने पीटा। एक थक जाता था तो दूसरा पीटना शुरू करता था। बाजुओं की पूरी शक्ति अमर के शरीर पर आजमाई गई। उसके चेहरे पर थप्पड़ों की मार से खून उतर आया था। शरीर का मास घूसों की मार से कहीं फट गया था, कही उभर आया था। कई जगह खरोचें आ गई व खून निकल पड़ा था।

राजीव को देखते ही अमर गिड़गिड़ा पड़ा, "मैंने चोरी नहीं की। वार्डर ने झूठ बोल दिया। मैं भगवान की कसम खाता हूं। अपने बच्चो की कसम खाता हूं। मुझे छुड़ा दो राजीव...!"

"चल...साला...बदमाश झूठ बोलता है।" एक वार्डर ने उसके कान

पकड़कर मुंह पर ज़ोर का थप्पड़ लगाकर कहा।

"आप सबकी कसम खाता हूं।" अमर फिर चिल्लाया।

"हरामज़ादा···भैण···मर जाएगा, लेकिन सच नहीं बोलेगा। चलो इसे धूप में खड़ा कर दो और अगली सज़ा पूरी करो।" हैडवार्डर ने आदेश दिया।

अमर को धूप में खड़ा कर दिया गया और कहा गया कि वह सामने सूर्य की ओर आंखें खोलकर देखे। जब वह देख न पाये और चुन्धयाहट में आंखें झपक दे तो पीछे से उसके चूतड़ों पर जोर का प्रहार किया जाए। यह क्रम काफी देर चलता रहा। फिर श्रीकंठी को बुलाया गया।

श्रीकंठी का असली नाम कुछ और था। वह तिब्बत का रहने वाला था और अपनी पत्नी की हत्या के अपराध में आजीवन कारावास का दण्ड भुगत रहा था। उसका परिवार १९५० में तिब्बत से भागकर भारत आया था। वह व उसकी पत्नी एक छोटी-सी चाय की दुकान चलाकर अपना गुज़र करने लगे। एक पड़ोसी के साथ उसकी पत्नी के अनुचित सम्बन्ध हो गए। उसने खूब समझाया व डराया भी, पर उसकी पत्नी उसकी ओर अधिक आसक्त होती गई। एक सायंकाल बादल गरज रहे थे, बूंदाबांदी भी हो रही थी। वह बाहर गया था। ज्यों ही लौटा उसने अपनी पत्नी व उस पड़ोसी को घर के अन्दर आपत्तिजनक स्थिति में देखा। कमरे के बाहर लकड़ी काटनेवाली कुल्हाड़ी पड़ी थी। उसने वही उठाई और क्रोध में पागल होकर दरवाज़ा खटखटाया।

एक झटका-सा हुआ। दरवाज़ा खुला और उसका पड़ोसी बिजली की चमक की तेजी से दिखाई दिया और भाग गया। उसकी कुल्हाड़ी अब एक-दो-तीन करके अपनी ही पत्नी पर पड़ी और वह प्रेमलीला करती-करती इहलीला से भी हाथ धो बैठी। उसकी लाश वहीं छोड़ वह सीधा पुलिस स्टेशन गया और सारी बात बता दी। उसने अपराध स्वीकार किया था। आजीवन कारावास हुआ।

जेल में वह लोहार था। उसने लकड़ी का आरा चलाने का काम भी सीखा। वह लकड़ी का हर प्रकार का काम कर लेता था। उसके जिम्मे कैदियों के पैरों में लोहे की बेड़ियां चढ़ाने का काम था। यदि कोई बी श्रेणी का या मीसा का बन्दी आ जाए तो उन्हें सोने के लिए जो चारपाई दी जाती थी, उस चारपाई को भी लोहे की एक मोटी ज़ंजीर से बांधा जाता था। यह काम श्रीकंठी के

जिम्मे था। चारपाइयों को भी जंजीरों से बांधने का नियम बड़ा हास्यास्पद था। पर जेल नियम के अनुसार यह इसलिए आवश्यक बताया जाता था ताकि कैदी चारपाई को दीवार के साथ टिकाकर भाग न जाए।

ज्यों ही श्रीकंठी वहां पहुंचा हैडवार्डर ने उसे आज्ञा दी, "अमर की टांगों में मोटी बेड़ियां डाल दी जाएं।" लोहे का एक बड़ा-सा टुकड़ा वहीं रखा गया। हथोड़े की चोटें पड़ने लगीं। और कुछ ही देर में श्रीकंठी के सिद्ध हाथों ने अमर की टांगों में बेड़ियां डाल दीं।

"नहीं, इस मां···को डंडा बेड़ी पहनाओ! बड़े साहब के घर में चोरी···!" हैडवार्डर की आवाज गूंजी और अमर के दिल पर एक आन्धी की तरह घूम गई।

बेड़ियां दो प्रकार की पहनाई जाती थीं। साधारण बेड़ी में लोहे का एक मोटा डंडा पैर से लोहे का एक कड़ा लगाकर बांध दिया जाता था। उसके ऊपर के सिरे को कैदी किसी रस्सी से बांधकर अपने पाजामे के नाड़ा बांधने की जगह से बांध लेते थे। इस बेड़ी में जैसे-तैसे चलना-फिरना हो सकता था। पर डंडा बेड़ी इससे भिन्न होती थी। दोनों पैरों में मोटे लोहे के कड़े पहना दिए जाते। फिर एक मोटा लोहे का डंडा दोनों पैरों के कड़ों के साथ फंसा दिया जाता था। उसकी लम्बाई डेढ़ फुट से कम नहीं होती। जब भी कैदी चलने लगता, उसे अपने पैर डेढ़ फुट चौड़ा रखना पड़ता था। इससे बहुत अधिक कष्ट होता। न ठीक सोया जाता न चला जाता। टट्टी पेशाब तक करना कठिन हो जाता था।

प्रायः सजा देने के लिये एक पैर में साधारण बेड़ी डाली जाती थी। पर अमर ने तो दो रुपये की चोरी की थी और वह भी बड़े साहब की जेब में। इसलिए उसके दोनों पैरों में बेड़ियां डालकर फिर डंडा बेड़ी भी लगा दी गई।

फिर उसे कहा गया कि उस मैदान के एक किनारे से सिर नीचा करके, मुर्गे की तरह उछलता हुआ दूसरे किनारे तक जाए। वह चलता, बेड़ियां छनछनातीं, उसकी टांगों व घुटनों को छीलतीं, खून निकलता। वह हारकर रुक जाता तो सबसे क्रूर हरगोविन्द वार्डर उसे पीछे से और से लात मार देता।

ग्यारह बजे का घंटा बज गया था। सब कैदी दुपहर का खाना खाने के लिए अपनी-अपनी बैरकों में जा रहे थे। सब उधर से ही निकलते जहां पर

आदर्श जेल के वार्डर दो रुपये की चोरी के अपराध में पिछले दो घण्टे से अमर को एक आदर्श दण्ड दे रहे थे। राजीव भी उधर खड़ा था। अमर की हालत देख उसका दिल दहल गया। अमर को अब उकड़ू बिठाकर एक कोने से दूसरे कोने तक उछलकर जाने को कहा जा रहा था।

जेल के कैदी उधर से जाते हुए कुछ देर के लिए वहां पर रुकते, उसे देखते, फिर आगे बढ़ जाते। उनके लिए यह कोई नई बात नहीं थी। प्रायः ऐसा दूसरे-तीसरे दिन होता ही रहता था। यहां पर यह सब जेल की व्यवस्था व अनुशासन पर्व के नाम पर ही होता था। पर आज राजीव इस प्रकार की नृशंस पिटाई देखकर छटपटा-सा उठा।

अमर की सारी शक्ति जवाब दे गई। वह रुककर बैठ गया। हरगोविन्द के घूंसे स्वचालित मशीनगन की गोलियों की तरह रुकते ही नहीं थे। राजीव एक ओर खड़ा देख रहा था। उसे देख कुछ और कैदी भी रुक गए। राजीव अमर की हालत देख स्वयं को भूल गया। एक क्षण के लिए उसके भीतर का कैदी लुप्त हो गया और उसके अन्तर् का इन्सान प्रकट हो गया। वह क्रोध के आवेश में आगे लपका और उसने झटककर हरगोविन्द को एक तरफ धकेल दिया। अमर को जमीन पर से उठाया और एकतरफ ले गया। क्रोध से आंखों में लाल अंगारे भरकर वह गरज उठा, "बस···बस···अब हद हो गई। यह जानवरों की तरह का व्यवहार अब मुझसे सहन नहीं हो सकता। तुम मुझे भी जो चाहो सज़ा दे सकते हो, पर मैं अब अमर पर किसीका हाथ उठने नहीं दूंगा।"

जो जहां था, वहीं ठहर गया। जेल में एक कैदी की यह हिम्मत कि हरगोविन्द जैसे प्रभावशाली व क्रूर वार्डर के उठते हाथ पकड़ ले। उससे तो जेल की हवा व चिड़ियां भी थर-थर कांपती थीं। सब कैदी आंखें मलने लगे। किसीको यह विश्वास न होता था कि एक कैदी ने इतनी हिम्मत कर दिखाई है। एक क्षण के लिए जेल के अन्दर की हवा भी ठिठक गई। राजीव के व्यक्तित्व का कुछ इस प्रकार का प्रभाव था कि उसे सभी वार्डर साधारण कैदी नहीं समझते थे। जेल अधीक्षक भी उसका कुछ आदर करते थे। इसीलिए जब राजीव खुलकर सामने आ गया और तनकर खड़ा हो गया तो किसी भी वार्डर को कुछ भी कहने की हिम्मत नहीं हुई। हरगोविन्द सबके सामने

अपनी झेंप मिटाने के लिए बोल पड़ा, "पर जानते हो, इसने साहब की कोठी में आज दो रुपये चुराये हैं।"

"पर क्या ऐसा कानून है कि एक संतरा चुराने पर किसीको फांसी दे दी जाए ? या साहब के दो रुपये सोने के थे कि उनकी चोरी के बदले में इस गरीब की हड्डियां भी तोड़ देनी है ! दो रुपये चुराने पर आखिर कितना दण्ड देने का विधान है ?" राजीव क्रोध में बोल उठा। अमर के पैर से कुछ खून बहकर धरती पर गिर गया था। उसकी ओर इशारा करके राजीव बोला, "यह देखो कितना खून बहा जा रहा है। जेल मैनुअल में व आदर्श कारागार के आदर्श नियमों में दो रुपये की चोरी के बदले में कितना खून निकालना जरूरी होता है ?"

राजीव को कुछ भी पता नहीं लग रहा था कि वह क्या कुछ बोल रहा था। उसके दिल का कई दिन से रुका दर्द आज मुखर हो उठा था। कैदी चारों ओर जमा हो गए थे। राजीव की प्रत्येक बात पर स्वीकृति व समर्थन में सबके सिर हिलते थे व राजीव के प्रति श्रद्धा से सबकी आंखें सजग थीं।

हरगोविन्द ने वहां से खिसकना ही ठीक समझा। वह बड़े गेट की ओर बढ़ा ही था कि राजीव उसके आगे आकर खड़ा हो गया। अपनी लाल आंखें उसकी आंखों में गड़ाकर बोला, "वार्डर साहब ! इसने दो रुपये चुराये हैं, ठीक है इसने अपराध किया है। पर मुझे वह चेहरा दिखाओ, जो चोरी नहीं करता, जो ईमानदार है ! इसी जेल में क्या कैदियों के राशन में, कपड़ों, लकड़ी व दवाइयों में जेल के अधिकारी चोरी नहीं करते ? क्या जेल की डेरी के दूध को कुछ लोग मुफ्त नहीं पीते ? इस समाज में आज कौन बड़ा अफसर व नेता है, जो दिन दहाड़े बेईमानी व चोरी नहीं करता ! फर्क इतना ही है, हम पकड़े गए और चोर कहलाए और बाकी पकड़े नहीं गए, इसलिए नेता व अफसर कहलाते हैं !"

अब तक इस घटना की सूचना जेल के आफिस में पहुंच गई थी। अधीक्षक का चपरासी आया और हरगोविन्द व राजीव को बुलाकर ले गया।

राजीव क्रोध में बहुत कुछ कह गया था। उसने जेल के आन्तरिक प्रशासन-सम्बन्धी आक्रोश को आज शब्द दे दिए थे, जो हर कैदी के दिल में सदा से सुलगता रहा था, पर उसे जबान पर लाने की हिम्मत किसीकी नहीं होती थी।

उसने जो कुछ भी कहा वह सब सच था। जेल के भरे आंगन में सब कैदियों के सामने जेल के सम्बन्ध इस प्रकार के खुले आरोपों से सब सहमे हुए थे।

अधीक्षक के पूछने पर हरगोविन्द ने सारी बात बता दी। फिर राजीव की शिकायत करते हुए बोला, "साहब, यदि इस प्रकार राजीव जैसे कैदी खुले-आम बोलने लगे और हस्तक्षेप करने लगेंगे तो जेल का प्रशासन कैसे चल सकता है? एक कैदी को कैदी की तरह रहना चाहिए। राजीव ने आज मेरे साथ बहुत बुरा व्यवहार किया है। सारे कैदियों के सामने मेरा अपमान किया है।"

राजीव अधीक्षक के कुछ कहने की प्रतीक्षा नहीं कर सका। बोला, "मैं खूब जानता हूं वार्डर साहब कि मैं एक कैदी हूं। पर कैदी से पहले मैं एक इन्सान भी हूं। और कोई भी इन्सान वह सब देख नहीं सकता, जो आप बाहर कर रहे थे।"

"आप जेल में अभी आए हैं, मुझे बीस साल हो गए। ये जेलें इसी प्रकार चलती हैं और चलती रहेंगी। इन चोरों-डाकुओं को डर न हो तो ये न जाने क्या कुछ कर दें।" हरगोविन्द ने अपनी सफाई दी।

"यह सदियों पुराना विचार है। इस गले-सड़े पुराने बोसीदा सिद्धान्त को कब की तिलांजली दी जा चुकी है। जेल नियमों के अनुसार आप और दण्ड दे सकते हैं, पर किसीको भी मार नहीं सकते।" राजीव भी चुप न रह सका।

"मिस्टर राजीव! तुम्हारी भावनाओं की मैं सराहना करता हूं, पर तुम्हें हमारी कठिनाई भी समझनी चाहिए।" अधीक्षक ने बात का सूत्र यहीं से शुरू किया। वह राजीव की आज की स्पष्टवादिता से सहम गया था। यदि राजीव की जगह कोई और होता और उसने इतनी बड़ी गुस्ताखी की होती तो इस समय तक उसे मार-मार कर अधमरा करके बेड़ियों में जकड़ किसी अन्धेरी कोठरी में डाल दिया गया होता।

"अधीक्षक महोदय! बीसवीं सदी में अपराध-विज्ञान बहुत बदल गया है। जेल को अब सुधार-गृह कहा जाता है। एक अपराधी भी रोगी की तरह है। शरीर का रोगी हस्पताल में रखा जाता है और मन का रोगी जेल में। जो व्यवहार हस्पताल में एक रोगी को दिया जाता है, वही व्यवहार जेल में कैदी

को मिलना चाहिए। जैसे हस्पताल का उद्देश्य रोगी के शारीरिक रोग की चिकित्सा करना है, उसी प्रकार जेल का उद्देश्य कैदी के दिल व मन के विकार को दूर करना है। गालियों, घूसों-मुक्कों व जानवरों की तरह के व्यवहार से यह उद्देश्य पूरा नहीं हो सकता।" राजीव बोलता ही जा रहा था। "क्षमा कीजिए, अपराधी कौन नहीं है? चोरी कौन नहीं करता? यह कहानी जितनी न कही जाए, उतनी ही ठीक है। कौन जानता है, कितने आदर्शवादी नवयुवकों को परिस्थितियों के क्रूर थपेड़ों ने अपराध के भंवर में झोंक दिया। भगवान का कोई भी पुत्र अपराधी या पापी के रूप में जन्म नहीं लेता। समाज ही उसे प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से अपराध करने पर विवश करता है। हम पकड़े गए, पर हमसे अधिक खूंखार अपराधी, समाज का रक्त चूसकर गगनचुम्बी महल खड़े करने वाले समाज के नेता बने फिरते हैं।"

आज राजीव आपे से बाहर था, पर अधीक्षक अपार संयम दिखा रहा था। वह चुपचाप सुनता रहा, फिर हरगोविन्द को बाहर जाने का इशारा करके राजीव को अपने पास की कुर्सी पर बिठा लिया।

"राजीव! तुमने ठीक कहा है। मेरा भी यही विचार है। पिछले वर्ष भारत सरकार की ओर से जेल अधीक्षकों का प्रशिक्षण हुआ था। उसमें भी यही कुछ सिखाया गया था, परन्तु क्या करूँ, मेरी भी विवशताएं हैं। स्टाफ सारा अनपढ़ है, फिर ये पेशावर अपराधी हैं। खैर, तुम सब भूल जाओ!" अधीक्षक ने उसे शान्त करने की कोशिश की।

"आपकी बात ठीक हो सकती है। पर जिस प्रकार बदले की भावना से कैदियों को मारा-पीटा जाता है, उससे अपराधी और बड़ा अपराधी बनता है। उसके अन्दर का चोर और अधिक प्रबल होता है। आप जरा अमर को बुलाइए तो सही।"

अमर को बुलाया गया। वह अभी भी सिसक रहा था। जब उसे अधीक्षक के कमरे में बुलाए जाने की सूचना मिली तो वह और घबराया। ये अधीक्षक महोदय भी कैदियों को पीटने में बहुत माहिर समझे जाते थे। किन्तु कुछ समय से किन्हीं कारणों से उनका हृदय कुछ कोमल हो गया था। इस पर भी उनका पुराना रूप ही कैदियों को याद था। अमर थरथर कांप रहा था। वह कमरे के भीतर जाने से वैसे ही हिचक रहा था, जैसे

बकरा कसाई के पास जाने से हिचकिचाता है। एक वार्डर उसे धकेलता हुआ अन्दर ले आया। वह बाहर लगी चिक के पास खड़ा हो गया। उसके कदमों ने आगे बढ़ने से इनकार कर दिया। उसे पुरानी कहानियां याद आ रही थी, जब इसी प्रकार इसी कमरे के अन्दर बुलाकर उसे व अन्य कई कैदियों को बुरी तरह पीटा गया था। वार्डर ने चिक उठाई और अमर को अन्दर धकेल दिया।

अन्दर जाते ही उसकी नज़र अधीक्षक पर पड़ी, पर तभी उसे एक कुर्सी पर राजीव दिखाई दिया। उसकी जान में जान आ गई। वह हैरान भी हुआ। कैदी को कुर्सी पर बिठाया जाना एक बहुत बड़ी अनहोनी बात थी। एक तरफ दूर खड़े होकर अमर ने हाथ जोड़ दिए। उसके शरीर का हर अंग कराह रहा था और दोनों गालों पर खून उभर आया था। 'अब उसे कौन कितना मारेगा···' इस उधेड़बुन में उसका दिल धड़क रहा था।

"इधर, नजदीक आओ!" अधीक्षक श्री भाटिया की आवाज़ ने मौन तोड़ा। अमर सटपटा उठा। नज़दीक बुलाने का मतलब वह कई बार समझ व देख चुका था।

"पर साहब! उस कसूर के लिए तो मेरी हड्डियां तक भी तोड़ डाली गई हैं पहले ही मुझे···" जोड़े हुए हाथ कांप उठे। अमर के होंठ ठीक बोल भी नहीं पा रहे थे।

"बेटा! घबराओ मत। तुम्हें अब कोई मारेगा नहीं। यहां मेरे पास आकर बैठ जाओ।" भाटिया के ये शब्द सुनकर अमर को लगा, आज स्वयं भगवान ही धरती पर उतर आए हैं। उसने भाटिया के मुंह से न कभी 'बेटा' शब्द सुना था और न इस प्रकार का व्यवहार देखा था। उसकी तो दोनों पुष्ट लम्बी भुजायें व टांगे ही कैदियों से बातें करती थीं। पर आज यह हो क्या गया—उसे कुछ भी समझ नहीं आ रहा था।

'बेटा' शब्द ने अमर के सिर से पैर तक बिजली की झुरझरी-सी पैदा कर दी। जब से उसने आंख खोली और अपराध के मार्ग पर अग्रसर हुआ था, उसे न तो किसीने कभी बेटा कहा और न ही इतने स्नेह से पुकारा था। मां-बाप तो उसने देखे ही नहीं थे। बेटा उसे कहता ही कौन? पुलिस व जेल वालों से तो मां-बहन की गालियां ही सुनता आ रहा था। उसकी कंपकंपी कुछ

शात हुई। शरीर का तनाव भी कम हो गया। वह आगे बढ़ा और भाटिया की कुर्सी के पास बैठ गया।

"अमर, सच बताओ वह चोरी तुमने की या नहीं ?" आज पहली बार अमर धर्मसंकट में पड़ गया। आज तक कभी भी उसने अपना अपराध स्वीकार नहीं किया था। कई बार पुलिस ने उसकी हड्डियां तक भी तोड़ दी थीं, रात-रात भर उसे बर्फ पर रगा गया था, उसके हाथों पर पलंग के पाए रख-कर सिपाही पलंग पर कूदे थे, पर उसने अपना अपराध कभी भी स्वीकार नहीं किया था। उसके गुरू की यहीं सबसे बड़ी शिक्षा थी कि न तो सच बोलना, न अपराध स्वीकार करना और न ही अपने साथियों का भेद खोलना।

परन्तु आज वह परेशान हो गया। वह सच कहे तो कैसे और झूठ कहे तो कैसे ? एक ओर उसके गुरू की शिक्षा व पेशे का धर्म था और दूसरी तरफ जीवन में पहली बार मिला एक मानव का स्नेह-सिक्त व्यवहार था। थोड़े से समय में ही उसके दिल में लम्बा संघर्ष हुआ। आखिर उसके दिल का झूठ हार गया और सच जीत गया। दोनों हाथ जोड़कर वह बोला, "साहब ! मैंने दो रुपये चुराए थे।"

"अमर ! यह चोरी तुमने क्यों की ? घबराओ मत—!" अमर की पीठ पर भाटिया का भारी भरकम हाथ फिरा तो उसका शरीर स्नेह से भर उठा।

"पिछले पन्द्रह दिन से मुझे बीड़ी पीने को नहीं मिली थी। मैं बहुत परेशान था। दो-तीन दिन मांगकर पीता रहा। फिर बीड़ी की तलब मुझे तड़पाने लगी। मैं बीड़ी के बिना रह नहीं सकता। मेरे पास एक पैन था। उसके बदले में मुझे पांच बीड़ियां मिलीं। उनसे पांच दिन निकाले। फिर एक साबुन की टिक्की थी। उसके बदले में चार बीड़ियां ली और चार दिन निकाल लिए। उसके बाद मेरे पास कुछ भी नहीं था। बहुत तंग था। इसलिए आपके घर से दो रुपये निकाल लिए।"

"क्या बटुए में दो रुपये ही थे अमर ?" राजीव ने पूछा।

"नहीं, बटुए में तो पूरे चार सौ रुपये थे। पर मेरी जरूरत तो केवल दो रुपये की ही थी।" अमर के इन शब्दों से भाटिया की आंखों में एक चमक आ गई। और फिर आंखें गीली हो गईं।

मर, तुम्हें और तो कोई तकलीफ नहीं है ?" भर्राये गले से मा
से पूछा ।

इन भारी बेड़ियों से व कूदकर चलने पर विवश करने से पैरों के टखनों
व हो गया है । मैं यहां कपड़े की पट्टी बांधना चाहता हूं ताकि लोहे के
कड़े घावों पर और घाव न करें । पर मुझे ये पट्टी भी बांधने नहीं दे
।" अमर को लगा आज दुनिया एकदम बदल गई है । उसकी तकलीफ से
ज तक किसीको कोई भी वास्ता न रहा था ।

भाटिया ने हैडवार्डर को बुलाया और अपनी जेब से दस रुपये का नोट
नकालकर बोला, "इन रुपयों की बीड़ियां मंगवाकर मेरे आफिस में रखवा
दो और प्रतिदिन अमर को चार बीड़ियां दे दिया करो । उसकी सब बेड़ियां
खुलवा दो और इसके घावों पर मरहम पट्टी करवाओ ।" अमर की आंखें
पानी से चमक उठीं । उसके हाथ जुड़ गए । उसने झुककर भाटिया के पैर
छुए, फिर कृतज्ञता व श्रद्धा की नजरें राजीव पर डाली और हैडवार्डर के साथ
कमरे से बाहर हो गया ।

"राजीव ! मैं तुम्हारा धन्यवादी हूं । तुमने आज मेरे अन्तर् के एक बहुत
नाजुक तार को छेड़ दिया । मुझे आज लगा है कि हम कितने गलत तरीके से
इन कैदियों के साथ व्यवहार करते हैं । इस व्यवहार के कारण अमर के पैर
में तो केवल घाव ही आया था, पर मेरा तो कलेजे का एकमात्र टुकड़ा मुझसे
अलग हो गया था ।" भाटिया के आंसू छलकने लग पड़े । उसने दोनों कुहनियां
मेज़ पर टिका दीं । हाथों पर माथा थाम लिया । कुछ देर मौन रहा । तभी
उस मौन को भंग करने मेज़ पर रखे सफेद साफ शीशे की चमकीली परत प
भाटिया की आंखों के आंसू ढुलक पड़े ।

"क्यों भाटिया साहब ! ऐसी क्या बात हो गई थी ?" राजीव ने उत्सुक
दिखाई ।

"मुझे कैदियों को मारने-पीटने की बहुत आदत हो गई थी । मुझे
अफसरों ने सदा यही सिखाया कि जितना इन्हें मारा-पीटा जाएगा, उत
जेल प्रशासन ठीक रहेगा । मेरा ही एक पुत्र था । मैं उसे बहुत योग्य बन
धुन में खूब मारता-पिटता था । यदि मैं कुछ दिन जेल में या घर में पि
करता तो मेरे हाथों में जैसे खारिश-सी होती रहती थी । ज़रा-ज़रा-

पर मैं अपने इकलौते पुत्र को मारने-पीटने लगा। एक दिन वह रात के समय भाग गया। आज सात साल हो गए, उसका कहीं कुछ पता नहीं लगा। सारी दुनिया छान मारी। पुलिस ने सब संभव स्थान खोज लिए, अखबारों में विज्ञापन दिए, रेडियो पर घोषणा करवाई, पर मेरा बेटा नहीं मिला। मुझे नींद नहीं आती। बीमार रहने लगा हूं। मैंने अपने हाथों अपना बेटा गंवा दिया!" आज भाटिया एक बच्चे की तरह रो रहा था।

"भाटिया साहब! प्रभु करे आपका पुत्र जहां भी हो ठीक हो और वह शीघ्र आपके पास आ जाए। पर मैं आपसे एक बात पूछने की गुस्ताखी कर सकता हूं?"

"जरूर पूछो राजीव!"

"उस घटना के बाद भी जेल में मारने-पीटने का यह रिवाज बदला क्यों नहीं गया?"

"शायद मनुष्य अपने स्वभाव का दास होता है।" भाटिया ने परोक्ष से अपनी भूल स्वीकार की।

"एक विचारक ने कहा है कि मनुष्य इतिहास से केवल यही सीखता है कि वह इतिहास से कुछ नहीं सीखता।"

"बहुत ठीक—यही बात है—।"

"अच्छा, भाटिया साहब! वार्डरों की मार ने अमर के मन के शैतान को जगाया था, पर आपके सहानुभूति व स्नेह के शब्दों ने उसके दिल के भगवान को जगाया है। आपने मेरी बात भी रख ली। मैं आपका धन्यवादी हूं।" राजीव उठकर चला आया।

अब सारी जेल में इसी घटना की चर्चा थी। राजीव सब कैदियों का हीरो बन गया था। राजीव के बैरक के बाहर आते ही कैदियों ने उसे घेर लिया। उससे पूर्व वे अमर से सब कुछ सुन चुके थे।

"यह राजीव की हिम्मत का नतीजा है, जिसने भरे आंगन में वार्डर के हाथ पकड़ लिए। सरेआम सबकी पोल खोल दी।" प्रमोद ने कहा।

"यह दया व सहानुभूति नहीं थी, बल्कि अपनी कमजोरियों को छुपाने की एक कोशिश [illegible]। आज तक किसीने भी इनके मुंह पर इनकी कमजोरियों का भांडा नहीं फोड़ा था।" मोहन ने अपनी व्याख्या दी।

"भाटिया साहब जीवन भर कैदियों की हड्डी-पसली तोड़ते रहे तब उनके दिल में कभी दया नहीं आई। उनका अपना पुत्र भी इस व्यवहार से भाग खड़ा हुआ तब भी कैदियों की पिटाई में कोई फर्क नहीं आया। शायद अब लड़के के मिलने की आशा नहीं रही, इसी कारण···" रेशम ने पास आकर बातचीत में हिस्सा लिया।

"सौ चूहे खाकर बिल्ली हरिद्वार चली।" सूरत भी चुप नहीं रह सका।

"ऐसी बात नहीं है। मनुष्य के दिल में शैतान भी है, इन्सान भी और भगवान भी। कभी भी एक शैतान इन्सान बन सकता है। कारण कुछ भी हो पर इन्सानियत के व्यवहार का हमें स्वागत करना चाहिए। आखिर हमारे जीवन में भी तो एक ऐसा शैतानियत का दौर आया था, जब हमने अपराध किया और यहां पहुंच गए।" राजीव ने सबसे यह बात कही और आगे चला गया।

रात को जब अपनी बैरक में सब इकट्ठे हुए तो अमर ने राजीव को बहुत धन्यवाद किया। राजीव बोला "धन्यवाद किस बात का ? मैंने तो एक इन्सान के नाते अपना कर्तव्य पूरा किया है। पर तुमने पैन व साबुन के बदले में पांच सात बीड़ियां कहां से लीं ? क्या यह भी लेन-देन की दर है ?"

"राजीव बाबु ! इस बस्ती के अपने ही नियम हैं और अपने ही भाव हैं। हम तो चोर हैं ही, पर यह खाकी वर्दी पहने जो हमारे पहरेदार वार्डर हैं, ये तो डाकू व लुटेरे हैं। ये हम मजबूर गरीबों का खून तक चूस लेते हैं। यह जो क्रूर हरगोविन्द है, उसीने मेरे पैन के बदले मुझे सात बीड़ियां दीं। वह पैन तीन साल पहले मैंने तीन रुपये में खरीदा था। तीन रुपये की सात बीड़ियां यहां का रेट यही है।" अमर की बात ने राजीव को हैरान कर दिया।

तभी सोहन बोल पड़ा, "अरे, दो रुपये की अफीम मुझे दस रुपये की पड़ी।"

"तो क्या जेल के अन्दर अफीम भी आ जाती है ?" राजीव ने और हैरान होकर पूछा।

"परसों मक्कड़ सिंह एक वार्डर के साथ मिलकर स्मर के अन्दर छुप-कर शराब पी रहे थे। वे बाहर से मंगवाते हैं।" सूरत ने अपनी भोली सूरत दिखाकर कहा।

"राजीव ! यहां क्या नहीं होता ! ये जेल के अधिकारी व कर्मचारी लुटेरे ही तो हैं। जेल नियमों के अनुसार प्रति कैदी जितना राशन व सामान दिया जाना चाहिए उतना तो दिया नहीं जाता और आटा तो उतना खाया भी नहीं जा सकता। पर रजिस्टरों में उतना ही खर्च दिखाया जाता है। उसीमें से शराब भी उड़ती है। हजारों रुपयें की जेल की खरीद में न जाने किस-किसको कितनी कमिशन होती है।" सोहन बोला।

"सोहन ! वह लड़की वाली बात बताओ बाबुजी को।" सूरत ने कुछ शर्माते हुए कहा।

"लड़की ! कैसी लड़की ? क्या बात ?" राजीव ने कुछ चौंककर पूछा।

"अजी पूछो मत। कुछ साल पुरानी बात है। मैंने सुनी है, देखी नहीं। एक अमीर व्यक्ति कैदी बनकर आया। उसे नीचे के छोटे कमरे में रखा। उसे बी क्लास मिली थी। वह सब वार्डरों को रिश्वत देता और शराब पिलाता था। उन दिनों जेल प्रशासन बड़ा ढीला था। अधीक्षक भी कोई अयोग्य-सा व्यक्ति था। कहते हैं, उस अमीर कैदी के लिए एक रात कुछ वार्डर एक लड़की उसके कमरे में ले आए थे।" सोहन की इस बात पर कुछ चेहरे शर्मा गए, कुछ ने भद्दे मजाक शुरू कर दिए, पर राजीव गम्भीर हो गया।

अमर आज बिलकुल चुपचाप एक तरफ बैठा किसी गहरी सोच में मग्न था। राजीव ने उसे अपने पास बुलाया। उसे पूछा, "क्यों अमर, आज तुम इतने चुपचाप क्यों हो ?"

"राजीव ! आज की घटनाओं से मेरी एक बहुत बड़ी योजना अस्त-व्यस्त हो गई। सोच रहा हूं, उसका क्या करूं।" अमर ने धीरे से कहा। बाकी कैदी अब ताश खेलने या गप्पें मारने लग पड़े थे। अमर को राजीव ने कुछ पास बुला लिया। पूछा, "कैसी योजना ?"

"यह मार आज पहली बार नहीं पड़ी। मुझे कितनी ही बार इस प्रकार

पीटा जा चुका है। मैं अगले ही मास रिहा हो रहा हूं। मेरी योजना यह थी कि इस वार वाहर आकर भाटिया और हरगोविन्द की हत्या कर दूंगा। जीवन के चालीस वर्ष पूरे कर चुका हूं। सात वार जेल आ चुका हूं। अव तो यहीं दिल भी लग गया है। इन दो की हत्या से यदि फांसी मिल गई तो ज़िन्दगी का व्यर्थ का यह भार समाप्त हो जाएगा। यदि उमरकैद मिली तो आप सवके साथ खूव वढ़िया कटेगी।" अमर ने दिल खोलकर रख दिया।

"अमर! इतना वड़ा वदला आखिर किस वात का?" राजीव ने विस्मय प्रकट किया।

"राजीव! इन सालों ने कई वार विना कारण वुरी तरह पीटा, मारा व गालियां दी हैं। मुझे ही नहीं सव कैदियों को इन्होंने वेजान चमड़ा समझ-कर धोवी के कपड़े की तरह पीटा है। कितनों की हड्डियां-पसलियां तोड़ी, कईयों के अंग वेकार कर दिए, एक पागल हो गया था, तीन रुपये के पैन के वदले सात वीड़ियों की तरह कितने ही कैदियों का इन्होंने खून तक चूस लिया है; परन्तु मेरी योजना अव कुछ···।"

"क्यों, अव क्या सोच रहे हो?"

"जव से तुम इस वैरक में आए हो, तुम्हारे सम्पर्क व तुम्हारी वातों ने मेरे सोचने का ढंग ही वदल दिया है। आज भाटिया ने जिस प्रकार का व्यव-हार किया, मुझे पता नहीं उससे कुछ अन्दर ही अन्दर अनुभव हो रहा है। भाटिया के लिए संभाली ज़हर की पोटली जैसे पिघल-सी रही है। पर इन दोनों ने इतने जुल्म किए हैं कि कुछ भी हो, मैं इन्हें छोड़ूंगा नहीं।" अमर की आंखों में क्रोध की लाली उतर आई।

"सातवीं वार जेल में! तुमने जेल को अपना घर क्यों वना लिया अमर?" राजीव ने हैरान होकर पूछा। अव तक वाकी सभी कैदी लगभग सो चुके थे।

"राजीव! जव मैंने होश संभाली थी, तो एक नगर की पटरी पर कुछ वच्चों के साथ रहता था। मेरे मां-वाप कौन थे, मुझे कुछ मालूम नहीं। किसी-को कहते सुना था कि वे भी अपराध करते और पटरियों पर ही जीवन विताते थे। वे एक वार किसी वड़े गिरोह के साथ गए, फिर उनका कुछ भी पता नहीं चला। मैं पटरी पर सोता। वाकी वच्चों के साथ इधर-उधर से मांग-

कर अपना पेट भर लेता। जब कुछ बड़ा हुआ तो एक उस्ताद के पल्ले पड़ गया। उसने गुर बताए और जेब काटने का काम में लग गया। गुज़र अच्छा होने लग पड़ा। मेरे साथियों की एक अलग टोली बना दी गई व हमें एक क्षेत्र दे दिया गया। नगर के सब बड़े उस्तादों ने सारे नगर को कुछ हिस्सों में बांट लिया था। कोई भी टोली अपने इलाके से बाहर काम नहीं कर सकती थी।

"मैं केवल बारह वर्ष का था जब पहली बार मुझे सजा हुई। जेल गया। वहां पर मारपीट, घृणा, गाली-गलौच खाते हुए सजा पूरी की। बाहर निकला तो न मेरा कोई घर था और न सम्बन्धी, न मित्र। फिर से अपने उन्हीं मित्रों में जा मिला। वही धन्धा शुरू कर दिया। कुछ दिन मज़े में गुज़रे, फिर पकड़ा गया। जेल गया। कुछ मास के बाद वापिस आया। वापसी पर इच्छा हुई कि कोई काम करके सम्मान का जीवन व्यतीत करूं। यही सोचकर मैं अपनी टोली में शामिल नहीं हुआ। किसी और बस्ती में जाकर मज़दूरी करता रहा और किसी काम की खोज करता रहा।

"उन्हीं दिनों एक बड़े नेता की किसीने जेब काट ली। पूरे तीन हज़ार रुपये निकल गए थे। पुलिस पर बड़ा दबाव पड़ा कि किसी भी प्रकार अपराधी को पकड़ा जाना चाहिए। अखबारों में नेता की जेब कटने का समाचार छप गया। नेता की पार्टी ने प्रस्ताव पास कर दिया कि कानून व व्यवस्था पुलिस की पकड़ से बाहर हो गई है। विधानसभा में भी सवाल उठा दिया गया। लाख सिर पटकने के बाद भी पुलिस को अपराधी नहीं मिला।

"थाने में एक योजना बनाई गई। पुलिस ने मुझे तलाश करवाया और पकड़ लिया। मुझे कहा गया कि मैं ही वह अपराध स्वीकार कर लूं। यह भी धमकी दी गई कि यदि मैं उस अपराध को स्वीकार न करूंगा तो मेरी इतनी पिटाई की जाएगी कि विवश होकर मुझे स्वीकार करना पड़ेगा। मैंने इन्कार किया तो थानेदार ने कहा कि उनकी इज्जत का सवाल बन गया है। एक बड़े नेता की जेब कट जाए और अपराधी पकड़ा न जाए तो उनकी नौकरी खतरे में है। मुझे यह भी आश्वासन दिया गया कि वे मुझे छुड़ा लेंगे। मैं कुछ घबराया। अपराध स्वीकार कर लिया। मेरी जेब में से कुछ नोट बरामद हुए बता दिए गए। मुकदमा चला। किसीने मेरी कोई मदद न की, करनी भी नहीं

व्यर्थ में फंस गया था। इस वार एक अच्छा नागरिक वनने की योजना
ी तो पुलिस की इज्जत वचाने व एक वड़े नेता की चोरी पकड़ने की
दी पर मुझे वलि चढ़ा दिया गया।" अमर ने गहरी सांस ली।
"वाह अमर! तुम आप वीती सुना रहे हो या किसी लेखक की कहानी?
री कहानी सुनूंगा, तू कहता चल।" राजीव वड़े ध्यान से सुन रहा था।
ने अव पूरा कम्वल अपने ऊपर ले लिया था। अमर भी अपना कम्वल
कर उसे लपेट कर वैठ गया।

अमर ने एक वीड़ी सुलगाई। उसके धुंए से कमरे के प्रकाश में वल से पड़ते
दिखने लगे। वह फिर वोला, "इस वार विल्कुल वेगुनाह पकड़ा गया था।
पुलिस पर मुझे वड़ा भारी गुस्सा था। एक दिन मुकदमें की पेशी थी। न्याया-
लय के लिए मुझे वस में ले जाया जा रहा था। एक वस स्टैंड पर वड़ी भारी
भीड़ थी। सिपाही मुझे हथकड़ी डाले सीट पर वैठा था। मैं नीचे वस के फर्श
पर ही वैठ गया था। भीड़ इतनी थी कि आदमी पर आदमी चढ़ रहा था। तव
मेरी आयु सत्रह अठारह वर्ष की रही होगी। मैं विल्कुल पतला था। उस दिन
मेरे वायें हाथ में चोट थी, इसलिए केवल दायें हाथ में ही हथकड़ी लगी थी।
मैंने धीरे से अपना हाथ मरोड़ा, टेढ़ा किया और हथकड़ी से निकाल लिया।
नीचे ही नीचे कुछ आगे सरका। एक चौक पर वस धीमी हुई तो मैं कूदकर
वाहर हो गया।

"भीड़ इतनी थी कि सिपाही को तत्काल कुछ भी पता न चला। मैं
चौक से सीधा सामने जाकर आगे मुड़ा और फिर अगली सड़क पर चला गया।
पीछे मुड़कर देखा तो वही सिपाही दूर सड़क पर भागता हुआ दिखाई दिया।
मैं घवराया। तभी मेरे सामने से एक कार निकली। मैंने हाथ देकर उसे रु
कर लिया। एक नौजवान महिला कार चला रही थी और कार में को
था। मैंने रोते हुए कहा, 'मेम साहव! मुझे अगले चौक तक कार में छो
मेरी मां घर पर मर रही है, मेरा वाप वहां काम करता है। अपने व
तुरन्त वुलाना है।' वह महिला रहमदिल थी, दरवाजा खोला और मुझ
लिया। मैंने किसी एक सड़क की ओर इशारा कर दिया और वह क
ओर घुमा दी, वह मुझसे अधिक सवाल न पूछे, इसलिए मैंने रोना
दिया।

"'मेम साहब ! कार जल्दी चलाइए। कहीं मेरे बाप के पहुँचने से पहले ही मां दम न तोड़ दे।' मैंने कहा और उसने पैर एक्सलेटर पर दबा दिया। कार हवा से बात करने लग पड़ी।

"सामने एक सिपाही दिखा। उसने कार रोक ली। तेज कार चलाने के लिए वह कार का चालान करने लगा। वह महिला इतनी भली थी कि उस सिपाही से बोली, 'इस लड़के की मां मर रही है। मुझे इसे शीघ्र पहुंचाना है। आप जल्दी से चालान लिखो, मुझे फारिग करो।' सिपाही ने चालान की किताब निकाली। सब कुछ लिख लिया। मैं भी बाहर निकल उस सिपाही के पास खड़ा हो गया। जल्दी में पुलिस वाले के हाथ से किताब नीचे गिरी। वह उस महिला से कुछ बात कर रहा था। मैंने किताब उठाई, फिर अपनी कमीज से उसे झाड़ने-पोंछने लगा, फिर वापिस कर दी। महिला ने मुझे फिर कार में बिठाया और कार दौड़ा दी। जब मुझे लगा कि अब सुरक्षित स्थान आ गया है तो मैंने कार रुकवा दी। कार से उतरकर मैंने दोनों हाथ जोड़े और बोला, 'मेम साहब ! आपने मुझ गरीब की बड़ी भारी मदद की है। मैं आपका ऐहसान तो चुका नहीं सकता, पर ये कागज आपने पास रख लें।' उन कागजों को देख वह चौंक गई। उससे पहले कि वह सारी बात समझती और कुछ कहती, मैं सामने की गली में गायब हो गया।"

"तो उन कागजों में क्या था ?" राजीव की उत्सुकता जागी।

"उस सिपाही की चालान की कापी के वे कागज थे जिनपर उस महिला का चालान लिखा गया था। मैंने वे फाड़ लिए थे।" अमर के चेहरे पर शोर्य की लाली दौड़ गई।

राजीव हंसी से लोटपोट हो गया। अमर की पीठ थपथपा कर बोला, "कमाल के आदमी हो अमर तुम भी ! इतनी फुर्ती ! उस सिपाही को कुछ भी पता नहीं चला !"

"राजीव ! जेब काटना भी एक कला है। यह कोई बच्चों का खेल नहीं। एक बहुत बड़े उस्ताद से मैंने यह हुनर सीखा था। इसके लिए भी बड़ी साधना व तपस्या करनी पड़ती है। अब तो मैं इतनी सफाई से जेब काट लेता हूं कि यदि उसका प्रदर्शन करूं तो बहुत बड़ा जादूगर कहलाऊं।"

"पर फिर तुम पकड़े गए ?" राजीव ने पूछा।

स मुकदमे में तो कभी पकड़ा ही नहीं गया। उसके वाद मैंने वह नगर
दया। अन्य नगरों में घूम-फिरकर अपना धन्धा करता रहा। दिन
गुज़रते गए। कई वार विचार आया कि कोई नौकरी करूं और अच्छा
रिक वन जाऊं। फिर सोचा, पुलिस में मेरा नाम व हुलिया है। ज्यों ही
स को पता लगेगा, किसी भी अपराध में मुझे घेर लिया जाएगा। इसलिए
ी निर्णय किया कि अच्छा वनने की कोशिश करना व्यर्थ है। मुझे लगा कि
श संभालने पर प्रभु ने मुझे जिस धन्धे में डाला था, वही मेरे जीवन क
न्धा है। कुछ वर्ष ठाटवाट से निकले। फिर पकड़ा गया तो हिसार जेल
वन्द कर दिया गया।

"हिसार में हरगोविन्द की तरह का एक ज़ालिम डिप्टी था। उसने इतना पीटा कि पिटाई का सारा डर समाप्त हो गया। रही सही शर्म भी जाती रही। मन के किसी कोने में कभी अच्छा इन्सान वनने की इच्छा झलकती भी तो वह उस व्यवहार से सदा के लिए भस्म हो जाती। जितना मुझे मारा पीटा गया, गाली-गलौच की गई, उतना ही मैं पक्का जेवकतरा वनता गया।

"एक दिन वह डिप्टी हमारी वैरक का निरीक्षण करने आया। उस दिन वेतन मिला था व उसका वटुआ भरा हुआ था। मुझे कुछ गन्ध-सी आ गई। उससे वदला लेने का अच्छा मौका लगा। जव वह सवसे पूछताछ कर रहा था व मेरी ओर आकर मुड़ा तो मैंने उसका वटुआ निकाल लिया। उसे पता तव लगा, जव वह शाम को घर गया और पत्नी को पैसे देने के लि
उसने जेव में हाथ डाला।

"वह सीधा जेल आया। मैं ही सवसे वड़ा जेवकतरा था। हेडवा
के कमरे में मुझे वुलाया गया। आव देखा न ताव, मुझे दो जवान व
ने पीटना शुरू कर दिया। वह डिप्टी भी पास खड़ा था। मुझे कुछ
नहीं, वस पीटते रहे। पर तव तक मुझे जेल में इतना अधिक पीटा ज
था कि मेरा शरीर अभ्यस्त हो गया था। और मुझे पीड़ा उतनी मह
नहीं होती थी।

"ओ साले...हरामज़ादे...भैण...वटुआ निकाल...।" एक घ
रहने के वाद जव मेरा शरीर सूज गया, कई जगह खून निकल आ
अभ्यस्त अंग भी दर्द करने लगे तो डिप्टी ने मेरे पास आकर कह

" 'कैसा बटुआ? किसका बटुआ···?' रोते हुए मैंने कहा।

" 'वह बटुआ जो तूने निकाल लिया। इतनी सफाई से और कोई भी जेब साफ नहीं कर सकता। जल्दी बोल!' डिप्टी का एक घूंसा मेरी पीठ पर पड़ा और मैं दीवार से जा चिपका। सिर से खून बह गया।

" 'ओए मादर···हम बटुआ तेरे पेट से भी निकाल लेंगे···बोल निकालता है या नहीं?' साथ के वार्डर ने गालियां व पिटाई एकसाथ शुरू कर दी। पर मैं बिल्कुल ही मुकर गया। तब तक बटुआ ऐसी जगह छिपाया जा चुका था, जहां से मिल नहीं सकता था। राजीव बाबू! उसके बाद पूरे सात दिन तक मुझे पहाड़ी मेले में लगाए ढोल की तरह बेरहमी से पीटा गया। बीच में दो-तीन बार मैं बेहोश भी हो गया। पर मेरा यह दृढ़ निश्चय था कि सच नहीं बोलूंगा।

" मुझे जेल में धन की कोई आवश्यकता नहीं थी। परन्तु उस ज़ालिम डिप्टी से बदला लेने का और तरीका भी नहीं था। कई दिन तक बेरहमी से पिटाई तो मेरी हुई, पर वे हार गए और मैं जीत गया। कुछ दिन के बाद मैं अपनी बैरक में आ गया।" अमर ने कहा।

"अमर! तुम इतनी मार खाकर भी सत्य नहीं बोले, पर कल भाटिया के कमरे में केवल दो रुपये की चोरी तुमने एकदम ही मान ली!" राजीव ने हैरानी से पूछा।

"राजीव! उस दिन भी जब मुझे बाहर पीटा गया तो मैंने अपराध स्वीकार नहीं किया था। मैं कभी मानता भी नहीं। वह तो साधारण-सी मार थी। उससे बड़ी भयंकर यातनाएं मैंने सही हैं। यदि मार-मारकर अधमरा भी कर देते तो भी मैं स्वीकार न करता।"

"फिर तुम माने कैसे?"

"जब उस दिन भाटिया ने अपने कमरे में बुलाया तो उसके चेहरे से एक पुलिस या जेल अधिकारी की क्रूरता नहीं, बल्कि एक इन्सान की इन्सानियत झलक रही थी। फिर तुम भी पास ही बैठे थे। भाटिया ने मुझे 'बेटा' कहकर पुकारा। आह! उन शब्दों में क्या जादू था राजीव! मुझे ही क्या, इस प्रकार के प्यार व सहानुभूति के शब्द पत्थर को भी पिघला देते। मुझे अपने मां-बाप का पता नहीं। आज तक मुझे समाज, पुलिस व जेल वालों ने 'चोर, डाकू,

दमाश' ही कहा था। सब प्रकार की गालियां मेरे लिए प्रयोग की जा
। उस दिन जब भाटिया ने मुझे 'बेटा' कहकर पास बुलाया तो मुझे
मुझमें शैतान के अलावा कुछ और भी है। जिसे स्वर्ग कहते हैं, वह
धरती पर है, यहीं पर है।'

"अमर ! तुम सात बार जेल आए। पिछले पच्चीस वर्षों में तुमने कितने
अपराध किए। पर तुम्हारे दिल में भी प्यार के वे दो शब्द इतनी बड़ी
लचल पैदा कर सके। सच ही कहा है, भगवान हर जगह मौजूद है, महात्मा
भी और चोर में भी। आवश्यकता उसे जगाने और पहचानने की है।
अच्छा फिर क्या हुआ ?" राजीव ने करवट बदलकर पूछा।

अमर को पहली बार इस प्रकार का स्नेही श्रोता मिला था। उसने कहना
शुरू किया, "मैंने वह बटुआ अपनी बैरक की लैटरीन के ऊपर की छोटी पानी
की टंकी में इस प्रकार रख दिया था कि वह पानी से कुछ ऊपर रहे। मैं जब
हस्पताल से लौटा तब तक वह सुरक्षित था। सारी जेल के चप्पे-चप्पे में उसे
तलाश किया गया था। मेरी बैरक का फर्श भी दो जगह से खोदा गया था।
बटुए में पूरे सात सौ रुपये थे। फिर तो खूब मौज की। रोज बढ़िया सिगरेट
…फीम व शराब उड़ने लगी। बाकी की कैद मैंने शाही तरीके से काटी।"

"पर जेल में ये सब चीज़ें कैसे आती थीं ?"

"राजीव ! इस हिन्दुस्तान में हर आदमी के माथे पर उसकी कीमत
लिखी रहती है। वह कीमत चुकाओ और उसे खरीद लो। यहां बाज़ार में
सरेआम इन्सान नीलाम पर चढ़ते हैं और मन्दिर में भगवान भी बेचे जा
हैं। बड़ा अनुभव है मुझे जिन्दगी का ! जेल में वार्डर पैसे लेकर क्या नहीं
लाते ? बस, इतनी बात है कि दुगना-तिगना मूल्य चुकाना पड़ता है।
उन्हें पता चल गया कि मेरे पास धन है तब मेरी इज्जत होने लगी।

"मैंने कैद पूरी की। छूटकर बाहर आया पर जाता कहां ? फिर मैं
धन्धा पुलिस और जेल। इसी प्रकार अब सातवीं बार यहां आया हूं। अ
कैद समाप्त हो रही है तो फिर मेरे सामने सवाल खड़ा हो गया है कि
जाकर कहां जाऊंगा व क्या करूंगा। जानता हूं कि कुछ भी और
सकता। यह जिन्दगी अब जेल की ही हो गई है।" अमर ने कहान
की ओर एक ठण्डी गहरी सांस छोड़ी।

"अमर ! जीवन के लम्बे चालीस वर्ष तुमने जिस अपराध की दुनिया में बिताए हैं, उससे आगे भी बहुत कुछ है। मूल स्वभाव से कोई भी मनुष्य अपराधी नहीं होता। समाज और उसकी परिस्थितियां मनुष्य को अपराध के रास्ते पर धकेलती है। कुछ लोग उन परिस्थितियों से लड़कर भी अपना ठीक मार्ग बना लेते हैं परन्तु अधिकतर अपराधी बन जाते हैं। अपराध का मार्ग अन्धेरा है, भयकर है। उसका कोई भी भविष्य नहीं। जीवन के अन्तिम क्षण तक माथे पर अपराध का कलंक व सिर पर पुलिस की तलवार लटकाए जीना कोई जीना नहीं। अमर! सोचो, निश्चय करो कि यह रास्ता अब हमेशा के लिए छोड़ दोगे।" राजीव ने अमर के कुछ पास आकर कहा।

"परन्तु राजीव ! मेरे तो खून के हर कण में अपराध बस गया है। मैंने जीवन में कभी कुछ और सोचा नहीं, कुछ किया भी नहीं। अब इस पक्की उमर में साफ आदमी बनूंगा !"

"तुम गलत सोचते हो। आदमी तो तुम हो ही। तुम उस परम शुद्ध पवित्र सच्चिदानन्द परम पिता की सन्तान हो। तुम्हारी आत्मा की उस चिंगारी पर थोड़ी राख जम गई है। तुम अपने विवेक की फूंक से उस राख को उड़ाओ तो देखोगे कि तुम कितने पवित्र हो ! कितने अच्छे हो ! कितने भले इन्सान हो !"

"लग रहा है तुम मुझे किसी फिल्म का पात्र समझ बैठे हो।" अमर ने कुछ विस्मय से कहा।

"हां, हां ! यह जिन्दगी एक नाटक है। हमें अपना पार्ट अदा करना है। पर तुमने आज तक वह पार्ट अदा नहीं किया जो प्रभु ने तुम्हें दिया था। जीवन में कभी भी इतनी देर नहीं होती कि बिगड़ी बात बनाई न जा सके।"

राजीव की बातों से अमर एक गहरी सोच में पड़ गया।

"अच्छा अमर ! एक बात बताओ।"

अमर गम्भीर हो उसकी ओर देखने लग पड़ा।

"तुम जब भी अपराध करते हो, किसीकी जेब काटते हो, किसीको छुरा घोंपते हो तो तुम्हारे अन्दर कोई ऐसी सनसनाहट होती है, कोई ऐसी अनुभूति होती है, जो तुम्हें कहती है कि तुम बहुत अच्छा काम कर रहे हो ?"

"राजीव ! ऐसा नहीं, बल्कि इसके उलटा होता है। उस समय शरीर

के अन्दर जैसे कुछ बोलता है कि यह मत करो। हर अपराध करने से पहले मन में यह विचार भी आता है कि यह नहीं करना चाहिए। करने व न करने की दो इच्छाएं, जैसे अन्दर ही अन्दर टकराती-सी रहती हैं। और यह संघर्ष अन्त तक चलता है। अपराध करने के बाद भी मन में एक लीक-सी महसूस होती है कि यह अच्छा नहीं किया।"

"बस अमर! वही आत्मा की आवाज होती है। यदि उसे सुन लो तो इन्सान बन सकते हो और न सुनो तो शैतान।"

"पर अब इस उमर में...ज़िन्दगी का कांटा बदलकर करूंगा भी क्या?" अमर गहरी सोच में पड़ गया।

"अमर! एक दिन यह जीवन समाप्त हो जाएगा। यह मिट्टी का शरीर मिट्टी में मिल जाएगा। तुम्हारी आत्मा भगवान के पास जाएगी। जेल अधीक्षक भाटिया के चेहरे पर जो दया व सहानुभूति की चमक तुमने देखी थी, उससे कई लाख गुणा अधिक प्रेम दया व सहानुभूति का सूर्य है भगवान! वह हम सबका पिता है। बोलो, तुम उस पिता के पास क्या जवाब दोगे? यही कि कितनी जेबें काटीं, कितनों के गले काट दिए, छुरे घोंपे।"

राजीव ने अमर को कई बार समझाया था। पर उस पर कभी कोई प्रभाव न हुआ। आज कुछ बात ही अलग थी। अमर की पिटाई, भाटिया की दया व उसके जीवन की कहानी को सुनकर राजीव का स्नेह...ये सबकुछ अमर पर अजीब-सा प्रभाव कर रहे थे। अमर सामने की दीवार की ओर देख रहा था। उसकी आंखों में आंसू थे।

"अमर! आज वायदा करो, अपनी इस बार की रिहाई के बाद तुम एक नई ज़िन्दगी शुरू करोगे। अपने पसीने की कमाई से अपना पेट भरोगे। मैं जब भी बाहर आया, तुम्हारी ज़िन्दगी की हर कठिनाई में तुम्हारे साथ रहूंगा।"

"राजीव! मैं हार गया, तुम जीत गए। वायदा दे सकता हूं, पर एक शर्त पर। एक बात की तुम्हें भी मुझे आज्ञा देनी होगी। तुम्हारी कसम, उस एक बात को छोड़...यह अपराधी रास्ता छोड़ दिया...बिलकुल छोड़ दिया...भूखा मर जाऊंगा, पर कभी अपराध नहीं करूंगा।" अमर के चेहरे पर एक चमक दौड़ गई।

"कौन-सी शर्त ?" राजीव ने पूछा।

"उस जालिम हरगोविन्द को एक बार जरूर मजा चखाना है। इसमें मुझे मत रोकना, वरना मारा वायदा वापस ले लूंगा।" अमर का चेहरा फिर तमतमा उठा।

"खैर, फिर देखेंगे।" राजीव ने उसे और कुछ कहना ठीक न समझा।

बड़े गेट से लम्बी-तीखी सीटी की आवाज आई और फिर 'ठीक है, ठीक है' की तेज आवाजें रात के एकान्त को चीरती हुई एक किनारे से दूसरे किनारे तक गूंज गई। फिर रात के बारह बजे तो घण्टे के बारह बार बजने की ऊंची कर्णकठोर ध्वनि गूंज पड़ी। बड़े गेट के हिलने की खटपट हुई। छोटा दरवाजा खुला। कुछ वार्डर अन्दर आए, कुछ बाहर गए। रात को हर तीन घण्टे के बाद ड्यूटी बदलती थी। उस आने-जाने की आवाज के बाद फिर से उस सन्नाटे में जेल मौन की चादर ओढ़ सो गई।

सुबह होती थी और शाम होती थी और इसी प्रकार जिन्दगी तमाम होती जा रही थी। वही दीवारें, वही गेट, वही कैदी, वही सीटी की आवाज और वही 'ठीक है' की गूंज। जेल की दीवारों से दिखनेवाला उतना ही आकाश, वही तारे। मानो आकाश भी बन्दी होकर अपनी असीमता खो बैठा हो। सब कुछ एक यन्त्र की तरह बन्धा-सा। इस वातावरण में राजीव कभी-कभी बहुत अधिक परेशान हो उठता था।

'कुछ भी बदलता नहीं यहां। कुछ भी नया नहीं दिखता। एक नया पत्थर भी यहां नहीं आता। आज कई साल से न तो पैसे की शक्ल देखी और जब से रेखा नहीं आई तब से किसी महिला या बच्चे की शक्ल भी नहीं देखी।' राजीव स्वयं से बोल पड़ा।

जेल के नियम के अनुसार कोई कैदी अपने पास धन नहीं रख सकता। जब नया कैदी आता है तो बड़े गेट के साथ के कार्यालय में उसे सारा धन जमा करवाना होता है। जब वह गेट से भीतर लाया जाता है तो गेट का पहरेदार उसकी पूरी तलाशी लेता है। यदि उस तलाशी में कैदी के पास धन मिल जाए तो वह सारा धन जब्त हो जाता है। उसमें से आधा उस तलाशी लेने वाले पहरेदार को मिल जाता है और आधा सरकारी खजाने में जमा करवा दिया जाता है।

जेल का जीवन भी एक यन्त्र की तरह घूमता है। एक निश्चित समय पर सबको उठना होता है। फिर काम पर लगाया जाता है। निश्चित समय पर, निश्चित मात्रा में दाल व गिनकर हाथी के कान जितने बड़े-बड़े फुलके दिए जाते हैं। दो बार खाना देना व काम लेना। जरा-सी भी गलती हो जाए तो कैदी को मारने का अपना नशा पूरा करना।

घुटा-घुटा-सा वातावरण, आतंक, डर व भय की दुर्गन्ध सन्देह की सड़ांध, मन को कलुषित कर देने वाली विचार तरंगे, दिल की कोमल तारों को छेदने वाला व्यवहार इसीका नाम है जेल। इस सबसे राजीव का मन खीज उठता, घर की स्मृति उबाल लेने लगती, रेखा के प्यार की यादें दिल के दर्द को भी तोड़ डालतीं। उसकी बच्ची सुन्नो की तुतलाहट उसके अन्तर् की गहराइयों में गहरी चोट मारती। वह उस क्षण को कोसता, जब रेखा के प्यार के ज्वार में पागल होकर उसने अपने हाथों अपने आदर्शों की होली जला डाली थी और गलत रास्ते पर गलत कदमों को बढ़ाया था। पर अब तो तीर तरकस से निकल चुका था। वह सोचता और सोचता ही रहता। सोचते-सोचते जब उसके सोचने की शक्ति जवाब देने लगती, सिर दर्द से टूटने लग पड़ता, तो वह कराह उठता।

दीवाली के दीप बुझे आज पूरे पन्द्रह दिन हो चुके थे। रेखा का कुछ भी पता न आया था। न वह स्वयं आई न उसका कोई पत्र। उसने रेखा को दो पत्र लिखे, पर उनका भी कोई उत्तर न आया। राजीव की उद्विग्नता सीमाएं तोड़ रही थी।

'यह क्या?···कौन?···ओह···कितना प्यारा···कितना मासूम चेहरा···!!' गेट पर से होकर जब राजीव अपने प्रतिदिन के काम पर कार्यालय की ओर चला तो गेट के उस तरफ एक छोटे-से बच्चे को देख वह ठिठक गया। वह एकटक उस बच्चे की ओर देखता रहा। जेल के बाहर वार्डरों के रहने के मकान थे। वहीं से किसीका बच्चा इधर आ गया था। देखते-देखते राजीव देखता ही रहा। वह पत्थर की मूर्ति की तरह स्थिर हो गया।

राजीव जानता था वह बच्चा उसका कुछ नहीं लगता। उसका दूर का भी उससे कोई सम्बन्ध नहीं। पर उस बच्चे की मासूम नजरों में, उसकी भोली-भाली सूरत में राजीव अपनी सुन्नो को देख रहा था।

"राजीव ! कब से खड़े हो कुछ पता है ?" एक साथी कैदी ने पीछे से झकोटा तो उसका सपना टूट गया। तब तक मुन्नो की याद राजीव की आंखों से पानी बनकर टप-टप धरती पर गिर रही थी। विवश विह्वल राजीव अपनी वर्दी की हैसीयत को याद कर आगे बढा। आंखें पोंछी, दिल पर पत्थर रखा, भावनाओं को दबाया, अरमानों को दफनाया, यादों की आग पर पानी डाला और अपने काम पर लग गया।

प्रतिदिन जब डाक आती तो राजीव की तरसती आंखें चिट्ठियों के पुलन्दे को घूरती रहतीं। जेल में वैसे ही पत्र का अपना महत्व है। किसी अपने सम्बन्धी व मित्र का पत्र कितनी प्रसन्नता देता है, हृदय की किन गहराइयों को छू लेता है, किस प्रकार जुदाई के घावों पर मरहम बन लग जाता है व कितना गम गलत कर देता है···जेल में पत्र की इस अपरम्पार महिमा को वही जान सकता है, जो कभी जेल में रहा हो।

जेल के बाहर के लोग पत्र नहीं, केवल कागज पर स्याही से लिखे कुछ शब्द मात्र पढते हैं। एक कैदी के लिए पत्र दो दुनिया को जोड़ने वाला एक पुल है। जेल की दीवारों से बाहर भी कैदी के अस्तित्व के साथ किसी का कुछ लगाव है, इसका पत्र ही एकमात्र प्रमाण है। अपराध करने से पहले कैदी का भी कोई परिवार था, उसका भी एक संसार था, वह भी एक नागरिक की तरह समाज में रहता था, उसे भी कोई चाहने वाला है···इन सब बातों को वहां केवल पत्र ही तो सिद्ध करता है। इस विश्व में पत्र की वास्तविक महिमा स्वयं भगवान भी तब तक नहीं जान सकते, जब तक वे कुछ समय जेल न हो आएं।

जब किसी कैदी का पत्र आता, उसकी उस दिन दीवाली हो जाती। वह बार-बार उसे पढ़ता। रात को सोती बार फिर उसे पढ़ता। फिर पत्र को सिरहाने रखकर सपनों के संसार में खो जाता। पुराने पत्रों को कैदी उतनी ही सम्भाल के साथ जोड़कर रखता है, जितनी सम्भाल से साथ कंजूस अपने धन को रखता है।

आज ज्यों ही डाक का पुलन्दा खुला, राजीव की नजरें उधर लग गईं। उप-अधीक्षक ने सारी डाक को ध्यान से देखा। सरकारी पत्र एक ओर कर दिए।

राजीव !"

या…क्या कहा ? मेरा…"

हां-हां तुम्हारा पत्र है। तुम कब से इन्तज़ार कर रहे थे। यह लो।"

पर…पर…यह तो…।" राजीव झिझका।

"अरे ले लो। तुम्हारी पत्नी का ही तो पत्र है। मैं इसे सैंसर नहीं
ता।"

पत्र लेकर राजीव ने देखा। रेखा का ही था। पत्र जेब में डाल लिय
राजीव रेखा के पत्र सबके सामने नहीं पढ़ता था। एक तो पत्र खूब लम्बा
होना था, प्यार के नशे में मदहोश रेखा क्या कुछ लिख देती थी और फिर
उसकी भावुक आंखें पत्र पढ़ते ही बरस पड़ती थीं। इसलिए वह रेखा का
पत्र रात को अपनी बैरक में ही पढ़ता था।

जेब में पत्र रखकर राजीव की बेचैनी और भी बढ़ गई। दिन बहुत लम्बा
हो गया। घण्टे बहुत देर से बज रहे थे। शाम होती ही नहीं थी। उसे
लगा समय की गति भी धीमी पड़ गई है। रात तो बहुत देर से हुई।
बिस्तर पर बैठकर उसने पत्र पढ़ा। सुन्नो की बीमारी के कारण ही रेखा
उस दिन उससे मिलने न आ सकी थी। सुन्नो अब भी बीमार थी। पत्र छोटा-
सा जल्दी में लिखा गया लगता था।

राजीव ने दूसरी प्रातः ही बहुत लम्बा पत्र लिखा। रेखा को साहस व
धैर्य की प्रेरणा दी। किसी अच्छे डाक्टर से उसका इलाज करवाने के लिए
ा। यह भी आग्रह किया कि उसे हर सप्ताह घर की कुशलता का
ाचार भेजे। इस बार भी राजीव के पत्र का उत्तर बड़ी देर से आया।
र पत्र आते-जाते रहे। सुन्नो भी ठीक होती गई। पर अब रेखा के प
ं राजीव को कुछ अभाव-सा खटकने लगा था। पहले की तरह
विह्वलता, जुदाई की तड़प, प्यार की सुलगती-सी चिंगारियां अब रे
पत्रों में नहीं मिलतीं। अब उसका पत्र एक रस्म की तरह होता
अब वह मिलने आने की तीव्रता भी न दिखाती थी। पहले रेखा ती
पृष्ठों का लम्बा पत्र लिखा करती थी। फिर पत्र एक-दो पृष्ठों का अ
अब कई बार अन्तर्देशीय पत्र ही आ जाता था। इस व्यवहार पर र
कई बार विस्मय भी होता। पर यह सोच कि परिवार की व्यस

कारण ही ऐसा हुआ होगा, वह मन को सन्तोष दे लेता।

४

उधर दीवाली के दिन राजीव रेखा के न आने के कारण उद्विग्न था, इधर रेखा नन्ही मुन्नो को लेकर हस्पताल के जनरल वार्ड में रात भर जागती रही। दिवाली से पहले शाम को मुन्नो खेलती-खेलती गिर गई थी। सिर से खून बहने लगा, रेखा दौड़ी उसके सिर से बहते खून को देखकर उसके होश उड़ गए। मकान बदलकर रेखा कुछ दिन पहले यहां आई थी। पास-पड़ोस में उसका कोई भी परिचय न था। किससे कहे? कहां पर जाए? डाक्टर कहां पर है? उसे कुछ भी मालूम नहीं था। मुन्नो को गोद में लिए अपने मकान के बाहर वह सिसक रही थी, उसके कपड़े खून से लाल हो गए थे। मुन्नो पहले चिल्लाती रही, पर अब बेहोश हो चुकी थी।

सामने के मकान से एक बुढ़िया की आवाज आई, "नीरज! सामने के मकान की नई किरायेदारिन बरामदे में बैठकर रो रही है। देखो तो क्या बात है!"

कुछ ही देर में नीरज सामने आ गया। उसने ज्यों ही मुन्नो के घाव को देखा, वह दौड़कर बाहर चला गया। एक रिक्शा लाया, रेखा व मुन्नो को रिक्शा पर बैठाकर हस्पताल ले गया। मुन्नो को हस्पताल में दाखिल कर दिया गया। दिवाली के दूसरे दिन उसे होश आई।

नीरज ने मुन्नो की बहुत सेवा की। जो दवाई हस्पताल से न मिलती, वह बाजार से खरीदकर ले जाता। उसका डाक्टरों से भी परिचय था, इसलिए देखभाल भी अच्छी होने लगी। कभी-कभी रेखा अपने मकान की देखभाल करने जाती तो नीरज मुन्नो के पास बैठा रहता। मुन्नो उसे प्यार करने लगी थी। मुसीबत के समय नीरज ने रेखा की जो सेवा-सहायता की, उससे परिचय गहरा होने लगा।

रेखा मुन्नो को लेकर घर आ गई। मुन्नो कुछ ठीक हो गई थी। रेखा नीरज के घर आने-जाने लगी। उसकी बूढ़ी मां के अलावा घर में और कोई

नहीं था। एक नौकर तथा एक नौकरानी और थे। नीरज ने नौकर को आदेश दिया था कि वह रेखा के लिए बाजार से सामान लाने का सारा काम कर दिया करे। नीरज की नौकरानी ही रेखा के घर में आकर कामकाज कर जाती थी।

"क्यों रेखा जी! इतनी सुहानी शाम को इतनी उदास क्यों बैठी हैं?" नीरज ने पास आकर कहा।

"यूं ही, कोई खास बात नहीं है।" रेखा ने अपने हाथ में पकड़े हुए राजीव के पत्र को समेटते हुए कहा, "आइए, अन्दर बैठिए।" रेखा ने शिष्टाचार निभाने के लिए नीरज को कहा। नीरज अन्दर आकर कुर्सी पर बैठ गया।

"रेखा जी! यूं ही कोई बात नहीं है कहकर आपने फिर मुझे टाल दिया। आप शायद मुझे इस योग्य भी नहीं समझतीं कि मैं आपके बारे में कुछ जान सकूं और आपका दुख पूछ सकूं। कितने दिन हो गए आप अपने बारे में कुछ भी नहीं बतातीं। खैर छोड़ें, मैंने तो निश्चय किया था, इस बारे में आपसे कुछ पुछूंगा ही नहीं। ऐसे प्रश्नों से आपको कुछ असुविधा होती है, मैं आपको किसी असुविधा में डालना नहीं चाहता। आप हमसे कोई बात न करें, पर हमारी सुन्नो तो हमसे खूब बातें करती है।" यह कहते ही नीरज ने सुन्नो को गोद में उठा लिया और अपने घर की तरफ चल पड़ा।

"ठहरिए, आपको दिवाली की मिठाई तो खिलाई ही नहीं। मिठाई का डब्बा उठाकर रेखा ले आई। डब्बा खोलकर नीरज के आगे रख दिया। नीरज ने मिठाई की एक टुकड़ी हाथ से उठाई और एक नज़र रेखा के चेहरे पर घुमा दी। एक मिठाई का टुकड़ा गोदी में बैठी सुन्नो को भी दे दिया। जब रेखा कुछ और समीप आई तो नीरज ने एक बार फिर गहरी नज़र से रेखा को देखा। नीरज सुन्नो को लेकर अपने घर चला गया।

पड़ोसी का साधारण-सा परिचय अब थोड़ी आत्मीयता में बदलने लगा था। रेखा व नीरज का मिलना-जुलना बढ़ने लगा। कभी सुन्नो को अपने घर ले जाने के बहाने कभी उसे छोड़ने आने के बहाने, कभी कोई पत्रिका आदि देने के बहाने मेल-मिलाप लगातार बढ़ता गया। रेखा भी नीरज के घर आने-जाने लगी। बूढ़ी मां रसोई में काम करती रहती, नौकरानी सुन्नो को

'फिर भी कुछ प्रकाश तो हो ही गया है। अन्धकार कितना भी क्यों न हो और प्रकाश की कितनी भी छोटी किरण क्यों न हो, कुछ अन्धेरा तो दूर किया ही जा सकता है। प्रकृति का यह अन्धेरा, छोटी-सी मोमबत्ती से कुछ समय तक दूर हो सकता है, पर आपके जीवन में न जाने कौन-सी अमावस्या कब से छाई पड़ी है! खैर, मुझे क्षमा करें। मैं जब आपके पास बैठा नहीं होता तो निश्चय करता हूं कि इस सम्बन्ध में आपसे कुछ भी नहीं पूछूंगा, परन्तु आपके सामने आकर पता नहीं कौन मेरे अन्दर में बड़ी तीव्रता से यह जानना चाहता है कि आप कौन हैं और क्यों इस प्रकार···घर छोड़ आई··· अच्छा मुझे आज्ञा दीजिए।" कहते हुए नीरज उठ खड़ा हुआ।

"अभी ठहरिए, बाहर वर्षा हो रही है, कुछ देर के बाद चले जाएं।" रेखा ने नीरज को रोकते हुए कहा।

कुर्सी पर करवट बदलते हुए नीरज ने कहा, "आप मेरे सामने बैठी रहेंगी तो फिर मैं कुछ पूछने की गुस्ताखी कर बैठूंगा, इसलिए आप रसोई में चली जाएं।"

"क्या मतलब आपका ?" रेखा ने विस्मय से पूछा।

"मतलब कुछ नहीं, वर्षा है, कुछ ठंड भी है। इस स्थिति में यदि आप रसोई में चली गईं तो निस्संदेह ही आप चाय बनाकर ले आएंगी।" नीरज के यह कहने पर दोनों खिलखिला पड़े। रेखा रसोई में चली गई। सुन्नो नीरज की गोद में कहानी सुनने लगी। वर्षा जोर से होने लगी थी। नीरज का नौकर बुलाने आया तो उसने मां को कहला भेजा कि वह देर से आएगा, मां प्रतीक्षा न करे।" सुन्नो कहानी सुनते-सुनते नीरज की गोद में सो गई।

स्टोव जलाकर रेखा ने चाय का पानी रख दिया। वह विचारों में उलझ गई, 'वह कौन है···क्यों इस प्रकार रह रही है···यह रहस्य कब तक दुनिया से छिपा रखेगी। फिर बार-बार मकान भी कैसे बदलती रहेगी; इतना अच्छा पड़ोस छोड़कर कहीं और जाना भी नहीं चाहिए।' तभी उसे दिवाली के दिन याद आ गए। वह सोचने लगी, यदि नीरज समय पर सहायता के लिए न आता तो बेहोश पड़ी सुन्नो का पता नहीं क्या होता! सुन्नो की सुरक्षा के के लिए नीरज की कृतज्ञता से उसकी आंखें भर उठीं। तभी एक प्रश्न-चिन्ह उसकी आंखों में उभर आया, वह नीरज और उसकी मां से कब तक अपना

रहस्य छिपाती रहेगी, ये इतने भले हैं कि सच्ची बात उन्हें बता दे तो…' यह सोचते ही उसका चेहरा लज्जा से लाल हो गया।

अब तक चाय का पानी ऊबल चुका था। स्टोव की गूं-गूं की आवाज़ में पतीली के पानी की उठनेवाली भाप रेखा के चेहरे के पास से ऐसे ही गुजर रही थी, जैसे हिमालय की सुरम्य, धवल चोटी को छूकर बादल गुजर जाते हैं।

उसे राजीव की याद आ गई। जेल जाने से पहले राजीव ने रेखा के कान में कहा था, 'रेखा, यह रहस्य कभी किसीको मत बताना, नया मकान बदल लेना। इस सम्बन्ध में कभी किसीको कुछ पता नहीं चलना चाहिए, यदि रहस्य खुल गया तो सारा धन भी जब्त हो जाएगा और मेरे साथ तुम्हारे विरुद्ध भी कानूनी कार्रवाई की जाएगी। यह मेरा तुम्हारा राज़ हम दोनों से बाहर न निकले।' रेखा यह सब याद करते-करते विचारों में खो गई, उसे याद आया कि एक बार फिर वह राजीव से मिलने जेल गई थी तो राजीव ने उसे कहा था, 'रेखा, जो भी हो गया है वह हो गया है, मैंने यह सब तुम्हारे लिए किया, तुम्हारे सुख के लिए मैंने इतनी आपत्तियां झेलीं। पहले तो मैं सुखी था, संतुष्ट था, अभाव नाम के किसी भाव से मैं परिचित ही न था, मुझे तो अभाव शब्द का अर्थ भी तुमने ही समझाया था। खैर, तुम्हारे लिए मैं सब कुछ कर सकता हूं, इसलिए मैंने यह भी कर दिया, पर रेखा तुम मेरे प्यार की अमानत सम्भालकर रखना।' रेखा को याद आया कि ये शब्द कहते-कहते राजीव बिलखकर रो उठा था। तब सिपाही ने उसकी हथकड़ियों की जंजीर खींचते हुए उसे अन्दर चलने को कह दिया था। रेखा घायल नज़रों से एकटक तब तक देखती रही थी, जब तक कि वह उसकी आंखों से ओझल नहीं हो गया था।

रेखा की आंखों से बहता हुआ पानी उसे बहुत दूर ले गया था। राजीव का प्यार और प्यार के लिए उसका बलिदान उसके दिल में एक हूक पैदा कर रहा था और नीरज के साथ उसका बढ़ता हुआ परिचय एक टीस की तरह उसके दिल में तूफान पैदा कर रहा था।

"रेखा जी, आप चाय बना रही हैं या मैं कुछ पूछ न लूं इस डर से स्टोव जलाए जा रही हैं?" नीरज ने पीछे से आकर कहा। रेखा चौंक पड़ी। उसने

सम्भलने की कोशिश की।

"अच्छा छोड़ें चाय, यह सुन्नो तो मेरी गोद में ही सो गई, इसे तो बिस्तर सुला दीजिए।" रेखा ने नीरज की गोद से सुन्नो को लिया। नीरज ने ...ा रेखा की आंखें लाल थी, खोई-खोई-सी थी किसी दूर के सपने में। नीरज अन्दर स्टोव की ओर गया। वह चिल्ला-सा उठा, "अरे, यह पतीली ...या खाली ही रखी है? देखो जलकर आग की तरह लाल हो गई है।" रेखा सुन्नो को सुलाने अन्दर चली गई। नीरज ने स्टोव बुझा दिया। जब रेखा बाहर आई, तो नीरज ने हाथ जोड़ते हुए नमस्ते की और चलने की आज्ञा मांगी। रेखा ने अनमने मन से रुकने को कहा, लेकिन वह रुका नहीं। नीरज भी विचारों में डूबा बाहर चला गया। रेखा सारी रात सो न सकी, करवटें बदलती रही। पूरे सात साल का लम्बा रास्ता, सुनसान अकेला जीवन उसकी आंखों के सामने घूमता रहा। उसके पास अपना कहने को कोई भी तो नहीं है, जिससे वह दिल की दो बातें कर ले। राजीव के माता-पिता वृद्धावस्था में मृत्यु की प्रतीक्षा कर रहे थे। रेखा का एकमात्र भाई सेना में सर्विस करता था, वह वर्ष में एक बार ही घर आता और तभी अपनी बहन के हाल पूछने कुछ दिन के लिए उसके पास आ जाता। अपने घर मे रेखा की मां और उसकी भाभी हैं। भाभी से उसकी बनती नहीं है, व दो-चार दिन से अधिक वहां ठहर नहीं सकती। वह एकांत में दिल में दब राज़ का यह भार ढोती हुई व्याकुल-सी हो उठती। कई बार मकान दीवारों को देखते-देखते उन्हींसे बोलने लग पड़ती, रसोई में खाना ब समय बोलती रहती। कुर्सी पर बैठी गोद में सुन्नो को लेकर उससे ही करने की कोशिश करती रहती।

'इतने लम्बे वीरान रास्ते की यह खामोशी आखिर कैसे कटेगी कुछ तो सोचना पड़ेगा'—अपने बरामदे में टहलती-टहलती रेखा स्व बोल पड़ी। 'नीरज जैसे सुहृदय व्यक्ति को यदि अपने बारे कुछ ब जाए तो हर्ज भी क्या है! मुन्नो के घायल होने पर उसने कितनी की!' उसे कल रात की घटना याद आई तो बहुत पश्चाताप हु नीरज को कितनी देर बिठाए रखा, चाय के लिए रसोई में आई, विचारों में ही खोई रही।

दूसरे दिन सायंकाल विदा ले रही थी। रात की अंधेरी चादर धीरे-धीरे बिछ रही थी। नीरज का नौकर बाजार का सामान लेकर रेखा के घर आया। रेखा ने उसे नीरज के बारे में पूछा तो उसने बताया कि वह अभी बाजार से ही नहीं आए हैं। रेखा ने नौकर को कहा कि जब वह घर आएं तो उन्हें बता दें कि मैं पूछ रही थी। नौकर आज हैरान था। कितने ही दिन बीत गए पर रेखा ने नीरज के बारे में कभी कुछ न पूछा था, ना ही कभी उसे अपने घर बुलाया था। जब नीरज घर आया, तो नौकर ने आकर रेखा को बता दिया। आज यह पहला मौका था कि रेखा ने स्वयं नीरज के सम्बन्ध में कुछ उत्सुकता दिखाई थी।

"अंकल जी, आपको मेरी मम्मी बुला रही है।" मुन्नी ने आकर नीरज को रेखा का संदेश दिया। वह विस्मय व उल्लास से रोमांचित हो उठा। मुन्नी के साथ रेखा के घर पहुंचा। आज रेखा ने एक मधुर मुस्कान से उसका स्वागत किया।

"बैठिए," वह मिठाई की प्लेट रखते हुए बोली, "कल [illegible] मुझे पता नहीं क्या हो गया था। मैंने आपके साथ ठीक व्यवहार नहीं किया। चाय के लिए बिठाया भी और आपको चाय पिलाए बिना भेज दिया। इस सबके लिए मुझे क्षमा कर दें।"

"एक शर्त पर क्षमा कर सकता हूं।"

"हां, हां, अवश्य बताइए।"

"यदि आज भी चाय का एक कप मिल जाए तो।" नीरज की हंसी में रेखा भी शामिल हो गई। रेखा चाय बनाकर ले आई। [illegible] होंठों से लगाते हुए नीरज बोला, "रेखा जी, आखिर आप [illegible] भी मुझे क्यों नहीं देतीं! क्या आपको मेरे साथ [illegible] नहीं है कि मैं आपके बारे में इतना कम जानता हूं [illegible]

"नीरज जी, अब आपको यह कहने की [illegible] निश्चय कर लिया है कि मैं आपको अपना [illegible]" [illegible] और चाय नीरज के कप में डालते हुए रेखा ने [illegible]

"यह तो मेरा सौभाग्य होगा।" कहकर नीरज कुछ सम्भलकर कुर्सी पर बैठ गया।

रात अंधेरी हो चुकी थी। सूरज की किरणों के पदचिह्न भी बुझ चुके थे। बिजली की टिमटिमाती बत्तियां यह बताने का प्रयत्न कर रही थीं कि अंधकार प्रकाश को जीत नहीं सकता।

रेखा ने अपना परिचय दिया, पर पूरा नहीं। उसने कहा कि उसका पति राजीव गबन के झूठे केस में पकड़ा गया है। सारा धन सुनीलसेन उड़ाकर चला गया। यह सारी कहानी सुनकर नीरज को विस्मय हुआ और उसने कहा कि इसमें छिपाने की क्या बात थी। नीरज बोला, "इतनी-सी बात को आप इतने दिन रहस्य क्यों बनाए रहीं? यदि ऐसा ही है, तो आपका या राजीव का कोई दोष नहीं!"

"दोष हो या नहीं, परन्तु कानून की नजरों में तो वह दोषी सिद्ध हुए और उन्हें दंड मिल गया। मैं एक कैदी की पत्नी हूं। आपने मेरी जो सहायता की और सुन्नो के जीवन की रक्षा की, मैं उसका बदला कभी नहीं चुका सकूंगी, आप सचमुच मेरे लिए भगवान की तरह हैं। यहां मेरा और है ही कौन! आपसे इतनी प्रार्थना है कि यह रहस्य आपसे बाहर किसी और तक न खुले। मैं आपका यह एहसान जीवन भर नहीं भूल सकूंगी।" रेखा के नेत्र सजल हो गए।

"आप निश्चित रहें। किसीको इस बात का पता नहीं लगेगा। आज से आप यह समझें कि इस विपत्ति में आप अकेली नहीं हैं। मैं हर कदम पर आपके साथ रहूंगा।" नीरज ने सांत्वना दी।

"आप कल्पना नहीं कर सकते। इन शब्दों से मेरा हृदय उल्लास से कितना खिल उठा है। आज के विज्ञान ने चांद को छू लिया, आसमान की ऊंचाई को नाप लिया और समुद्र की गहराईयों की थाह भी ले ली है, पर वह ऐसे किसी यन्त्र का आविष्कार नहीं कर सका, जो विपत्ति के समय सहानुभूति की तरह की राहत दे सके। मैं सचमुच बहुत कृतज्ञ हूं।" आंखें पोंछती हुई रेखा रसोई की ओर चली गई और कुछ देर बाद चाय की केतली मेज़ पर रखते हुए बोली, "चाय दुबारा पिला रही हूं, जानते हैं किसलिए?"

"नहीं। आप बताएं।"

"कल की गलती के सुधार के लिए।"

कुछ देर के बाद नीरज ने उठना चाहा पर रेखा ने उसे रोक लिया। इधर-उधर की बातें चलते काफी समय हो गया था, चाय के कप के साथ-साथ बातों का ऐसा तांता चला कि कब रात के ग्यारह बज गए, कुछ पता ही नहीं चला। अब दोनों ने विदा ली।

इसके बाद कभी-कभी रेखा नीरज के साथ सामान लेने बाजार भी जाने लगी। कभी-कभी दोनों कहीं घूमने भी चले जाते। कई बार नीरज रेखा के घर पर खाना खा लेता और कभी रेखा को अपने घर बुला लेता। धीरे-धीरे यह परिचय सहानुभूति की सीमाओं को पारकर निकटता व घनिष्ठता में बदलने लगा। नीरज के विश्वास और व्यवहार ने रेखा को बिलकुल जीत लिया था। दोनों काफी निकट आ गए थे। पास-पड़ोस की नजरें भी उठने लगी थीं। कुछ चर्चा भी होने लग पड़ी थी। नीरज की मां भी उन दोनों के इस निकटता से आशंकित हो रही थी।

रेखा इस सबसे बेखबर भावनाओं के मार्ग पर बढ़ी जा रही थी। अब एक ही राज था जो उसने नीरज को नहीं बताया था। वह कभी-कभी उसके गले तक आ जाता, तभी उसे राजीव की सीख याद आती। एक दिन नगर के एक पार्क में दोनों घूम रहे थे। नीरज ने रेखा का हाथ पकड़कर कहा, "रेखा, पता नहीं क्यों मैं तुम पर आसक्त हुआ जा रहा हूं।"

"मेरे अकेले जीवन के सूनेपन को पूरा करके सचमुच तुमने मुझ पर बड़ा एहसान किया है।"

"इसमें एहसान की कोई बात नहीं, यह तो केवल हृदय की भावनाओं का सवाल है।"

"नीरज, कितने ही दिनों से तुम्हें एक बात बतानी चाह रही थी।"

"वाह ! रेखा, अब ऐसी भी क्या दूरी है कि तुम अपने दिल की बात मुझे न कह सको।" नीरज ने रेखा के हाथ को कसकर पकड़ते हुए कहा।

"उस दिन मैंने तुम्हें सारी कहानी बताई थी, परन्तु कुछ कड़ियां छूट गई थीं, आओ उस तरफ बैठें।" रेखा ने पास के हरे घास पर नीरज को बिठाया और उसे सब कुछ बता दिया। नीरज इस बात को पहले ही भांप गया था

कि राजीव द्वारा गवन किया धन रेखा के पास है, उसका संशय अब सत्य में बदल गया।

नीरज ने रेखा के पास इतना अधिक धन होने की बात को प्रत्यक्ष रूप से कोई महत्त्व नहीं दिया। कुछ देर इधर-उधर की बातें कर वह बोला, "रेखा, तुमने ऐश्वर्य भरा जीवन व्यतीत करने के लिए अपने पति को गवन करने के लिए विवश किया, क्या आज तुम्हें यह महसूस होता है कि तुमने गलती की?"

"महसूस ही नहीं होता, मैं तो पश्चाताप में कई बार डूब-सी जाती हूं। पर नीरज, उस स्थिति में और करते भी क्या? गरीबी एक ऐसी बला होती है, जो मनुष्य से कुछ भी करवा देती है। मैंने उन दिनों बहुत सोचा कि घर की आय बढ़ाने के लिए कोई और साधन तलाश किया जाए, परन्तु कुछ भी समझ नहीं आया, इसलिए मैंने व राजीव ने यह योजना बनाई थी।"

"रेखा, तुमने बहुत बड़ी गलती की। तुम्हारे पास उससे कहीं अधिक ऐश्वर्य का खज़ाना छिपा हुआ है। काश, उस समय तुम्हें कोई पारखी मिल जाता।"

"क्या मतलब तुम्हारा?" चौंककर रेखा ने पूछा।

"रेखा, तुम्हारी जैसी सुन्दर, आकर्षक, नवयौवना यदि कला के क्षेत्र में निकल जाती तो लाखों रुपये तुम्हारे चरण चूमते, ऐश्वर्य से तुम्हारा घर-बार भर जाता और तुम प्रसिद्धि के चरम शिखर पर पहुंची होती।" कहकर नीरज दूर आकाश की तरफ देखने लग पड़ा। रेखा के लिए यह एक बिलकुल नई बात थी। उसे कभी इस प्रकार किसीने नहीं कहा था। अपनी सुन्दरता व यौवन की प्रशंसा सुन रेखा उल्लास से भर गई। उसे लगा कि उसके पैर धरती से ऊपर उठ गए हैं।

"नीरज, तुम वैसे ही मुझसे आत्मीयता के कारण ऐसा कह रहे हो। ऐसा मुझमें है ही क्या, जो कला के क्षेत्र में कदम रख सकूं!" रेखा ने सकुचाते हुए कहा।

कुछ गम्भीर होकर नीरज बोला, "ऐसी बात नहीं है रेखा! कल मैंने पिक्चर में जब हेमामालिनी को देखा तो मैंने सोचा कि ऐसी कौन-सी बात है, जिसमें तुम उससे कम हो! रेखा, मैं सच कहता हूं कि तुम्हारे शरीर की

बनावट, पतली कमर, चमगादड़ी-सी देह और उस पर यह यौवन के खिले फूल और चेहरे की यह मासूम सुन्दरता•••क्षमा करना, आज मुझसे सब कहा जा रहा है। अन्तर केवल इतना है कि हेमामालिनी को वे परिस्थितियाँ मिल गईं और वह सिनेमा जगत में छा गई। तुम्हें वे परिस्थितियाँ नहीं मिलीं, इसलिए अपने पति को गबन करने पर विवशकर जेल भिजवा दिया और स्वयं चुपचाप नगर के इस कोने में जीवन का भार ढो रही हो।" एक सांस में ही सब कुछ कहकर नीरज रेखा के चेहरे पर अपनी बातों की प्रतिक्रिया देखने लगा।

रेखा को लगा जैसे उसमें सचमुच आज कोई आविष्कार हो रहा है। नीरज पर उसका पूरा भरोसा था, उस पर उसकी श्रद्धा भी थी और स्नेह भी उमड़ रहा था। इतनी प्रशंसा सुनकर रेखा उल्लास से इतनी भर गई कि कुछ बोल न सकी। दोनों उठे और घर की ओर चल पड़े। रेखा ने नीरज के घर से मुन्नी को लिया और अपने घर आ गई।

मुन्नी को बिस्तर पर सुलाकर दरवाजा बन्द करके रेखा सीधी शीशे के पास गई और बार-बार स्वयं को देखने लगी। उसने सोचा, वह भी कितनी मूर्ख है कि अपने अपार सौंदर्य व यौवन को आज तक पहचान ही नहीं पाई! राजीव ने भी इस प्रकार कभी नहीं कहा था। नीरज पारखी लगता है। उसी-ने एक सच्ची बात को पहचाना है। दीवार पर एक तरफ एक कैलेंडर में हेमामालिनी का फोटो टंगा था, रेखा उसे उठाकर लाई। कभी वह उस फोटो को देखती और फिर शीशे में अपने-आपको देखती, उसके चेहरे का अपने चेहरे से मिलान करती, उसकी कमर के पतलेपन से, उसके अधरों की लाली से और उसके यौवन के उभार से अपने शरीर का मुकाबला करती। कितनी ही देर वह शीशे के सामने बैठकर रेखा को हेमामालिनी से अधिक सुन्दर होने के उस तथ्य की थाह लेती रही, जिसकी घोषणा आज नीरज ने की थी। उसे लगा, सचमुच ही उसका सौंदर्य हेमामालिनी से कई गुना अधिक है।

अब रेखा कभी उदास नहीं होती थी। नीरज उसके जीवन में काफी आगे आ गया था। जब कभी राजीव का जेल से पत्र आता, तो वह एक क्षण के लिए सहम-सी जाती। राजीव की याद आते ही नीरज उसके सामने

एक प्रश्न-चिन्ह बन जाता, तब वह बुद्धि के तर्कजाल से अपने दिल की भावनाओं की वकालत करती। वह सोचती कि जीवन के लम्बे छ: वर्ष उसे व्यतीत करने हैं, वह असहाय अकेली आखिर किसीका सहारा तो लेगी ही। नीरज सरीखा इतना हितैषी मिला है, यदि उससे थोड़ा स्नेह कर ले तो हर्ज भी क्या है! इस प्रकार के तर्क से वह अपने मन को संतोष देने लगी। धीरे-धीरे वह थोड़ी अखरन भी समाप्त होने लगी।

५

आज बहुत दिनों के बाद राजीव की 'मुलाकात' आई है। जेल में इस शब्द का विशेष अर्थ था। ज्यों ही राजीव को पता लगा वह खुशी से झूम उठा। उसे बड़े गेट के पास बुला लिया गया। लोहे की सींखचों के इस पार राजीव और उस पार रेखा खड़ी थी। राजीव एकटक रेखा को देखने लगा। वह कुछ बोल न सका। उसे आज रेखा काफी स्वस्थ नज़र आ रही थी, उसके चेहरे पर पहले वाली उदासी भी न थी। जंगले की ओर देखते हुए राजीव बोला, "रेखा, तुम्हें देखकर मैं आज बहुत प्रसन्न हूं। मैंने तुम्हें कितनी बार कहा और लिखा भी कि उदास मत रहा करो। मैं देख रहा हूं कि तुमने मेरी बात मान ली है। इस बार तुम्हारा स्वास्थ्य भी अच्छा है।"

"आपका कहना क्यों न मानती! याद है न, आपने कहा था कि मैं आपकी धरोहर सम्भाल करके रखूं!" धीरे से रेखा ने कहा।

"यदि आज मेरी इस बात को याद रखोगी तो मुझे विश्वास है बाद का जीवन तुम आनन्द से व्यतीत कर सकोगी।"

इधर-उधर की कुछ बातें करने के बाद दोनों फिर चुप हो गए। रेखा ने बात शुरू करने की कोशिश की, परन्तु राजीव चुप रहा। मौन तोड़ते हुए राजीव फिर बोला, "रेखा यह भी कितना अन्याय है कि महीनों के बाद भी पति-पत्नी कुछ क्षण के लिए ही आपस में मिलें तो वह मुलाकात भी अकेले में नहीं हो सकती। हमें देखने पास एक जेल कर्मचारी खड़ा है। दो शरीरों की बात-मुलाकात के समय लोहे के यह सींखचें एक दीवार बन जाते हैं और दो दिलों से निकलने वाले शब्दों को नोट करने वाले जेल कर्मचारी की उपस्थिति—

कितना बड़ा आघात पहुँचाती है ! यह सीमा रेखा है, उस तरफ है मुक्त स्वछंद संसार और इस तरफ है कैदियों की कैद बस्ती। खैर, पर तुम यह बताओ कि तुम मुन्नी को साथ लेकर क्यों नहीं आई ?"

"मुन्नी को पड़ोस की एक बुढ़िया के पास छोड़ आई हूं, वह बस के सफर में बड़ी असुविधा अनुभव करती है। मैंने अब अपने मन को समझा लिया है। यह आपत्ति तो काटनी ही पड़ेगी। चिन्ता में चित्त जलाती रहूंगी तो उससे बनेगा तो कुछ नहीं, उल्टा तुम्हारे आने तक मैं ही मिट जाऊंगी।"

"रेखा, तुमने मेरे दिल की बात कही है। मैं तो सदा इस आदर्श को मानता रहा हूं। यह जीवन जीने के लिए है, भार ढोने के लिए नहीं। जो भी परिस्थिति आई हो उसका साहस से मुकाबला करना चाहिए। दुख को स्वीकार कर लेना ही दुख से ऊपर उठने का रास्ता है। जब मनुष्य किसी आपत्ति को साहस से स्वीकार कर लेता है तो वह आपत्ति के लिए ही आपत्ति बन जाता है। दुख तभी तक दुख है जब तक हम उसे दुख समझकर दुखी होते रहते हैं। इसीलिए कई बार झोंपड़ी का मजदूर पूरी नींद सो लेता है और महलों में रहने वाला लखपति नींद की गोलियां खाते-खाते मर जाता है।" राजीव ने दूर शून्य की ओर देख एक ठंडी सांस ली और फिर कहने लगा, "रेखा मैं तो उसी जीवन से पूरी तरह संतुष्ट था, यह सब कुछ तो बस तुम्हारे ही लिए..."

"राजीव, मैं सब समझती हूं और यह सोचकर मैं कई बार प्रायश्चित की आग में झुलस-सी जाती हूं। पर जो हो चुका है, उसे अब वापस नहीं लिया जा सकता। आने वाले कल के इंतजार में हमें आज की यह घड़ियां जैसे-तैसे व्यतीत करनी होंगी।"

मुलाकात का निश्चित समय समाप्त हो रहा था। जेल के कर्मचारी ने बातचीत समाप्त करने का संकेत दिया। रेखा राजीव के लिए कुछ सामान लाई थी, उसे उसने राजीव के हाथ में दिया। सामान लेते समय राजीव का हाथ रेखा के हाथ से लगा तो उसके शरीर में एक झुरझुरी-सी दौड़ गई। बीते जीवन का कितना कुछ एक क्षण में ही उसकी आंखों के सामने घूम गया। वह संभला। रेखा को कुछ कहा। रेखा उसकी ओर देखते-देखते बाहर के मार्ग पर बढ़ गई। राजीव कितनी ही देर उसकी पीठ और उसके पैरों द्वारा चलकर छोड़े हुए रास्ते को अपनी अपलक नजरों से निहारता रहा।

राजीव रेखा की याद में उस दिन कोई काम न कर सका। इधर-उधर जैसे-तैसे समय काटता रहा। सायंकाल हुआ, वन्दी का घंटा वजा, राजीव अपनी वैरक में आ गया। उसकी वैरक के सभी कैदियों को पता लग गया था कि आज राजीव की पत्नी उसे मिलने आई थी। राजीव की पत्नी जव भी उसे मिलने आती थी, तो उस रात उसके साथियों को कुछ न कुछ खाने को मिल जाता था। राजीव ने मिठाई का डव्वा निकाला और सवको मिठाई वांटी।

जेल में दो समय की रूखी रोटी, भुने हुए चने और गुड़, वस यही खाने के लिए मिलता था। इनके अलावा और कुछ कभी देखने को भी नहीं मिलता। मिठाई का एक टुकड़ा किसी कैदी को मुलाकात के कारण यदि मिल जाए तो कैदी को स्वर्ग के किसी पकवान का मजा आ जाता है। प्रतिदिन घर में सव कुछ खाने वाला व्यक्ति यह अनुभव नहीं कर सकता कि एक कैदी के लिए मिठाई के टुकड़े का कितना महत्त्व है। राजीव ने जो मिठाई कैदियों को दी, सवने उसे तभी नहीं खाया, थोड़ी-थोड़ी वचाकर रख ली। वे जानते थे कि उसके वाद न जाने कव उन्हें मिठाई के दर्शन हों।

"राजीव तुमने मिठाई नहीं खाई ?" सोहन ने राजीव को पूछा।

"मेरा दिल मिठाई खाने को नहीं कर रहा। मैं आज खुश भी वहुत हूं और उदास भी वहुत हूं।"

"ऐसी भी क्या वात है ?" सोहन ने पूछा।

"सोहन, आज मेरी पत्नी मुझे मिलने आई थी, आज उसकी याद तड़पा रही है। मैं अपनी पत्नी को वहुत प्यार करता हूं। मैं तो उसके लिए मर भी सकता हूं, यह कैद तो कुछ भी वात नहीं है।" राजीव अनजाने में कह गया।

"तो क्या तुम अपनी पत्नी के कारण ही जेल आए हो ?" सोहन ने उससे पूछा।

"नहीं भी और हां भी। उसकी इच्छाएं पूरी करने के लिए ही मुझे इस अपराध के रास्ते पर वढ़ना पड़ा। उसकी महत्त्वाकांक्षा पूरी करने के लिए ही मैंने अपने आदर्शों की हत्या कर दी। पर सोहन, इन सव वातों का भी मुझे कोई गिला नहीं, कोई शिकवा नहीं है। प्यार के लिए कुछ भी लुटाया जा सकता है। मैं रेखा को प्यार करता हूं, इसलिए मैंने वह सव कुछ कर डाला, जिसकी मैं कभी कल्पना भी नहीं कर सकता था। वहुत-वहुत प्यारी है मेरी

देखा। वह भी मुझे जी जान से प्यार करती है। ओह! भगवान वह लम्हे कब बीतेंगे?" राजीव भावुकता में बह गया था, पर मोहन को उसकी भावुकता में ज़रा भी रस न आया। उसकी हंसी निकल गई। राजीव ने उसे इस प्रकार हंसते देखा तो विस्मय और क्रोध से बोला, "क्या मैं झूठ बोल रहा हूं? तुम बड़े गुस्ताख हो, जो मेरी ईमानदार भावनाओं की हंसी उड़ा रहे हो।"

"नहीं राजीव, मैं तुम्हारी हंसी नहीं उड़ा रहा। मुझे एक याद ने कचोट डाला। इसी प्रकार एक नारी के सौंदर्य और प्यार ने एक बार मेरी भी हंसी उड़ाई थी। हंसी उड़ाने की उस पुरानी बात को याद कर आज मेरी भी हंसी निकल गई।" मोहन ने गहरी सांस छोड़ते हुए कहा।

"क्या मतलब तुम्हारा? मैं समझा नहीं।"

"राजीव, तुम क्या समझोगे, तुम्हें तो अभी हरे-भरे प्यार की मदमाती मस्ती का आस्वादन करना है। खैर, छोड़ो, अब सो जाओ।"

"नहीं, मोहन आज नींद नहीं आ रही। तुम बताओ, क्या कह रहे थे?" राजीव अपने बिस्तर पर कंबल लपेटकर बैठ गया।

"तुम्हारी सुनने की इच्छा ही है तो मुझे भी आज अपने मन का भार हल्का करने की इच्छा हो रही है।" मोहन उठकर बिस्तर पर बैठ गया। कम्बल लपेटा और सुनाने लगा, "राजीव! मैं एक छोटे से गांव में एक साधारण परिवार में बड़े सुख का जीवन व्यतीत करता था। एक सुन्दर लड़की से मेरा विवाह हुआ। वह जितनी सुन्दर थी, उतनी ही सुशील, गुणवान व वफादार भी थी। वह मुझे और मैं उसे जी जान से चाहते थे। हमारा परिवार एक सैनिक परिवार था। मेरे दादा और पिता सेना में रहे थे। परन्तु मेरे पिता मुझे सेना में भेजना नहीं चाहते थे। कोई और नौकरी तलाश करने की कोशिश की, पर मैं असफल रहा। विवाह के बाद एक साल तक नौकरी के लिए भटकता रहा था। सेना में ना तो मेरे पिता भेजना चाहते थे और न ही मेरी पत्नी सावित्री मुझे इतनी दूर भेजना बर्दाश्त कर सकती थी।

"जब कहीं नौकरी न मिली, तो विवश होकर मैं सेना में भर्ती हो गया। मैं जब घर से चला, तो सावित्री सिसक-सिसककर रोई थी। इसलिए पहली बार जब मैं छुट्टी पर घर आया, तो वह रात हमने कैसे बिताई थी, कितना प्यार उमड़ आया था, हमें एक-दूसरे में जीवन का सर्वस्व दीखता था। छुट्टी

का समय व्यतीत कर मैं सेना में चला गया। इस प्रकार एक वर्ष बीत गया। सावित्री मुझे काफी लम्बा पत्र लिखती थी।

"राजीव, यह प्यार बहुत देर नहीं रहा। अभी दो ही वर्ष हुए थे कि उसने मेरे प्यार के साथ धोखा कर दिया। गांव में एक पुरुष के साथ उसके सम्बन्ध हो गए। मैं जब छुट्टी पर आया, तो मां ने मुझे सारी बात बताई। मैंने जब सावित्री से पूछा तो वह रोने लगी और उसने कसमें खाईं। उसके कहने पर एक बार मैंने विश्वास कर लिया। छुट्टी खतम हुई तो मैं फिर सेना में चला गया। अब उसके पत्र में वह पहले जैसी तड़प न होती थी, पत्र आते भी कम थे। पिछली बात याद करके मुझे कभी-कभी संदेह भी होता था। जब मैं दोबारा छुट्टी पर गया, तो वह बात मुझे मां ने फिर बताई। अब तक गांव में भी उसकी चर्चा हो चुकी थी। मैंने एक रात सावित्री को अपने पास बिठाया और कहा, 'सावित्री! मैं तुम सबके लिए घर से हजारों मील दूर कठिन, ऊंची पहाड़ियों पर नौकरी करता हूं। कड़कती सर्दी में १०-१२ हजार फुट की ऊंचाई पर शत्रुओं की गोलियों के आगे छाती ताने खड़ा रहता हूं। वहां जब मैं तुम्हारे प्यार की गर्मी अनुभव करता हूं तो वह खून जमा देने वाली ठंड भी मेरा कुछ बिगाड़ नहीं सकती। परन्तु सावित्री, मैं यहां क्या सुन रहा हूं? क्या यह सच है कि हरनाम के साथ तुम मिलती-जुलती हो?'

"सावित्री फूट-फूटकर रोने लग पड़ी। उसने कहा कि वह आरोप झूठे हैं। मैं असमंजस में पड़ गया। मुझे समझ न आया कि अपनी मां और लोगों की बात पर विश्वास करूं या अपनी पत्नी पर। परन्तु कुछ ही दिनों के बाद मैंने सब कुछ अपनी आंखों से देख लिया। एक शाम मैं घर आ रहा था तो लम्बे रास्ते की बजाये मैं एक पगडंडी से निकलने लगा। वहां मैंने सावित्री को हरनाम के साथ आपत्तिजनक स्थिति में देखा। मेरे शरीर में आग लग गई। एकदम बिजली की तरह शरीर में क्रोध की लीक-सी दौड़ गई। सोचा, अभी दौड़कर जाऊं और दोनों को यमलोक पहुंचा दूं, फिर कुछ सोचकर ठहर गया, उलटे पैरों वापस आ गया।

"मैंने एक योजना बनाई। दो दिन बाद शाम के समय सावित्री को लेकर मैं बाजार गया, उसे इधर-उधर घुमाता रहा। जब रात का अंधेरा बढ़ा तो घर की तरफ लौटा। हमारे घर के रास्ते में एक सुनसान जगह और उसके

साथ ही गांव का श्मशानघाट था। उसके पास पहुंचते ही मैंने सावित्री को धक्का दिया, वह नीचे गिर गई। मैंने उसकी छाती पर चढ़कर पूरे जोर से उसका गला दबा दिया। उसीके दुपट्टे को उसके मुंह में डालकर उसके गले को तब तक दबाया जब तक वह मर नहीं गई।" कहते-कहते सोहन की आंखें लाल हो गईं।

"अरे, सोहन! यह इतना क्रूर कर्म तुम कैसे कर गए? ओह! मुझे तो सुनकर ही डर-सा लग रहा है। क्या एक समर्पिता पत्नी भी ऐसा कर सकती है और तुम्हारी तरह एक शरीफ सूरत व सीरत वाला मनुष्य भी इतना खूंखार बन सकता है! हे प्रभु! यह कैसे लोगों की बस्ती है?" माथे पर हाथ रखकर राजीव उद्विग्न हो उठा। उसका सिर घूमने लग पड़ा, उसकी आंखों के सामने ऐसा घूम गई। दोनों हाथों में सिर रखकर वह चुप हो गया।

सोहन ने मुस्कराते हुए कहा, "राजीव! यह जिंदगी की कठोर सच्चाई है। तुम्हें शायद मालूम नहीं कि इस जेल में हत्या के अपराधी जितने लोग कैदी का जीवन व्यतीत कर रहे हैं, उनमें से ८० प्रतिशत मेरी तरह के हैं। उन्होंने प्यार में धोखा खाने के कारण या काम वासना के कारण हत्याएं की हैं। इस देश में जमीन व धन के लिए बहुत कम हत्याएं होती हैं। राजीव, प्यार और हत्या एक ही सिक्के के दो पहलू हैं। मैंने सावित्री की हत्या इसलिए की कि मैं उसे हद से ज्यादा प्यार करता था।"

"पर सोहन, तुम अपनी ही पत्नी को इस प्रकार कैसे मार पाए, मैं तो यह सोच भी नहीं सकता।" राजीव ने हैरानी से पूछा।

"राजीव, मैं उस समय सोहन तो रहा ही नहीं था, गुस्से से पागल हो गया था। बुद्धि को तो मानो ताला लग गया था। तुम्हारी तरह मैं भी आज यही सोचता हूं कि सोहन ने यह सब कुछ कैसे किया होगा, पर यह सच्चाई है, मैंने यह सब कुछ किया था। मैंने जीवन में कभी कोई हत्या नहीं की थी, परन्तु उस समय, उस विशेष स्थिति के कारण जो उन्माद मुझमें उमड़ा, उसी के कारण मैं यह सब कुछ कर गया।"

"अच्छा, फिर आगे सुनाओ क्या हुआ?" राजीव ने अपनी अलसाई आंखों से सोहन की ओर देखकर कहा।

सोहन फिर बोला, "राजीव, उसके बाद जो हुआ वह एक जासूसी

नावल से अधिक रोमांचकारी है। उस समय मैं गुस्से में पागल था, सावित्री दम तोड़े धरती पर पड़ी थी। सोचने की शक्ति तो मुझमें थी ही नहीं, इसलिए जो सामने देखा कर डाला। श्मशानघाट पर खूब लकड़ियां पड़ी थीं, मैंने उन्हींको इकट्ठा किया, उन पर सावित्री का शव रखा और लकड़ियों में आग लगा दी। वे दिन सर्दियों के थे, आसमान बादलों से घिरा था। आग बड़ी कठिनाई से सुलगी। जब लकड़ियों में आग जलने लग गई तो मैं आश्वस्त होकर सामने खड़ा हो गया। मुझे विश्वास हो गया कि सुबह होते ही मेरे प्यार का पाखंड राख का ढेर हो जाएगा। मैंने हाथ साफ किए और घर चला गया। मैंने मां को बताया कि सावित्री अपनी मौसी के घर चली गई है, क्योंकि कल उसकी मौसी के लड़के का जन्म दिन है। यह कहकर मैं चुपचाप सो गया।

"दूसरे दिन प्रातः मुझे निश्चित कार्यक्रम के अनुसार वापस जाना था। मैं प्रातः उठा, सामान समेटा और चल दिया। उस समय तक गांव में कोई शोर न था, वातावरण में सावित्री की कोई बात न थी। मैं बिल्कुल आश्वस्त था राजीव। पर सावित्री मरी नहीं थी, मुझे जेल भेजने के लिए वह जिन्दा बच गई थी।"

"क्या कह रहे हो सोहन! जलती हुई चिता में से भी कोई जिन्दा जीवित हो सकता है? तुम अपने जीवन की कहानी सुना रहे हो या जासूसी नावल की कहानी कह रहे हो?" राजीव ने हैरान होकर पूछा।

सोहन ने फिर अपनी बात शुरू की, "जब मैंने उसका गला घोंटा तो वह एकदम बेहोश हो गई, सर्दी के कारण उसका शरीर ठंडा पड़ गया। उसकी बेहोशी को मैंने उसकी मौत समझ लिया। मेरे अनपेक्षित व्यवहार से उसके दिल को भी बहुत बड़ा धक्का लगा होगा, और मेरे कठोर प्रहार से भी उसका शरीर अचेत हो गया। मैंने चिता के नीचे खूब लकड़ियां जमा दी थी और आग भी अच्छी तरह सुलगा दी थी। मैं जब चला गया तो आग धीरे-धीरे सुलगती रही और उसकी आंच से सावित्री का शरीर गर्म होने लगा। इस गर्मी से उसकी बेहोशी उड़ गई, परन्तु तब तक उसके कपड़ों में आग लग चुकी थी, वह झटककर हिली, जिससे उसके ऊपर की लकड़ियां गिर गईं और वह एक तरफ गिरी, फिर उठ गई और आधी रात के समय सुलगते

कपड़ों के साथ इधर-उधर घूमने लगी, तभी उसने अपने कपड़े खोल दिए और जो न खुले वे फाड़ डाले। उसका शरीर कहीं-कहीं से झुलस गया। वह नंगी होकर आधी रात के समय ठिठुरती सर्दी में उस श्मशानघाट पर प्यार में बेवफाई की सजा भुगतने लगी। चिता जल रही थी और मुर्दा चिता के बाहर था। अपनी ही चिता के पास बैठकर वह अपने नंगे शरीर को सेंकने लगी। रात के पहर पर पहर बीतने लगे।" कहते-कहते मोहन चुप हो गया।

करवट बदलकर राजीव ने कहा, "मोहन! मैंने कभी सोचा भी नहीं था कि तुम्हारी जिन्दगी की कहानी इस प्रकार की हो सकती है। अब सुनने लगा हूं, तो कहानी अधूरी मत छोड़ो, आगे बताओ।"

"रात का अन्धेरा सावित्री ने उस चिता की गर्मी के सहारे काट लिया, परन्तु अब अन्धेरा जा रहा था और प्रकाश आ रहा था। वह घबराई कि प्रातः होते ही वह नंगे शरीर को लेकर कहां जाएगी। ज्यों ही प्रकाश होने लगा, वह छटपटा कर इधर-उधर देखने लगी। पास में उसे कुछ झाड़ियां दिखाई दीं, उनमें जाकर छिपकर बैठ गई। तभी पास से गांव का नम्बरदार दामोदर अपने खेतों को जाते हुए वहां से गुजरा। सावित्री ने उसे पहचान लिया। जोर से आवाज लगाई। श्मशानघाट की झाड़ियों से इतनी प्रातः एक महिला की आवाज सुनते ही दामोदर चौंक पड़ा। उसने अपने बैल व हल वहीं छोड़े और 'भूत-भूत' कहते हुए दौड़ पड़ा। उसे तो घर पहुंचने के बाद ही होश आई होगी।

"थोड़ी देर बाद उस रास्ते से कुछ और लोग गुजरे। सावित्री ने आवाज लगाई। पहले वे भी डरे, पर फिर सावित्री ने उन्हें सारी बात कह दी। वे उसी गांव के रहने वाले थे। वे पास के किसी घर से गए और कपड़े ले आए। कपड़ों की गांठ बांधकर झाड़ियों में फेंकी तथा कपड़े पहनकर सावित्री बाहर आ गई। उसने रात की सारी कहानी कह दी। उस समय तक मैं काफी दूर निकल गया था। गाड़ी में बैठ चुका था। पुलिस ने मेरा पीछा किया और सेना की अपनी ड्यूटी पर उपस्थित होने से पहले ही मुझे पकड़ लिया गया। रात को सावित्री का गला दबोचते समय मेरी घड़ी वहीं रह गई थी। उस घड़ी के पीछे की तरफ मेरा नाम खुदा हुआ था। वह घड़ी भी मेरे विरुद्ध एक बड़ी गवाही सिद्ध हुई। मुकदमा चला और मुझे फांसी की सजा हुई। हाई-

कोर्ट में अपील की। फांसी पर लटकने से तो वच गया, पर उमर कैद मिल गई। लम्बे ६ वर्ष पूरे कर चुका हूं, पर अभी भी ८-६ वर्ष यहीं काटने होंगे।"

राजीव पत्थर की तरह सुन्न हो गया था। वह कभी सोच भी नहीं सकता था कि उसके सामने बैठा सोहन अपने जीवन में कभी इतना नृशंस भी बन गया होगा। तेज नजरों से सोहन की ओर देखकर उसने कहा, "सोहन, तुम सावित्री को समझा सकते थे, यदि वह न समझती तो उसे तलाक दे सकते थे, अपना दूसरा विवाह कर सकते थे, पर इस प्रकार इतने बड़े घिनौने अपराध करने का तुमने निश्चय कैसे किया ?"

बड़े धैर्य से सोहन बोला, "सोचने का तो यह सवाल ही नहीं था, यदि मैं एक क्षण के लिए भी ठहर जाता और सोचने की कोशिश करता तो मैं यह अपराव कभी न करता। क्रोध के वादलों के अन्धकार ने सोचने-समझने की मेरी सारी शक्ति कुंठित कर दी थी। मानों वहां मैं तो रहा ही नहीं था। 'मैं' लुप्त हो गया था। रह गया था वह भयंकर क्रोध, जो केवल वदले की आग में मुझे जला रहा था। राजीव, अधिकतर हत्याएं इसी क्रोध के पागलपन के उस क्षणिक आवेश के कारण होती हैं। यदि व्यक्ति एक भी क्षण ठहरकर सोच ले, तो वह आवेश उड़ जाता है।"

"सोहन, तुमने इतना वड़ा अपराध किया, फिर भी तुम फांसी से वच गए।"

"फांसी के फंदे से तो वच गया, पर सोचता हूं मैं किसलिए वचा। घुट-घुटकर ज़िन्दगी का ज़हर पीने के लिए! यह शरीर वचा तो क्या वचा! मर तो मैं तभी गया था, जब क्रोध ने मुझ पर और मेरे विवेक पर अपना अधिकार चलाया था। मेरी बूढ़ी मां मेरी फांसी की खबर सुनकर मर गई थी, वह हाईकोर्ट के उस निर्णय का इंतज़ार भी न कर सकी, जिसमें मेरी फांसी की सजा रद्द कर दी गई थी। सावित्री अपने माता-पिता के घर चली गई, मुझे नौकरी से निकाल दिया गया। घर में कुछ पशु थे, उनमें से कुछ मर गए, वाकियों को लोग उड़ाकर ले गए। मैं जेल में आ गया, गांव का मेरा मकान दो वरसातें भी वरदाश्त न कर सका, मकान गिर गया। राजीव, उस घर में जहां कभी बूढ़ी मां की ममता के साए तले मेरा व सावित्री का प्यार झूले झूलता था, वहां अब गिरे हुए मकान का ८ वर्ष पुराना खंडर है। सोचता हूं यह खंडर किसकी दास्तान

गुना रहा है ? मेरे प्यार की, क्रोध या पागलपन की अथवा सावित्री की बेवफाई की ?" अब तक भी सोहन की आंखों से बहता हुआ यादों का गरम पानी उसकी कमीज को भिगोता हुआ कमीज के बटनों पर से बूंद हो गिर रहा था, जैसे किसी पहाड़ी नाले का बर्फ से पिघलकर आया शीतल पानी उजले-धुले श्वेत पत्थरों पर से तैरता हुआ आगे बढ़ता है। सोहन अन्दर से टूट चुका था, उसके भीतर का पुरुष हार गया था, उसकी तमन्नाओं की बगिया सुलग गई थी, दिल के अरमानों की चिता जलकर राख हो गई थी। जीवन का दीया-बत्ती व तेल जला अब मानो स्वयं को ही जला रहा था। वह कितनी ही देर रोता रहा।

उसे सान्त्वना देते हुए राजीव बोला, "सोहन, यह सब तुम्हारे पूर्व जन्मों के कर्मों का फल है। आज तुम जैसे हो, यह सब पिछले जन्म के कर्मों के कारण है। तुम यदि चाहो तो अब भी अपना जीवन ठीक दिशा में प्रवाहित करके अपना आने वाला जीवन सुधार सकते हैं। मानता हूं, तुम्हारा सब कुछ लुट चुका है, पर अभी भी बहुत कुछ बाकी है। जीवन के जो दिन बाकी हैं, उन्हें सुख से जीने की योजना बनाई जा सकती है। हिम्मत और साहस करो, भगवान के राज्य में कोई भी पापी नहीं है। गलती की है, पर उसे सुधारा जा सकता है। जब तक जेल में हो प्रभु का नाम लो और अपने जीवन को सुधारने की कोशिश करो। जेल से बाहर आकर तुम एक नई जिन्दगी शुरू कर सकते हो। तुम्हारी सजा कितनी बची है ?"

"सजा तो ८ या १० वर्ष और काटनी पड़ेगी। परन्तु अब मैं अपने-आपको सुधारकर करूंगा भी क्या ! क्या अपने घर के उस खंडहर की मिट्टी को देख घुट-घुटकर मरने के लिए ? अब मेरी कोई इच्छा नहीं, कोई अरमान बाकी नहीं। जिन्दा रहने का कोई बहाना नहीं, कोई सहारा नहीं, अब तो इसी जगह, इन्हीं दीवारों के भीतर, इन्हीं चोरों-हत्यारों की बस्ती में अपना सारा जीवन व्यतीत करूंगा।" सोहन ने आंसू बहाते हुए सब कुछ कह डाला।

"पर सोहन, जब तुम्हारी सजा समाप्त हो जाएगी, तब तो तुम्हें बाहर जाना ही पड़ेगा !" राजीव ने उससे पूछा।

"जाऊंगा, पर फिर से यहीं आने के लिए। मैं उस सावित्री और हरनाम की हत्या करूंगा—उनका खून पीऊंगा…हां उनका, जिनके अनुचित सम्बन्धों

ने मेरी बसी हुई छोटी-सी गृहस्थी की अधखिली कली को मसल डाला था। अब मेरी जिन्दगी का एक ही मिशन है और मैंने पूरा प्रबन्ध कर लिया है। इसी जेल में एक बड़ा उस्ताद डाकू है, उसका नाम है मकड़ सिंह, वह और मैं लगभग एक ही समय रिहा होंगे। उससे मेरी बात तय हो चुकी है। हम दोनों हरनाम के घर डाका डालेंगे। जो धन-सम्पत्ति मिलेगी, वह मकड़ सिंह लेगा और उसके बदले में वह हरनाम व सावित्री की हत्या करेगा। मैंने यह भी तय कर लिया है कि उन दोनों की हत्या के बाद वहां ही मैं भी आत्महत्या कर लूंगा। यह बकाया कैद मैं उसी एक कार्य को पूरा करने के लिए काटूंगा" ऐसा लगा सावित्री का गला दबोचते समय का क्रोध फिर से सोहन की आंखों में उभर आया था। उसकी लाल आंखें चिंगारियां छोड़ रही थीं। पूरे ८ वर्ष बीत जाने के बाद भी यह सारी घटना उसे ज्यों की त्यों याद थी। बदले की भावना पलकर और भी दृढ़ हो गई थी।

राजीव ने उसे समझाते हुए कहा, "सोहन, तुम्हींने कहा है कि क्रोध के पागलपन के कारण ही तुमने सावित्री का गला दबाया था। जिस क्रोध के कारण तुम्हें यहां आना पड़ा, क्या फिर उसीके रास्ते पर जाओगे? उस समय भी तुम्हारे सर पर क्रोध का भूत सवार था। यदि सावित्री दुश्चरित्र हो गई थी तो तुम उसे छोड़ देते, नया विवाह कर देते, तुम्हारी सेना की नौकरी भी बनी रहती और तुम्हारी गृहस्थी भी चलती रहती। परन्तु तब तुमने कुछ सोचा ही नहीं। एक क्षण के उस पागलपन ने ऐसा बारूद का काम किया कि तुम्हारा सब कुछ उड़ा दिया और तुम्हें जीवन के लम्बे २० वर्ष जेल में बिताने पर विवश किया। इतना सब कुछ होने के बाद भी तुम वही पागलपन दोहराने की बात सोच रहे हो! सोहन, सावित्री और हरनाम को भूल जाओ। समझ लो तुम्हारे लिए सावित्री मर गई, समझ लो तुम भी मर गए, जेल से निकलने पर नई जिन्दगी शुरू करना।"

आज वर्षों बाद आत्मीयता व सहानुभूति के साथ सोहन को यह नई सलाह मिली थी। इतने दिनों वह जेल के चोर-डाकुओं के साथ हरनाम व सावित्री की हत्या करके बदला लेने की योजना ही बनाता रहा था। राजीव की बात उसे अजीब-सी लगी। कई बार उसे वे बातें बिलकुल बेकार-सी

लगी। परन्तु बाद में उसे लगा कि राजीव के उस व्यवहार और उस सलाह से उसके अन्दर का सोया हुआ इन्सान जाग रहा है।

बड़े गेट से जेल की सीटी की आवाज आई, "चल भाई"…"सब अच्छा'—की वही हमेशा कानों को छेदने वाली गूंज गूंजी। रात के समय इस प्रकार की आवाज जेल में गूंजती ही रहती थी। जेल के चारों ओर पहरेदार वार्डर खड़े रहते। बड़े गेट से सीटी की आवाज आती और उसके बाद एक के बाद एक क्रम से सभी पहरेदार 'चल भाई, सब अच्छा' या 'सब ठीक है' की आवाज देते हैं। रात के बारह बज चुके थे, राजीव और सोहन भी सो गए।

आज अमर की रिहाई थी। पिछले दिन कितनी ही देर राजीव अमर को समझाता रहा। अमर ने उसके साथ वायदा किया था, पर साथ ही एक शर्त भी लगाई थी। उसने कहा था कि वह एक बार हरगोविन्द को सजा जरूर चखाएगा। राजीव समझता था कि अमर बाहर जाकर एक बार उसकी जेब काटना चाहता है। परन्तु कल उसने बताया कि वह बाहर जाकर हरगोविन्द की हत्या कर देगा। राजीव के बार-बार समझाने के बाद भी अमर ने कहा था, "बस, यही एक अपराध जीवन में अब करना है, उसके बाद नहीं। उस जालिम हरगोविन्द ने कितने ही कैदियों की हड्डियां तोड़ी हैं और अनेकों का खून चूसा है। वह कैदियों से रिश्वत लेता है। जो कैदी उसे साबुन, बीड़ी या अन्य चीजों के रूप में रिश्वत नहीं देता, उसे वह किसी भी बहाने जेल के आंगन में जानवरों की तरह पिटवाता है। राजीव, मैं तुम्हें मित्र, भाई व गुरु मानता हूं, यदि तुमने इतनी भी आज्ञा मुझे नहीं दी तो मैं तुम्हें दिया हुआ वह वायदा वापस ले लूंगा।" यह कहकर अमर फूट-फूटकर रो पड़ा था।

अमर को पत्रों के साथ बाहर नहीं भेजा गया, वह रिहाई की तैयारी कर रहा था। अपनी बैरक में अपना सामान सम्भालने लगा। कुछ बीड़ियां, कुछ साबुन, कुछ फटे-पुराने कपड़े, एक राम की फोटो, एक धूप की बत्ती, बस यही उसका सामान था। सामान समेटने के बाद बैरक के बाहर एक कोने में अमर बैठ गया। उसके हाथ में रात की रोटी के कुछ टुकड़े थे। रोटी के छोटे-छोटे टुकड़े करके वह नीचे फेंक रहा था, नीचे एक छोटी-सी गिलहरी दुम हिला-हिलाकर उन्हें खा रही थी। रोटी के टुकड़े के साथ ही अमर की आंखों में आंसुओं की झड़ी-सी लग गई थी। न जाने क्या उसकी

आंखों से वहा जा रहा था। उसके आंखों के पानी की कुछ वूंदें गिलहरी के शरीर पर भी पड़ी थी।

"क्यों अमर, यह क्या कर रहे हो, यह गिलहरी, यह रोटी और यह आंसू···" सामने से आकर राजीव ने अमर से पूछा।

अमर ने चौंककर राजीव की ओर देखा। रात के वचे टुकड़े नीचे फेंक खड़ा होते हुए वह वोला, "राजीव, यह गिलहरी प्रतिदिन मुझे यहीं मिलती है। मैं रात की अपनी रोटी में से कुछ वचाकर रखता हूं। यह निश्चित समय पर मेरी प्रतीक्षा करती है, इसी जगह आती है और रोटी के छोटे-छोटे टुकड़े खाती है। आज इसे भी छोड़कर मुझे जाना होगा। मैंने तुम्हें वताया था कि इस दुनिया में मेरा अपना कोई भी नहीं है। तुमने जव तक दोस्ती का हाथ नहीं वढ़ाया था, तव तक यह गिलहरी ही इस इतनी वड़ी दुनिया में मेरी अपनी कहने को थी। इस जेल में मैंने कितने वर्ष विताए हैं और प्रतिदिन यह गिलहरी मुझे मिलने आती थी!" अमर की आंखों में आंसू थे।

"अमर, मैं वहुत हैरान हूं। दिल्ली की सड़क की पटरी पर पैदा होने वाला अमर···जिसे अपने मां-वाप का भी पता नहीं, जो अपराध के गर्भ से पैदा हुआ, जुर्म के पालने में, चोरी की लोरियों में, जिसने होश सम्भाला, जीवन में सात वार जेल की हवा खाई, कितने ही निर्दोष मासूम लोगों की खून-पसीने की कमाई को जिसने अपने करतव से साफ कर दिया, वही अमर आज एक गिलहरी से विछुड़ने पर आंसू वहा रहा है। अमर, तुम्हारी यह मनःस्थिति देख मेरे मन का विश्वास पक्का हो गया है कि हर अपराधी के अन्दर एक छुपा हुआ अच्छा इन्सान रहता है। चोरों में भी भगवान है। फरक इतना है कि उसका भगवान अव्यक्त है, इन्सान सोया है और शैतान खुल खेल रहा है।" अमर चुपचाप राजीव की वात सुन रहा था। गिलहरी अभी भी रोटी के छोटे-छोटे टुकड़े खाती हुई इधर-उधर उछल रही थी।

राजीव ने अमर के कन्धे पर हाथ रखकर कहा, "अमर, चिन्ता मत करो। तुम्हारे जाने के वाद इस गिलहरी को रोज़ रोटी खिलाने का काम मेरा रहा, पर उसे कह दो कि कल से तुम्हारे स्थान पर मेरी नियुक्ति हो रही है।" दोनों हंस पड़े।

राजीव को भी यह वचन दिया है। साहब, राजीव भी एक भला इन्सान है, मुझे तो समझ नहीं आता कि उस जैसा व्यक्ति कैसे अपराध कर सकता है ! वह तो फरिश्ता है, जैसा व्यवहार वह बैरक में कैदियों के साथ करता है, यदि सभी कर्मचारी वैसे ही व्यवहार करें तो इन जेलों से निकलने वाला हर अपराधी इन्सान बन जाए।"

"मुझे बहुत खुशी है कि तुम इतना अच्छा निर्णय कर जेल से निकल रहे हो। तुम्हारे साथ यहां कभी कोई बुरा व्यवहार भी हुआ हो तो उसे भूल जाना।"

"अवश्य भूल जाऊंगा। पर यह नगर छोड़ने के बाद ही।"

"क्या मतलब ?" विस्मय से भाटिया ने पूछा।

"जनाब, यह जेल और यह नगर, इसकी इतनी कड़वी और कठोर यादें हैं कि एकदम भुलाई नहीं जा सकती। इस नगर की सीमा से बाहर निकलकर मैं वह अमर ही नहीं रहूंगा।" अमर ने मन का भाव छिपाने की कोशिश करते हुए कहा।

"पर अमर, तुम आज कहां रहोगे ? अब तो शायद तुम्हें कोई बस मिलेगी !" भाटिया ने अपनी घड़ी देखते हुए कहा।

"यहीं कहीं शहर में रह लूंगा।"

"नहीं-नहीं, ऐसी क्या बात है ! यहां वार्डरों की बैरक में ही मैं तुम्हारे रहने का प्रबन्ध कर देता हूं।"

भाटिया से विदाई लेकर अमर बाहर आया। जेल के उस काले बड़े गेट को उसने कई बार ऊपर से नीचे और दायें से बायें देखा, नज़रें घुमाईं और बाहर चला गया। पास ही वार्डरों की बैरक थी। वहीं रात को उसका सोने का प्रबन्ध किया गया था।

हरगोविन्द जेल में ही क्रूर नहीं था, उसका व्यवहार घर में भी उसी प्रकार का था। उसकी एक पत्नी मर चुकी थी। उसके बाद उसने दूसरा विवाह किया। वह ज़रा-सी बात पर अपनी पत्नी को मारता-पीटता था। दूसरे ही वर्ष तंग आकर वह भाग गई। उसने सम्पत्ति काफी बना ली थी। जेल से मिलने वाला वेतन तो सभी बैंक में जमा करवाता था, उसका गुज़ारा तो कैदियों के सिर पर ही चलता था। बहुत से कैदी अपने घर से कुछ धन मंगवाते थे। वह

धन जेल के हिसाब में रखा रहता। उसमें से प्रतिमास कैदी सिगरेट, साबुन आदि कुछ चीज़ें मंगवा लेते थे। जेल नियमों के अनुसार एक कैदी एक मास में २० रुपये तक का सामान ही मंगवा सकता है। जब यह सामान मंगवाया जाता था तो हरगोविन्द की अच्छी खासी कमाई होती थी। वैसे उसकी रिश्वत का स्तर काफी साधारण था। कुछ कैदी महीने में बीड़ी का एक बंडल देकर ही उसे खुश कर देते थे। कैदियों से होने वाली आय के अतिरिक्त भी उसकी ऊपर की कई प्रकार की आय थी। जेल के लिए खरीदा जाने वाले हज़ारों रुपयों के सामान में भी उसका हिस्सा था। उसने गांव में ज़मीन ले ली थी, एक अच्छा मकान भी बना लिया था। पर यह सब कुछ होने पर भी उसका अपना घर कभी बस न सका। कुछ महीने पहले उसने एक विधवा से शादी की थी, परन्तु वह भी उसके क्रूर व्यवहार से काफी तंग आ चुकी थी।

बैरक के जिस कमरे में अमर को ठहराया गया था, उसके पास ही हरगोविन्द का क्वार्टर भी था। वह उस समय जेल ड्यूटी पर था और उसकी पत्नी घर में थी। अमर उस तरफ गया और उसकी पत्नी से बातें करने लगा। अमर बातचीत में बड़ा होशियार था। बातों-बातों में हरगोविन्द के क्रूर व्यवहार की चर्चा भी हुई। उसकी पत्नी एक गरीब घर की अनपढ़ स्त्री थी। अमर ने उसे फुसलाया और सब्ज़बाग दिखलाए। उसने उसे अपनी अपार सम्पत्ति का झांसा दिया।

रात के समय हरगोविन्द घर रोटी खाने आया, उसके बाद उसकी रात की ड्यूटी थी। पीछे से अमर ने उसकी पत्नी, घर में रखे हुए कुछ जेवर और दो हज़ार रुपया लिया और चम्पत हो गया। दूसरे दिन प्रातः जब हरगोविन्द जेल ड्यूटी से घर वापस आया तो उसने देखा कि दरवाज़ा खुला था और कुछ कपड़े इधर-उधर बिखरे पड़े थे। जिस ट्रंक में उसने गहने रखे थे वह एक तरफ टूटा पड़ा था। थोड़ा-सा सोचने के बाद ही वह समझ गया कि यह सारा प्रपंच अमर का ही है।

अमर रात भर चलता रहा था। सुबह होते-होते वह पास के एक नगर में पहुंच गया। दोनों ने कपड़े बदले और गाड़ी में बैठकर दिल्ली पहुंच गए। वहां भी दो दिन ठहरकर सदा के लिए पुलिस की आंखों से बचने के लिए दोनों

चले गए। अमर ने मज़दूरी करनी शुरू की और छोटी-सी गृहस्थी रख दी।

छ ही दिनों बाद जेल अधीक्षक श्री भाटिया को एक पत्र आया :

आदरणीय श्री भाटिया जी,

आपको दुख होगा कि मैं उस दिन हरगोविन्द की पत्नी तथा उसके गहने व धन उड़ाकर भाग गया था। आज मैं जीवन में पहली बार इस अपराध पर पश्चाताप कर रहा हूं। वह भी इसलिए कि आपने मुझे एक बार प्यार से बुलाया था और राजीव ने मुझे जिन्दगी का एक नय रास्ता दिखाया था।

हरगोविन्द की क्रूरता के कारण मेरा यह पूर्ण निश्चय था कि जेल से छूटने के बाद मैं उसकी हत्या कर दूंगा। वह इन्सानी वेश में दरिंदा है। गरीब और लाचार कैदियों का रक्त चूसकर उसने हज़ारों की जायदाद बनाई है। सब कैदी उसकी क्रूरता से बहुत दुखी हैं। आने से पहले मेरे इस निश्चय को राजीव ने बदला। उसने मुझे कहा था कि मैं उसकी हत्या न करूं। परन्तु मैं उसे कुछ न कुछ सज़ा अवश्य देना चाहता था, इसलिए मैंने उस रात उसकी हत्या नहीं की, अपितु उसकी पत्नी व सम्पत्ति को उड़ाकर ले आया।

मैं अब भारत के बहुत बड़े नगर में एक भले नागरिक की ज़िन्दगी व्यतीत कर रहा हूं। हम दोनों मज़दूरी करते हैं, पसीना बहाते हैं, उससे हम दोनों अपना पेट भरते हैं। चोरी की कमाई के बदले मेहनत की कमाई में कितना आनन्द है, यह पहली बार मुझे अनुभव हुआ है।

मैं एक पटरी पर पैदा हुआ था, मां-बाप को मैंने कभी देखा नहीं होश की आंखें जब खुली थीं तो मैंने अपने-आपको अपराध की दुनि में पाया था। अब मेरे जीवन का कांटा ही बदल गया है। मैं छोटी-सी गृहस्थी बनाकर यहां रह रहा हूं।

मैं आपसे हज़ारों मील दूर एक नगर की औद्योगिक बस्ती रहा हूं। पुलिस के हाथों की पहुंच के बिलकुल बाहर हूं। मुझे कि मैं कभी भी आपको व राजीव को नहीं मिल सकूंगा। हरगोविन्द की चोरी का अपराध मेरे सिर पर सदा रहेगा।

हरगोबिन्द को यह डर है कि यदि राजीव ने मुझे न रोका होता तो मैं उसकी हत्या अवश्य कर देता। उसे भी इन्सान बनने की कोशिश करनी चाहिए, नहीं तो कोई तेज आता हुआ कैदी उसे समाप्त कर देगा।

भाटिया जी, मेरी बैरक के बाहर दायें कोने में हर सुबह एक छोटी-सी गिलहरी आती थी और मैं उसे रोटी के टुकड़े खिलाया करता था। कई बार मैंने रात को स्वयं भूखा रहकर थोड़ी रोटी बचाई ताकि सुबह उस गिलहरी को खिलाई जा सके। आती बार राजीव ने मुझे विश्वास दिलाया था कि वह उस गिलहरी को हर सुबह रोटी खिलाया करेगा। राजीव को मेरी नमस्ते कहें और उसे गिलहरी का ध्यान रखने की याद भी दिलायें।

आपका,
अमर

पत्र पढ़कर भाटिया जी हैरान हुए। उन्होंने राजीव को अपने कमरे में बुलाया और वह पत्र उसे पढ़ने को दिया। पत्र पढ़कर राजीव की आँखें नम हो गईं। वह बोला, "भाटिया जी, मुझे खुशी है कि मैं कम से कम अमर को हत्या के अपराध से रोक सका। यह कितनी खुशी की बात है कि वह अब एक अच्छा नागरिक बन गया है। आप हरगोबिन्द को अवश्य समझाएं कि बहुत से कैदी उससे बहुत दुखी हैं।"

दो दिन बाद राजीव को भी अमर का एक पत्र मिला। लिखा था

मेरे जीवन के प्रकाश,

मैं तुम्हारा धन्यवाद भी करूं तो कैसे! यह मेरे भाग्य की कितनी बड़ी विडम्बना है कि जिस महान आत्मा ने जिन्दगी के ४० वर्ष के बाद मुझे रोशनी दिखाई, जीने का मन्त्र सिखाया, अपराध व पाप की अंधेरी गली से निकाल बाहर किया, उसका मैं कभी धन्यवाद भी नहीं कर सकूंगा।

जैसा कि मैंने तुमसे कहा था हरगोबिन्द से सब गरीब कैदियों की आहों का बदला लेकर मैं यहां पहुंच गया हूं। उसकी जेब से निकाले दो हजार रुपये बड़े काम आए। उसकी यह पत्नी भी बड़ी भली निकली।

हम दोनों ने विधिवत् विवाह कर लिया है और एक गृहस्थी बनाकर सुख से रह रहे हैं।

मैं कहां हूं यह भी बता नहीं सकता, क्योंकि हरगोविन्द के घर किया गया अपराध मेरे सिर पर खड़ा है। वैसे मैं सोचता हूं तुम्हारी पूरी बात मान लेता और यह आखिरी चोरी भी न करता तो अधिक अच्छा रहता। परन्तु राजीव, जैसे तुम सदा कहा करते थे कि वही होता है, जो प्रभु को स्वीकार होता है, शायद यह भी उसीको स्वीकार था। क्योंकि उस आखिरी चोरी से मुझे अपनी जिन्दगी बसाने व चलाने में बड़ी सहायता मिली। मैं अब तुम्हारी इच्छाओं के अनुसार एक भला आदमी बन गया हूं। काश! तुम मेरी इस गृहस्थी को देख पाते।

तुम जब रिहा हो जाओगे तो मैं किसी न किसी तरीके से तुम्हें अवश्य मिलूंगा। मैं हर रोज प्रभू से यही प्रार्थना करता हूं कि तुम्हारी अपील स्वीकार हो जाए और तुम अतिशीघ्र अपनी रेखा व सुन्नो के पास पहुंच जाओ।

राजीव, मैं तुम्हारे ऋण को कभी भी चुका नहीं सकूंगा। वह भी कोई जिन्दगी थी, जिसमें प्रति क्षण किसीकी जेब काटनी और किसी-को छुरा घोंपना होता था! ना कोई घर था, न गृहस्थी! जीवन में सुख-दुख और धूप-छांव का कोई साथी न था। गन्दी बस्तियों में अनैतिक व्यभिचारी, चोरों-डाकुओं के साथ बिताए जीवन के ४० वर्ष अब याद आते हैं तो सोचता हूं, वह पूर्व जन्मों के किन्हीं पापों के कारण था।

अब लगता है मैं एक स्वर्ग में रहता हूं। मेरी छोटी-सी गृहस्थी है, मुझे हर शाम अपनी पत्नी की प्रतीक्षा भरी नजरों का प्यार मिलता है। मैं एक मिल में मजदूरी करता हूं, प्रतिदिन पसीना बहाता हूं। श्रम का एक नया अर्थ मुझे समझ आया है। पसीना तो पहले भी बहता था, किसीकी जेब काटकर दौड़ने में, लड़ाई मुक्केबाजी में, छुरेबाजी—इन सब में पसीना तो गिरता ही था, पर अब जो पसीने के कण बहाता हूं, वह कितने पवित्र हैं, सार्थक हैं, यह अनुभूति अभी ही हुई है।

तुमने एक क्रूर पशु को इन्सान बना दिया। मैं जन्म-जन्मान्तरों तक तुम्हारा यह एहसान भूल नहीं सकता। प्रभु तुम्हें सुख दे, यही विनती सदा करता रहता हूं।

एक काम तुम्हारे जिम्मे लगा आया हूं। उस मेरी गिलहरी का ध्यान रखना। उसकी भी मुझे बहुत याद आती है। जेल के उस वीरान, सुनसान जीवन में कितनी ही एकान्त घड़ियों में वह गिलहरी ही मेरी एकमात्र मित्र थी। शायद पिछले जन्म में उससे भी कोई सम्बन्ध रहा होगा। जेल में सभी को मेरी नमस्ते कहना।

तुम्हारा सदा एहसानमन्द,

अमर

राजीव की हाईकोर्ट में अपील दायर की थी। उसके वकील का पत्र आया था। जल्दी ही बहस होने वाली थी। राजीव को निर्णय की प्रतीक्षा थी। यद्यपि वह जानता था कि उसने अपराध किया है और गवाहियों के आधार पर उसके छूटने की कोई विशेष सम्भावना नहीं है तो भी हर डूबता हुआ तिनके का भी सहारा तलाश करता है। उसे रात नींद न आती और पड़ा पड़ा सोचता रहता। वह सोचता यदि वह छूट जाए तो एकदम अपने परिवार में जाकर नये तरीके से नई जिन्दगी शुरू करेगा।

रात को सोने से पहले बैरक में सभी कैदी राजीव के पास आ बैठते, खूब गप्पें लगतीं। आज सूरत की मुलाकात आई थी। उसके घर से कुछ सामान भी उसे दिया गया था। वह सारा सामान राजीव के पास रखते हुए उसने कहा, "बाबू जी! यह तो आप ही सबमें बांट दें। हममें आप ही सबसे बड़े बाबू हैं।" सूरत का भोला चेहरा और उस भोली बात पर राजीव हंस पड़ा।

"अरे, यह डब्बा तो पहले ही काफी खाली है।" डब्बा खोलकर दिखाते हुए हैरानी से राजीव ने कहा।

"बाबू जी, यह चौथी चक्की।" सूरत ने उत्तर दिया। पर यह बात राजीव को समझ न आई। उसके पूछने पर सूरत ने फिर कहा, "यह गेट पर ली जाती है।" राजीव के पल्ले अब भी कुछ न पड़ा। उसने मोहन की ओर देख पूरी बात समझाने को कहा। मोहन बोला, "राजीव! यह जेल का भाना है और जेल के नियम हैं। जिस कैदी की मुलाकात आई हो उसके सामान से चौथा

ाट वाला वार्डर रख लेता है। यदि उसका हिस्सा न दिया जाए तो कोई बहाना लगाकर वह सामान अन्दर नहीं आने देता। उस सामान ाद में हरगोविन्द व कुछ अन्य वार्डर आपस में बांट लेते हैं। वैसे कैदी पास धन नहीं रख सकता, परन्तु यहां बहुत से कैदियों के पास काफी पैसे यदि चाहो तो मुलाकात के समय अपने सम्बन्धी से धन भी लिया जा कता है, पर शर्त यह है कि उसका चौथा हिस्सा वहीं देना पड़ता है, इसे ही ल की भाषा में चौथी पत्ती कहते हैं।"

राजीव यह सुनकर हैरान हो गया। बोला, "यह तो बड़ा भारी अन्याय है। जेल के नियमों के अनुसार हमारे सम्बधी यहां अपनी चीजें हमें दे सकते हैं, फिर उनमें से चौथा हिस्सा क्यों लिया जाए?"

"अरे राजीव, इस बस्ती में 'क्यों' का कोई सवाल नहीं है। तुम शिकायत नहीं कर सकते, कहीं आवाज़ नहीं उठा सकते, इसलिए जो भी तुम्हारे साथ होता है तुम्हें बरदाश्त ही तो करना है।" कोने से एक कैदी की आवाज़ आई।

"कुछ भी हो यह बहुत बड़ा अन्याय है।" राजीव के साथ दो-तीन आवाज़ें और गूंजीं।

"तो हम ही कौन-से बड़े न्याय करके यहां आए हैं!" एक कोने से एक बूढ़े कैदी की आवाज सुनकर सभी खिलखिला पड़े।

"तो फिर हमारे और उनमें फरक ही क्या हुआ! यदि तुम्हारी तर वह पहरेदार वार्डर भी चोर और लुटेरे हैं तो या तो उन्हें जेल में रखा जा चाहिए या हम सबको जेल से बाहर निकालकर उनकी तरह अपने घरों रहने की इजाजत होनी चाहिए।" सोहन ने कहा।

बहस में हिस्सा लेते हुए सूरत बोला, "बाबू जी! सभी वार्डर ऐसे हैं। रोशन, प्यारेलाल जैसे कुछ बहुत अच्छे लोग भी हैं। जब कभी ड्यूटी होती है तो वे चौथी पत्ती नहीं लेते। इतना ही नहीं, पिछले मा कोई मुलाकात नहीं आई। मेरे पास धूप नहीं था। मैं हर दिन भग फोटो के सामने धूप दिए बिना खाना नहीं खाता। मुझे बड़ी मुश्कि जब रोशन को पता लगा तो वह अपने घर से मेरे लिए धूप ले आय कल मैं जो धूप जलाता हूं, वह रोशन का दिया हुआ ही है। आज

सामान आया तो मैंने मोहन का पूरा सामान करना चाहा, पर उसने नहीं लिया।"

उसके बाद बैरक में मोहन और प्यारेलाल की भलाई व ईमानदारी की कहानियां शुरू हो गईं। सबने अपने-अपने अनुभव सुनाए। वे किसी को न कभी गाली देते हैं और न मारते हैं। कई बार किसी बीमार कैदी को यदि बाजार से दवाई लानी हो तो वह भी लाकर देते हैं।

आखिर में मोहन बोला, "यही कारण है कि हरगोविन्द उन्हें अच्छा नहीं समझता। उनकी रात की ड्यूटी लगवाई जाती है, तंग किया जाता है। पर वे चुपचाप अपना काम करते हैं। शायद इसीलिए वे हैं भी सुखी, उनके परिवार में भी भगवान ने सब सुख दिया है।"

बातें करते-करते काफी समय हो गया था। धीरे-धीरे सब अपने-अपने बिस्तर पर लेटने लगे। जबसे इस बैरक में राजीव आया था, सब को इकट्ठे बैठकर बातें करने का यह क्रम प्रतिदिन चलता था। अब इस बैरक में न तो लड़ाई-झगड़े होते थे और न ही गाली-गलौच।

सब सो गए पर आज सूरज की आंखों में नींद नहीं थी। उसकी आज मुलाकात हुई थी। जिस दिन कैदी की परिवार के लोगों से मुलाकात होती थी, उस रोज वह सो नहीं सकता था। उसकी जेल-जीवन में स्थिर हुई बुद्धि उखड़-सी जाती थी। महीनों का सम्भला हुआ दिल भटकने लगता था। जेल और घर-परिवार के बीच की धुंधली स्मृतियां फिर से उभर उठती थीं। जेल में बीती लम्बी असह्य रातें और जेल में बिताने को बाकी लम्बा अंधेरा समय उसकी आंखों के सामने कड़कती बिजली की तरह कौंध जाता था। दो सपनों के बीच का फासला जीना दूभर कर देता था। आज सूरज की भी ऐसी ही हालत थी। सारी जेल में सूरज सबसे कम उमर का कैदी था। उसकी आयु १६ साल थी। गोरा चेहरा, छोटा कद, भोली-भाली सूरत, मासूम आंखें और उसकी हर बात से टपकने वाली सरलता यह संदेह पैदा करती थी कि इस प्रकार भले जीव ने किस प्रकार से बन्दूक की गोली के साथ अपने ही भाई व भाभी की हत्या कर दी होगी।

सूरज करवटें बदल रहा था और इधर राजीव को भी नींद नहीं आई थी। राजीव ने उसे कहा, "सूरज, तुम्हें शायद नींद नहीं आ रही, क्या बात है?"

"नहीं कोई बात नहीं।" सूरत ने कम्बल की लपेट सम्भालते हुए कहा।

"बात तो मुझे समझ आ रही है सूरत !"

"बताओ तो सही।"

"आज तुम्हारी मुलाकात जो हुई थी।"

राजीव के यह शब्द सुनते ही सूरत की आंखें बरस पड़ीं, बिस्तर पर बिछाई चादर के एक कोने को पकड़कर उसने आंखें पोंछने की कोशिश की।

"सूरत ! उठो, इधर आओ, आज तुमसे बातचीत करने की इच्छा हो रही है।" राजीव के यह कहने पर सूरत कम्बल लपेटकर उसके पास आ बैठा। राजीव बोला, "सूरत ! तुम्हें देखकर कोई यह सोच भी नहीं सकता कि १४—१५ वर्ष की आयु में तुमने दो हत्याएं की हों। आखिर तुमने ऐसा क्यों किया।"

जेल का हर कैदी अपनी कहानी सुनाने का आतुर रहता है। सबकी अपनी-अपनी कहानियां होती हैं। अपने दिल की बात कहकर दिल हल्का करने की सबकी इच्छा होती है, पर जेल की कठोर दिनचर्या में कठोर हृदय कैदियों में सहृदय श्रोता कभी-कभी ही मिल पाता है। जिन लोगों ने चोरी की हो या जेब काटी हो वे प्रायः अपनी सारी बात नहीं बताते। हत्या करने वाले अधिकतर लोग, पेशेवर हत्यारे नहीं होते, जीवन की किसी विशेष परिस्थितियों में वे हत्या कर डालते हैं। जेल की दुनिया के तौर-तरीके में हत्या करने वाले को ऊंचा समझा जाता है, कैदियों में उसे अधिक सम्मान मिलता है। बाकी के अपराध करने वालों को नीची श्रेणी का समझा जाता है।

सूरत बोला, "बाबू जी, मैं स्वयं यह सोचकर हैरान होता हूं कि मैंने इतना बड़ा क्रूर काम कैसे कर दिया था ! मुझे तो पता ही नहीं था कि बन्दूक की गोली चलाने से इतना कुछ हो जाएगा। पता नहीं मेरे भाग्य में यह सब कुछ क्यों लिखा था !" कहते-कहते सूरत फिर अपनी आंखें पोंछने लगा।

राजीव ने उसे सांत्वना देते हुए कहा, "सूरत, जो कल चला गया है वह वापस नहीं आएगा। जो कुछ होना था वह तो हो चुका है, अब तो तुम केवल आगे को सुधार सकते हो। आज तो मुझे अपनी पूरी कहानी सुनाओ।"

सूरत ने बोलना शुरू किया, "मैं, मेरे दो छोटे भाई, दो बहनें तथा मेरी विधवा मां अपने गांव में बड़े आराम से रहते थे। थोड़ी-सी धरती थी,

भाई दौड़ता हुआ आया और मेरी मां को घसीटते हुए मकान के सामने के खेत तक ले गया। गालियां देते हुए बुरी तरह से पीटने लगा।

"उसके बाद मुझे क्या हुआ और मैंने क्या किया यह सब मुझे एक सपने की तरह याद है। मुझे लगता है मैं तब पूरी होश में नहीं था। मैं तुरन्त अन्दर गया और पिता की बन्दूक निकाली। मैं कभी-कभी बन्दूक चलाया करता था। बन्दूक उठाकर बाहर आया, निशाना बांधा और बन्दूक चला दी। उस समय तक मुझे यह बिलकुल ध्यान नहीं था कि यदि बन्दूक चला दी और निशाना ठीक बैठ गया तो उसका परिणाम क्या होगा! निशाना ठीक बैठा और चचेरा भाई वहीं धरती पर ढेर हो गया। मैं स्वयं चौंक पड़ा और रोने लग गया। पास ही खड़ी मेरे भाई की पत्नी चौंककर इधर-उधर देखने लगी। उसे यह समझ नहीं आया कि यह बन्दूक की गोली कहां से आई और किसने चलाई है। पर ज्यों ही उसकी नज़र बरामदे की ओर पड़ी, मैं बन्दूक पकड़े खड़ा था। उसने एक पत्थर उठाया और ज़ोर से मुझे मारा। दूसरा पत्थर उठाकर मारने ही लगी थी कि मेरी उंगलियां फिर हिलीं। तब तक मेरे सिर पर ख़ून सवार हो गया था। एक गोली और चली और मेरी भाभी की लाश भी वहीं धरती पर पड़ गई। बन्दूक नीचे फेंक मैं मां के पास जाकर बैठ गया और रोने लग पड़ा।

"मेरे चचेरे भाई का वह शत्रु जिसने मुझे सिखाया था, तुरन्त पहुंच गया। वह गांव का प्रभावशाली व्यक्ति था। हमारा गांव ऊंचे पहाड़ पर छोटे-से कस्बे से ५० मील दूर था। गांव के प्रमुख लोग बैठे और यह तय किया कि जो हो गया है उस पर पर्दा डाला जाए। तब तक शाम हो गई थी। वहीं खेत के पास लकड़ियां इकट्ठी की गई और दोनों लाशों को जला डाला गया। उस इलाके में बड़े-बड़े अपराध भी इसी तरह छुपा दिए जाते थे।"

राजीव तन्मय होकर उसकी कहानी सुन रहा था। वह कभी सूरत की बात सुनता तो कभी उसके मासूम चेहरे को देखता। फिर वह कल्पना करने की कोशिश करता कि क्या इस सूरत ने अपने भाई और भाभी को मारा है? उसे विश्वास न होता। उसने हैरानी से पूछा, "फिर तुम पकड़े कैसे गए?"

सूरत ने बात आगे बढ़ाई। "बाबू जी, यह बात बीत गई। बात खत्म हो गई। परन्तु बाद का एक आदमी [illegible] और उसने मुझे [illegible] मैं स्वयं ही थाने जाकर सब बात बता दूं तो मुझे क्षमा कर देंगे। [illegible] नहीं किया और पुलिस को पता चल गया तो मुझे फांसी हो जायेगी। फांसी का नाम सुनकर मैं घबराया। [illegible] कुछ को नहीं बताया। लम्बी यात्रा करके सीधा थाने पहुंचा और सारी बात [illegible] दी। वहीं पकड लिया गया, मुकदमा चला। मैंने वकील से मुझे [illegible] मैं सच न बोलूं। मैं मुकर गया। मैंने अपराध स्वीकार नहीं किया तो भी [illegible] गवाहियों के बयान पर मुझे उम्र कैद हो गई। [illegible] वर्ष बाकी हैं। आज उन दिनों की याद करता हूं तो सोचता हूं यह सब मुझसे कैसे हो गया! पर [illegible] में ही कर दिया। अब तो जिन्दगी [illegible]"

"क्या तुम्हारी अपील नहीं हुई?" राजीव ने पूछा।

"अपील तो की है, मेरे नाना बहुत कोशिश कर रहे हैं, [illegible] छोडेगा! मैंने दो हत्याएं की हैं। मेरा वकील कह रहा था कि मुझे तो फांसी होनी थी, उसने बड़ी कोशिश करके उम्र कैद करवाई है।" सूरत ने ठंडी सांस लेते हुए कहा।

राजीव ने उसे समझाया, और दिलासा दिया कि यदि उसने ये अपराध की है तो भी उसकी कम उम्र के कारण हो सकता है [illegible] कर दे। सूरत को राजीव के इन शब्दों से बहुत [illegible] मिला।

राजीव लेट तो गया पर उसे नींद नहीं आई। वह सोचता रहा [illegible] जीवन की परिस्थितियां मनुष्य [illegible] भर देती है कि वह [illegible] आवेश पैदा कर देती, [illegible] अपराध मनुष्य नहीं करता, [illegible] से उत्पन्न विवशता ही [illegible] है। अपराध की [illegible] अधिकतर अपराध [illegible] आवेश में होते हैं। [illegible]

है। आवेश के उन क्षणों में यदि एक क्षण ठहरकर सोच लिया जाता, यदि भावनाओं के पागलपन में कुछ करने से पहले बुद्धि के द्वारा करने की सद्‌बुद्धि आ जाती तो ८० प्रतिशत अपराध न होते। आज जेलों में जिन्हें अपराधी या हत्यारे कहा जाता है, उनमें से ८० प्रतिशत लोग समाज के उतने ही भले नागरिक होंगे जितने अन्य हैं।

राजीव सूरत से बड़ा स्नेह करने लगा था। यद्यपि सूरत अपने भाई व भाभी का हत्यारा था तो भी उसका रहन-सहन व जीवन सरलता, साधुता व ईमानदारी का प्रतीक था। वह बहुत प्रातः उठ जाता था, ठंडे पानी से नहाता, धूप जलाकर दीवार के साथ लगाए कैलेंडर में भगवान की मूर्ति के सामने खड़ा होकर कितनी ही देर पूजा करता। सभी के साथ बड़े आदर से बात करता था। सारी जेल में वह सरलता व सज्जनता के लिए प्रसिद्ध था। उसे जो भी काम दिया जाता, वह ईमानदारी से करता था। लालच उसे बिलकुल न था। राजीव ने उसे कहा था कि यदि वे दोनों छूट गए तो वह सूरत को किसी नौकरी पर लगवा देगा। सूरत उसे यह कहता था कि राजीव ही उसे अपने घर में नौकर रख ले।

प्रातः का समय था। बैरकों के दरवाज़े अभी खुले ही थे। राजीव अपने बिस्तर के पास रखी हुई रात की एक रोटी लेकर बैरक से बाहर आया। एक तरफ किनारे बैठ गया और रोटी के छोटे-छोटे टुकड़े दरवाज़े पर फेंकने लगा। तभी पास से एक गिलहरी आई और उन टुकड़ों को खाने लग पड़ी। वह वही गिलहरी थी, जिसे अमर रोज रोटी खिलाया करता था। अमर जाती बार यह काम राजीव को सौंप गया था। राजीव छोटे-छोटे रोटी के टुकड़ों पर झपटती हुई गिलहरी को देख रहा था और न जाने क्या सोच रहा था।

"राजीव यह तुम बहुत अच्छा कर रहे हो। मुझे डर था कि अमर के बाद यह बेचारी गिलहरी कहीं भूखी न मर जाए।" सामने से शिवमंगल सिंह ने आकर कहा।

"यह कैसे हो सकता है! अमर जाती बार मुझे यह काम सौंप गया था।"

"मेरी चिड़ियां तो अभी तक आई नहीं।"

"हां। तुम भी प्रतिदिन उन चिड़ियों से अपना दिल लगाते हो। आओ, यहीं बैठ जाओ।" राजीव के कहने पर शिवमंगल वहीं आकर बैठ गया।

"मगन, तुम यहां किस खुशी में आए थे। सुना है, तुम इस बस्ती के सबसे पुराने सदस्य हो।" राजीव ने शिवमंगल के कन्धे पर हाथ रखकर पूछा।

"राजीव, खुशी किसी बात की नहीं, अपना भाग्य ही यहां ले आया और अब यहां से बाहर जाने का कोई साधन ही नहीं बनता।" एक ठंडी सांस भरकर शिवमंगल ने कहा।

"जेल आए कैसे ?" राजीव ने पूछा।

"मैं वन विभाग में कर्मचारी था। मैं व मेरे कुछ साथी कुछ बड़े ठेकेदारों से मिलकर अवैध रूप से सरकारी जंगलों को कटवाते थे। उनसे हमें बहुत अधिक धन रिश्वत के रूप में मिलता था। ठेकेदारों से जो भी पैसा आता था, उसे हम सब कर्मचारी आपस में बांट लेते थे। एक बार साथियों में पैसा बांटने पर मतभेद हो गया। हम एक कमरे में शराब पी रहे थे और हिसाब-किताब कर रहे थे कि किसका हिस्सा कितना हो। इसी पर झगड़ा हो गया। शराब कुछ ज्यादा पी ली थी और उसके नशे ने उस झगड़े में आग में घी का काम किया। मारपीट शुरू हो गई। मैं काफी शक्तिशाली था, उस नशे में आकर मैंने एक साथी को मार डाला। हम बाकी साथी पकड़े गए, वह धन सरकार ने जब्त कर लिया, नौकरी चली गई और मुझे उमर कैद की सजा हुई।" अपने दोनों हाथों में सिर रखकर शिवमंगल उस गिलहरी को देख रहा था, अब उसकी आंखों में पानी भर आया था।

"यह भी अजीब बस्ती है। जिससे बात करो उसकी अलग कहानी है, अजीब दास्तान है। शिवमंगल, तुम्हें देखकर मैं कभी सोच भी नहीं सकता कि तुम कभी रिश्वत लेते थे, शराब पीते थे और तुमने कोई हत्या की होगी! अब तो तुमसे अच्छी तरह चला भी नहीं जाता।" राजीव ने शिवमंगल की ओर देखते हुए कहा।

"यह जिन्दगी का बदलता हुआ पड़ाव है, राजीव! अब मैंने १४ साल पूरे कर लिए हैं। सरकार मुझे छोड़ सकती है, पर मेरे घर के और गांव के

लोग मेरे बारे में किसी प्रकार का आश्वासन नहीं देते। यदि वे आश्वासन न दें, तो मुझे मृत्यु तक यहीं रहना होगा।"

"तुम्हारे घर वाले क्या तुम्हें नहीं चाहते ?"

"हां। वे नहीं चाहते कि मैं घर आऊं।"

"यह क्यों ?"

"घर पर मेरे भाई हैं। उन्हें पता लग गया है कि मैं अब कोई काम नहीं कर सकता, मेरे नाम कोई धन सम्पत्ति भी नहीं है। पिछले दिनों एक भाई यहां आया था, उसने मुझे कहा कि मैं अब घर के किसी काम के योग्य नहीं हूं, मुफ्त की रोटी घर वाले मुझे नहीं खिला सकते। मेरे भाई ने मुझे कहा कि मैं जेल में ही रहूं और सरकार की रोटी खाता रहूं!" शिवमंगल की आंखों का पानी अब धरती पर टपक-टपककर गिर रहा था।

"तो अब तो तुम्हें यहीं अपना दिल लगाना होगा।"

"हां। यही तो मैं करता हूं। अन्य कैदियों से भी मेरा कोई विशेष बोलचाल, मिलना-जुलना नहीं है। न ही मैं कोई काम कर सकता हूं। मुझसे कोई काम के लिए कहता भी नहीं है।"

"तो फिर सारा दिन क्या करते रहते हो ?"

"मुझे इतनी बड़ी जेल में मेरा अपना कोई नहीं लगता, बस कुछ चिड़ियां हैं, जो प्रातः और सायं इस मेरी कोठरी के बाहर इकट्ठी हो जाती हैं, मैं उनके लिए कुछ दाने डाल देता हूं और वे उछलती-खेलती उन्हें खाती हैं। राजीव, वर्षों हो गए, ये चिड़ियां निश्चित समय पर दाने खाने के लिए यहां आ जाती है। मैं कितनी ही देर तक इनके पास बैठा रहता हूं। इनसे बातें करता रहता हूं। मुझे लगता है कि वे भी मुझसे बातें करती रहती हैं। वे मुझसे डरती नहीं, मेरे बहुत पास आ जाती है। मैं कई बार उनसे अपने सुख-दुख की बातें कहकर अपना दिल हल्का कर लेता हूं।"

"मंगल तुम्हें कितने साल हो गए, इन चिड़ियों को दाना खिलाते ?"

"ठीक याद नहीं। लेकिन जेल में आने के लगभग दो वर्ष बाद ही इन पक्षियों से मेरी मित्रता हो गई थी, तो समझ लो १२ वर्ष हो गए। इस बीच में केवल एक बार मैं इतना बीमार हो गया था कि बिस्तर से उठ नहीं सका। चिड़ियों को दाना तो किसी और से डलवा दिया था, लेकिन मैं स्वयं रोटी नहीं

रहा सका था। इनको दाना डालकर मुझे एक अजीब संतोष होता है। मुझे लगता है जैसे यह मेरा परिवार है। इनमें इतना अपनापन हो गया है कि अब मुझे यह जेल अपने घर की तरह ही लगने लग पड़ी है। कैसा भी मौसम क्यों न हो, कितनी भी वर्षा क्यों न पड़ रही हो, ठीक समय पर ये चिड़ियां फुर्र-फुर्र करती हुई आ जाती हैं। कई बार रिहा होने को दिल करता है, पर जब १२ साल की साथी इन चिड़ियों का ख्याल आता है तो जेल से बाहर जाने को भी दिल नहीं करता।"

राजीव और शिवमंगल आपस में बातें कर रहे थे, इतने में ही सामने से कुछ वार्डर आए, साथ में हरगोविन्द भी था। वे सब बैरक के अन्दर चले गए। रामलाल को पकड़ा और उसकी पिटाई शुरू कर दी। कुछ देर तो रामलाल चुपचाप मार सहता रहा, परन्तु बाद में जोर-जोर से चिल्लाने लग पड़ा।

रामलाल कुछ जिद्दी स्वभाव का था। प्रात: उस बैरक के नम्बरदार ने उसे झाड़ू लगाने को कहा। रामलाल ने कहा कि उसकी तबीयत ठीक नहीं है। नम्बरदार उससे पहले ही नाराज था। बाहर जो वार्डर खड़ा था वह भी रामलाल से चिढ़ा हुआ था। इस बार रामलाल की मुलाकात के समय उसकी पत्नी उसके लिए कुछ सामान ले आई थी। रामलाल ने उसमें से उस वार्डर को चौथी पत्ती नहीं दी थी।

जेल में कैदियों में से ही कुछ को नम्बरदार बना दिया जाता है। नम्बरदार बाकी कैदियों पर नियन्त्रण रखता है, और उनसे काम लेता है। उसका भी काफी रोब होता है। इनमें से कुछ नम्बरदार वार्डरों की तरह ही कैदियों का शोषण शुरू कर देते हैं। ये कैदियों से बीड़ी साबुन आदि के रूप में रिश्वत लेने लग पड़ते है। जब तक कोई कैदी रिश्वत देता रहता है, उसके काम की कोई चिन्ता नहीं होती, परन्तु जब वह नम्बरदार को अपना हिस्सा नहीं देता तो उसे तंग करना शुरू कर दिया जाता है।

रामलाल अक्खड़ और जिद्दी स्वभाव का तो था ही, परन्तु बहुत स्वाभिमानी भी था। उसे सबसे अधिक मान अपनी पत्नी का था। उसकी पत्नी प्रतिमास उसे मिलने आती थी। उसका घर एक गांव में था। घर के साथ की जमीन की सीमा के बारे में पड़ोसियों से झगड़ा था। एक दिन

झगड़ा हुआ, बात बढ़ गई, एक-दूसरे को मुक्के मारने शुरू किए। रामलाल से अचानक एक ऐसा मुक्का लगा कि पड़ोसी बेहोश हो गया और उसके सुनने की शक्ति जाती रही। उसी अपराध में रामलाल कैद काट रहा था।

जब रामलाल की पत्नी पहली बार उससे मिलने आई तो उसने देखा कि रामलाल को मोटे-सफेद खद्दर के कपड़े पहनने पड़ते हैं, तो वह घर गई और अपने लिए भी उसी प्रकार के कपड़े सिलवा लिए। उसने अपने रंगदार कपड़े पहनने बन्द कर दिए थे। उसके बाद जब वह दूसरी बार जेल में मिलने आई थी तो सफेद खद्दर में उसे देखकर रामलाल चक्कर में पड़ गया। उसके पूछने पर उसने उत्तर दिया था, 'जब आप अच्छे कपड़े नहीं पहन सकते तो मैं भी नहीं पहनूंगी। जब तक आप जेल में हैं, मैं उसी प्रकार का जीवन व्यतीत करूंगी, जिस प्रकार कि आप यहां व्यतीत करते हैं।

उसने जेल के खाने का भी पता कर लिया था। जो कुछ रामलाल को जेल में खाने को मिलता था, वही कुछ वह भी घर में खाती थी। उसने चारपाई पर सोना बन्द कर दिया था, चाय पीनी छोड़ दी थी। रामलाल की तरह दो बार बड़ी-बड़ी सूखी रोटियां, दोपहर को चने और गुड़—बस यही अब उसका भोजन था। जब रामलाल ने एक मुलाकात के समय यह विश्वास दिला दिया कि अब जेल में एक बार चाय भी मिलनी शुरू हो गई है तो उसने भी घर में एक बार चाय पीनी शुरू कर दी थी। वह अपने घर की चारदीवारी में ही प्रायः बन्दी रहती थी। जब उसे उसके पड़ोसी बुलाते तो वह कहती कि जब तक उसका पति जेल में बन्दी है तब तक वह अपने घर की दीवारों में ही बन्द रहेगी। जब अपने पति को मिलने जेल जाना होता तभी वह घर के आंगन को पार करती थी। दूर-दूर तक उसकी इस तपस्या की चर्चा हो गई थी।

रामलाल ने अपनी सजा के विरुद्ध अपील की थी। उसके विरोधी ने भ उसकी सजा बढ़ाने की अपील की थी। एक बार जब जेल के बड़े गेट की लो के सींखचों के आर-पार रामलाल अपनी पत्नी से मुलाकात कर रहा था त उसकी पत्नी ने उसे धैर्य देते हुए कहा था कि अब तो उसकी कैद केवल ए साल बाकी रह गई है। उस पर रामलाल ने कहा कि उसकी सजा बढ़ भ सकती है। तब उसकी पत्नी साहस से बोल उठी, 'आप इसकी चिन्ता म

करते है ! मैं तो कयामत तक भी आपका इन्तजार करूँगी । आप भले ही जेल में है, पर मैं घर में आपके ही साथ प्रतिक्षण रहती हूँ । मेरी आत्मा तुम्हें आपसे अलग नहीं कर सकती । यदि मर भी गई, तो अगले जन्म में फिर आपको ही प्राप्त करूँगी ।' इन शब्दों के साथ उसकी आँखों से निकलता जल मानो तैर उठा था ।

राजीव उठकर बैरक की ओर गया । रामलाल एक कम्बल ओढ़कर लेटा था । मार तो उसने कई बार खाई थी, पर इस बार [illegible] गहरी चोट आ गई थी । उसकी बेहोशी से जेल में कुछ [illegible] भी हुई, पर इतनी नहीं जितनी कि एक साधारण आदमी के लिए होती है । क्योंकि आदमी और कैदी में बहुत अन्तर है । यदि कैदी का भी [illegible] होता तो जेलखाने अपराधी पैदा करने वाले कारखाने न बनते, जेल में चोर बड़े-चोर, ठग बड़े-ठग, हत्यारे बड़े-हत्यारे बनकर न निकलते हैं । यही कारण है कि कैदी यह नहीं सोचता कि अपराध करके वह जेल में आया है, बल्कि यह सोचता है कि उसने ठीक सावधानी से अपराध नहीं किया, इसलिए उसे जेल आना पड़ा । कैदी जेल में अपराध के [illegible] सीखता है, नई योजनाएँ बनाता है, नई [illegible] बनाता है और बाहर जाकर कैदी उसी अपराध की [illegible] से अधिक [illegible] जाता है ।

रामलाल [illegible] देर बेहोशी में पड़ा रहा । [illegible] अकड़ गया । राजीव व अन्य साथियों ने [illegible] उसकी बेहोशी दूर करने की कोशिश की । जेल के डाक्टर को [illegible] नहीं, [illegible] बुलाया गया । [illegible] आया नहीं । [illegible] वहाँ गया और उसने [illegible] बैरक के अन्दर आने की माँग की । [illegible] होगा । परन्तु अब उसकी [illegible] गई तथा रामलाल को [illegible] शुरू हुआ । एक सप्ताह के बाद [illegible] तरह पहचानता न था । कुछ दिन के बाद [illegible] लगा । डाक्टरों ने [illegible] को पागलखाने भेज दिया ।

झगड़ा हुआ, वात वढ़ गई, एक-दूसरे को मुक्के मारने शुरू किए। रामलाल से अचानक एक ऐसा मुक्का लगा कि पड़ौसी वेहोश हो गया और उसके सुनने की शक्ति जाती रही। उसी अपराध में रामलाल कैद काट रहा था।

जव रामलाल की पत्नी पहली वार उससे मिलने आई तो उसने देखा कि रामलाल को मोटे-सफेद खद्दर के कपड़े पहनने पड़ते हैं, तो वह घर गई और अपने लिए भी उसी प्रकार के कपड़े सिलवा लिए। उसने अपने रंगदार कपड़े पहनने वन्द कर दिए थे। उसके वाद जव वह दूसरी वार जेल में मिलने आई थी तो सफेद खद्दर में उसे देखकर रामलाल चक्कर में पड़ गया। उसके पूछने पर उसने उत्तर दिया था, 'जव आप अच्छे कपड़े नहीं पहन सकते तो मैं भी नहीं पहनूंगी। जव तक आप जेल में हैं, मैं उसी प्रकार का जीवन व्यतीत करूंगी, जिस प्रकार कि आप यहां व्यतीत करते हैं।

उसने जेल के खाने का भी पता कर लिया था। जो कुछ रामलाल को जेल में खाने को मिलता था, वही कुछ वह भी घर में खाती थी। उसने चार-पाई पर सोना वन्द कर दिया था, चाय पीनी छोड़ दी थी। रामलाल की तरह दो वार वड़ी-वड़ी सूखी रोटियां, दोपहर को चने और गुड़—वस यही अव उसका भोजन था। जव रामलाल ने एक मुलाकात के समय यह विश्वास दिला दिया कि अव जेल में एक वार चाय भी मिलनी शुरू हो गई है तो उसने भी घर में एक वार चाय पीनी शुरू कर दी थी। वह अपने घर की चारदीवारी में ही प्रायः वन्दी रहती थी। जव उसे उसके पड़ौसी वुलाते तो वह कहती कि जव तक उसका पति जेल में वन्दी है तव तक वह अपने घर की दीवारों में ही वन्द रहेगी। जव अपने पति को मिलने जेल जाना होता तभी वह घर के आंगन को पार करती थी। दूर-दूर तक उसकी इस तपस्या की चर्चा हो गई थी।

रामलाल ने अपनी सज़ा के विरुद्ध अपील की थी। उसके विरोधी ने भी उसकी सज़ा वढ़ाने की अपील की थी। एक वार जव जेल के वड़े गेट की लोहे के सींखचों के आर-पार रामलाल अपनी पत्नी से मुलाकात कर रहा था तो उसकी पत्नी ने उसे धैर्य देते हुए कहा था कि अव तो उसकी कैद केवल एक साल वाकी रह गई है। इस पर रामलाल ने कहा कि उसकी सज़ा वढ़ भी सकती है। तव उसकी पत्नी साहस से वोल उठी, 'आप इसकी चिन्ता क्यों

करते हैं ! मैं तो कयामत तक भी आपका इन्तजार करूंगी। आप भले ही जेल में हैं, पर मैं घर में आपके ही साथ प्रतिक्षण रहती हूं। ये दीवारें मुझे आपसे अलग नहीं कर सकतीं। यदि मर भी गई, तो अगले जन्म में फिर आपको ही प्राप्त करूंगी।' इन शब्दों के साथ उसकी आंखों में विश्वास का पानी तैर उठा था।

राजीव उठकर बैरक की ओर गया। रामलाल एक तरफ बेहोश पड़ा था। मार तो उसने कई बार खाई थी, पर इस बार एक डंडे से उसके सिर पर गहरी चोट आ गई थी। उसकी बेहोशी से जेल में कुछ घबराहट-सी हुई, पर इतनी नहीं जितनी कि एक साधारण आदमी के लिए होती है। क्योंकि आदमी और कैदी में बहुत अन्तर है। यदि कैदी को भी समाज में आदमी समझा गया होता तो जेलखाने अपराधी पैदा करने वाले कारखाने न बनते, जेल में से चोर बड़े-चोर, ठग बड़े-ठग, हत्यारे बड़े-हत्यारे बनकर न निकलते हैं। यही कारण है कि कैदी वहां यह नहीं सोचता कि अपराध करने के कारण वह जेल में आया है, बल्कि वह सोचता है कि उसने ठीक सावधानी से अपराध नहीं किया, इसलिए उसे जेल आना पड़ा। कैदी जेल में अपराध के नये-नये तरीके सीखता है, नई योजनाएं बनाता है, नई मित्र-मंडली बनाता है और बाहर जाकर कैदी उसी अपराध की अन्धेरी दुनिया में वापस चला जाता है।

रामलाल कितनी ही देर बेहोशी में पड़ा रहा। सर्दी से उसका शरीर अकड़ गया। राजीव व अन्य साथियों ने उस पर कम्बल डाल सहलाकर उसकी बेहोशी दूर करने की कोशिश की। जेल में डाक्टर तो था नहीं, कम्पाउंडर को बुलाया गया। कितनी ही देर तक कम्पाउंडर आया नहीं। जब राजीव दौड़कर वहां गया और उसने गुस्से से कम्पाउंडर को चलने के लिए कहा तो कम्पाउंडर बैरक के अन्दर आते ही बोल पड़ा कि रामलाल बहानेबाज है, वैसे ही पड़ा होगा। परन्तु जब उसने देखा तो वह चौंक उठा। कार्यालय में सूचना भेजी गई तथा रामलाल को उठाकर बड़े हस्पताल ले जाया गया। उसका इलाज शुरू हुआ। एक सप्ताह के बाद उसे होश तो आया पर वह किसी को ठीक तरह पहचानता न था। कुछ दिन के बाद वह मस्तिष्क का संतुलन खोने लगा। डाक्टरों ने उसे पागल करार दे दिया। जेल अधिकारियों ने रामलाल को पागलखाने भेज दिया।

उसकी पत्नी अब भी उसे मिलने पागलखाने जाती थी। पर रामलाल अब पहले की तरह उसका मुस्कराकर स्वागत नहीं करता। ठीक ढंग से उससे बात भी नहीं करता। इतना अवश्य था कि पत्नी को देखते ही वह चुप हो जाता था। उसकी पत्नी उसके सामने आंसू बहाती रहती। रामलाल अब उन आंसूओं की भाषा भी समझ नहीं पाता था। उसकी पत्नी सोचती कि अब उसका पति रिहा भी हो गया तो वह क्या करेगी!

राज़ीव इस घटना से बहुत उद्विग्न हुआ। उसे एक बड़ा आघात लगा, परन्तु उसे जेल के कैदियों ने बताया कि जेल के लिए यह कोई नई बात नहीं है। कुछ वर्ष पहले इसी प्रकार एक कैदी की हड्डी टूट गई थी। इसी प्रकार की मार से एक और कैदी जीवन-भर के लिए बेकार हो गया था।

इस प्रकार की बातें सुनकर राजीव और भी परेशान रहने लगा। उसने कैदियों को समझाने की कोशिश की कि उन्हें इकट्ठे होकर इस पाशविक अत्याचार के विरुद्ध आवाज उठानी चाहिए। परन्तु कैदी घबराते थे, वे जानते थे कि जो ज़रा-सी भी आवाज़ उठाएगा, उसकी हालत रामलाल की तरह कर दी जाएगी।

राजीव ने देखा कि इस अन्याय का प्रतिकार जेल के भीतर सम्भव नहीं। एक कैदी तिरलोचन रिहा हो रहा था। उससे राजीव की अच्छी दोस्ती थी। राजीव ने उसे कहा कि वह रामलाल के घर जाकर उसके पागल होने की घटना की सच्चाई बताए। तिरलोचन ने कहा कि वह एक पत्र में सब कुछ लिख दे। राजीव ने रामलाल की पत्नी के नाम सारी घटना एक कागज़ पर लिख दी। जेल के अन्दर से कागज़ का एक टुकड़ा भी बाहर नहीं जा सकता। राजीव ने यह पत्र तिरलोचन को देते हुए कहा कि जब गेट पर उसकी तलाशी होगी, तो वह इसे कैसे छिपाएगा। इस पर तिरलोचन हंस पड़ा, बोला, "वाह राजीव, यह साले मेरी क्या तलाशी लेंगे। जब जेल आता हूं तो गेट पर मेरी तलाशी होती है, परन्तु मैं सैकड़ों रुपये और अफीम जेल के अन्दर ले आता हूं।"

"पर तिरलोचन, गेट पर तो बड़ी सख्ती से तलाशी होती है। तुम यह सब लेकर कैसे आ जाते हो?" राजीव ने हैरान होकर पूछा। इस पर तिरलोचन ने अपना मुंह खोल दिया और दायें हाथ की बड़ी उंगली अन्दर

डाली और एक डब्बी मुंह से निकाली। राजीव मानों किसी जादूगर का खेल देख रहा था। तिरलोचन ने डब्बी खोली तो उसमें सौ-सौ के ४ नोट तथा अफीम की एक गोली थी। राजीव की दी हुई चिट्ठी उसने मरोड़कर दबाई और उसी डब्बी में डाली और डब्बी को फिर उसी प्रकार अपने मुंह के अन्दर डाल दिया।

राजीव यह सब देखकर चकित रह गया। पूछने लगा, "तिरलोचन यह डब्बी तुम्हारे गले में कैसे रहती है?"

"राजीव, यह देखो मेरे गले के नीचे यह एक गडा-सा है। मुझे मेरे उस्ताद ने यह अभ्यास कराया था। लोहे का एक टुकड़ा मैं निरन्तर यहां रखता रहा। वह भारी धातु लगातार रखने के कारण यहां एक खाली जगह बन गई। इसी जगह मैं यह छोटी डब्बी रखता हूं।"

तिरलोचन रिहा हो गया। उसने वह पत्र रामलाल की पत्नी को दे दिया। साथ ही उसने सारी घटना भी उसको सुना दी। रामलाल की पत्नी यह सुनकर सुन्न हो गई। उसे तो यह बताया गया था कि वह जेल में बीमार हो गया और फिर अपने आप पागल हो गया। सारी कहानी सुनकर कितनी ही देर वह तड़पती और रोती रही। जब उसके सम्बन्धियों को पता लगा तो उन्होंने सारी घटना की शिकायत ज़िलाधीश को लिख भेजी।

यह समाचार प्रदेश के सभी समाचार पत्रों में छप गया। विधान सभा में भी कुछ सदस्यों ने यह प्रश्न उठाया। चारों तरफ़ इसकी खूब चर्चा हुई। सरकार ने इसकी जांच के लिए एक समिति नियुक्त कर दी।

अब जेल अधिकारियों में चिन्ता व्याप्त हो गई। कैदियों को फुसलाया जाने लगा। यह प्रयत्न होने लगे कि कोई भी उस घटना के सम्बन्ध में गवाही न दे। उस घटना के समय जो कैदी उपस्थित थे, उन्हें बार-बार बुलाया जाने लगा। विशेष सुविधाएं देने के आश्वासन दिए गए। डाक्टर को कहकर कुछ कैदियों को दूध लगवा दिया गया। भोजन का स्तर भी अच्छा कर दिया गया। कैदियों को हर तरीके से खुश करने की कोशिशें होने लगीं। अब कोई भी वार्डर किसी कैदी को कुछ नहीं कहता था। मारना-पीटना तो दूर रहा अब उन्हें झिड़कना भी बन्द हो गया। सभी कैदी यह अनुभव करने लगे कि जेल सचमुच ही सुधार-गृह बन गया है।

राजीव ने सब कैदियों को समझा दिया था। सबने जेल अधीक्षक के कमरे में आश्वासन दे दिया कि वे वही गवाही देंगे जैसे अधिकारी कहेंगे। उससे जेल अधिकारी काफी आश्वस्त हो गए थे।

तभी एक दिन जेल अधीक्षक श्री भाटिया ने राजीव को बुलाया और कहा, "राजीव उस दिन की रामलाल की घटना की जांच होने वाली है। जो होना था वह तो हो चुका है, इसलिए मैं चाहता हूं कि तुम भी जेल अधिकारियों का साथ दो। कोई भी कैदी रामलाल की पत्नी के पक्ष में गवाही नहीं देगा। जब तक गवाही नहीं होगी, आरोप सिद्ध नहीं हो सकता। क्या मैं आशा करूं कि तुम भी हमारा साथ दोगे?"

राजीव सुनकर भड़क पड़ा, "भाटिया जी! क्या जेल में बन्द एक इन्सान इतना सस्ता होता है कि डंडे मार-मारकर उसकी खोपड़ी फाड़ डाली जाए, वह पागल बना दिया जाए और फिर उसकी बदकिस्मत पत्नी जब शिकायत करे और सरकार जांच बिठाए तो इस प्रकार झूठ से लीपा-पोती करके उस घटना को ही झूठा साबित कर दिया जाए! वाह! क्या खूब तमाशा है! क्या यही आपकी इस आदर्श जेल का आदर्श है? भाटिया जी, क्या आपको पता है कि यह शिकायत बिलकुल सच्ची है! यह घटना हम सबकी आंखों के सामने घटी है!"

"देखो राजीव, तुम ठीक कह रहे हो। मैं तुम्हें विश्वास दिलाता हूं कि भविष्य में अब ऐसा कभी नहीं होगा।" भाटिया ने गिड़गिड़ाते हुए कहा।

"मैं खूब जानता हूं इन आश्वासनों का मूल्य। मैं जब से यहां आया हूं, आप कई बार इस प्रकार कह चुके हैं, परन्तु जेल के अन्दर वही पुराने तौर-तरीके चलते रहते हैं।" राजीव ने क्रोध से कहा।

"देखो राजीव, यदि जांच समिति के सामने सारी घटना आ गई तो कितने ही लोगों की रोज़ी समाप्त हो सकती है। हो सकता है कुछ को नौकरी से हाथ धोना पड़े। मैं तुमसे प्रार्थना करता हूं कि तुम भी हमारा साथ दो।"

"नहीं, नहीं भाटिया जी! किसी नवयुवती का प्रिय नौजवान पति, छोटे-छोटे बच्चों का वात्सल्यदाता पिता, एक बूढ़ी मां के जीवन का सहारा प्यारा पुत्र, मार-मारकर पागल बना दिया गया। क्या ऐसा अपराध करने वाले के अपराध को छिपाकर आप उन्हें पुरस्कार देना चाहते हैं? यह सब आप

करते रहे हैं और अब भी कर सकते हैं। पर मुझसे यह नहीं हो सकता। मैंने जीवन की किन्हीं परिस्थितियों में एक बार एक अपराध किया था, उसका फल यहां भोग रहा हूं। अब झूठ बोलकर एक और अपराध हरगिज नहीं करूंगा। आप मुझे भी डंडे लगवाकर पागल बना सकते हैं और पागलखाने भी भेज सकते हैं, पर याद रखें मैं सच बोलूंगा और सच के सिवा कुछ नहीं बोलूंगा।"

भाटिया को राजीव से ऐसी ही आशा थी। परन्तु उसे विशेष चिन्ता भी नहीं थी। क्योंकि कोई भी कैदी राजीव की बात का समर्थन करने वाला नहीं था।

अब भाटिया यह तो मानने लग पड़ा था कि कैदियों को मारना-पीटना ठीक नहीं है। वह यह भी समझता था कि इस प्रकार के दुर्व्यवहार से कोई भी अपराधी सुधर नहीं सकता। उसके विपरीत अपराधी और अधिक अपराधी बनता है। परन्तु जेल का पुराना चला आ रहा ढांचा बदलने की न उसमें शक्ति थी और न रुचि थी। जेल के अन्य अधिकारी व कर्मचारी उन्हीं पुराने तरीकों पर विश्वास करते थे, उन्हींके अभ्यस्त थे और उन्हींके अनुसार काम करते थे। भाटिया का इस मामले से सीधा सम्बन्ध तो नहीं था, मार-पीट तो अन्य लोगों ने की थी, परन्तु सबसे बड़ी कठिनाई यह थी कि जेल रिपोर्ट में यह लिखा गया था कि पैर फिसल जाने से रामलाल के सिर पर चोट आ गई और उसीके कारण उसके दिमाग में खराबी आ गई। सरकार को भेजी गई एक रिपोर्ट में जेल की ओर से यह बात लिखी जा चुकी थी।

राजीव ने कुछ ही दिन बाद सभी बैरकों के कुछ प्रमुख कैदियों को किसी बहाने एक जगह इकट्ठा किया और उन्हें समझाने लगा, "कैदी भाइयो, जांच समिति बहुत जल्दी जेल में आने वाली है। जब तुम्हारा बयान लिया जाने लगे, तो सबसे पहले यह कहें कि हम अपने बयान बिलकुल एकांत में केवल जांच समिति के सामने देंगे। उससे यह भी कहें कि हमें इस बात की गारंटी होनी चाहिए कि सच कहने के कारण बाद में हम पर कोई अत्याचार न हो। याद रखो, यह सुनहरी मौका है, यदि सच बोलकर अपराधी अधिकारियों को दंड दिला दिया गया तो भविष्य में जेल में होने वाले इन

अत्याचारों से छुटकारा मिल सकता है। पर एक बात याद रखना, जब तक यह समिति नहीं आती किसीको यह पता न चले कि आप सच-सच कहने वाले हैं।"

"राजीव भाई, ऐसी गलती हम कैसे करेंगे ! आजकल तो जेल में ससुराल की तरह हमारी खातिर हो रही है।"

"क्या एक बात नहीं हो सकती ?"

"क्या बात ?" राजीव ने एक कैदी के प्रश्न पर उत्सुकता प्रकट की।

उस कैदी ने फिर पूछा, "यदि यह समिति कुछ महीने के बाद आए। तो बहुत अच्छा है। आजकल कितनी अच्छी खातिर हो रही है। भोजन भी अच्छा मिल रहा है। न कोई गाली देता है, न मार पड़ती है। मूलियां और शलजम के पत्तों की बजाए अब तो सब्जी में शलजम और मूली मिलनी शुरू हो गई है। कल तो भाटिया जी ने अपनी तरफ से सबको हलवा भी खिलाय था। यह मौज-मेला जांच समिति के आने तक ही है।" उसकी बात सुनक सभी मुस्करा पड़े।

जांच समिति निश्चित दिन नगर में आ गई। सरकारी रेस्ट हाउस उनकी खूब खातिर की गई। जेल अधिकारी उन्हें मिले और अपना प समझाने की कोशिश की। समिति के दो सदस्य जेल अधिकारियों की बात सहमत हो गए, पर समिति का प्रधान वस्तुस्थिति स्वयं जानने के बा कोई धारणा बनाना चाहता था। दूसरे दिन जांच शुरू हुई। श्री भाटि कमरे में ही रामलाल की बैरक के कुछ कैदी बुलाए गए। अपने सामने अधिकारियों को देखकर कैदियों का सारा हौसला ठंडा पड़ गया। भाटिया और हरगोविन्द बैठे थे। उन्हें देखकर उनके पसीने से निकल पड़े। जब उन्हें पूछा गया तो उन्होंने यह कहा कि रामलाल को कि नहीं मारा, वह पैर फिसलने की चोट से ही पागल हुआ है। ए घबराहट में यह भी कह गया कि रामलाल बिलकुल ठीक है। न शिर पर कोई चोट लगी और न ही उसका दिमाग खराब है।

यह सुनते ही समिति के अध्यक्ष चौंक पड़े। पूछा, "क्या सचमुच ठीक है ? यदि ऐसा है तो सारे प्रदेश में शोर किसलिए मचाया ग

यह प्रश्न सुनते ही सारे कमरे में मौन छा गया। सब एक

ओर देखने लगे। अध्यक्ष के दो-तीन बार पूछने के बाद भी किसीने को
उत्तर नहीं दिया।

अध्यक्ष सारी बात भांप गया। उसने आदेश दिया कि समिति अलग
कमरे में एक-एक कैदी को बुलाकर बयान लेगी। यह सुनते ही जेल अधि
कारियों के चेहरों पर परेशानी की छाया पड़ गई।

अलग कमरे में जांच शुरू हुई। जब एक-एक कैदी को बुलाकर पूछा गय
तो सबने सच्ची घटना कह सुनाई। समिति के सदस्यों की आंखें खुल गईं।

सोहन ने अपनी गवाही में कहा, "रामलाल को डंडे से मारा गया, वह
बेहोश हो गया, उसके सिर से खून निकलने लगा था। एक घंटे से भी
अधिक देर तक वह बेहोशी की हालत में एक लावारिस की तरह पड़ा रहा।
उसका इलाज भी बहुत देर के बाद हो सका। उसके बाद जब वह होश में
आया तो वह पागल हो चुका था। उसके पागलपन की सारी जिम्मेदारी जेल
अधिकारियों पर है साहब! रामलाल तो केवल पागल हुआ है, आज से दो
वर्ष पहले रामसिंह नाम का एक कैदी इनके दुर्व्यवहार के कारण जीवन से ही
हाथ धो बैठा था।"

सोहन अपनी बात कहकर वापस जाने लगा, तभी समिति के अध्यक्ष ने
उसे रामसिंह की बात विस्तार से बताने को कहा।

सोहन कहने लगा, "साहब, रामसिंह गरीब घर का था। उससे मुलाकात
करने कभी कोई नहीं आता था। वार्डरों को रिश्वत देने के लिए उसके पास
कुछ भी नहीं था। इसलिए उसके साथ बहुत अधिक दुर्व्यवहार किया जाता
था। एक बार वह बीमार हुआ तो कितने ही दिन उसे न किसी डाक्टर ने
देखा और न ही दवाई दी। यह कहा गया कि वह बहाने करता है। उसे काम
से छुट्टी भी नहीं दी गई। बीमारी की हालत में भी उसे खेतों में कठोर काम
करने पर विवश किया गया। लगभग तीन सप्ताह इसी तरह बीत गए, उसे
हल्का बुखार रहता था। वह रात भर कराहता रहता। धीरे-धीरे उसका
शरीर टूट गया। एक दिन जब जेल के खेतों में उससे काम करवाया जा रहा
था तो वह बेहोश होकर गिर गया। तब कम्पाउंडर को बुलाकर उसे दवाई
दी गई। फिर कुछ दिन वह अपनी बैरक में ही पड़ा रहा। एक सप्ताह बाद
डाक्टर ने उसे देखा, परन्तु दूसरे ही दिन वह मर गया।"

जांच समिति के सदस्यों के रोंगटे खड़े हो गए। उन्होंने कभी कल्पना भी नहीं की थी कि जेल की दीवारों के अन्दर किस प्रकार की अलग दुनिया बसती है। समिति एक दिन के लिए आई थी, परन्तु तीन दिन तक गवाहियां लेती रही। जेल अधिकारी राजीव की गवाही नहीं दिलाना चाहते थे, परन्तु बहुत से कैदियों के बयानों में बार-बार राजीव का नाम आया, इसलिए समिति के अध्यक्ष ने स्वयं ही राजीव को बुलाया।

रामलाल की घटना के सम्बन्ध में गवाही देने के बाद राजीव बोला, "इस जेल के बड़े गेट के बाहर आदर्श जेल का जो बोर्ड लगा है, यदि उसे आप ले जाकर सरकार को दे दें, तो आपकी बहुत कृपा होगी। यदि सरकार और कुछ नहीं कर सकती तो कम से कम आदर्श शब्द का अपमान तो नहीं होना चाहिए। मैं जब बाहर था तो बड़े-बड़े नेताओं के भाषणों में कई बार यह सुना करता था कि अब जेलों को सुधार-गृह में बदल दिया गया है। और यह जेल इस प्रदेश की सबसे बड़ी और सबसे बढ़िया जेल कही जाती थी। इस जेल के बाहर एक बड़े बोर्ड पर बड़े-बड़े शब्दों में लिखा है 'आदर्श केन्द्रीय कारागार'। परन्तु आदर्श शब्द केवल उस बोर्ड पर ही है, जेल के अन्दर घृणा, पाप, क्रूरता और पशुता की एक ऐसी घिनौनी दुनिया बसती है, जिसमें समाज पर अधिक अत्याचार करनेवाले अपराधी बनाए जाते हैं। सुधार इसी बात में होता है कि यहां से हर अपराधी पहले से बड़ा अपराधी बनकर निकलता है।

"जेल के हर छोटे-बड़े विभाग में हर चीज की खरीददारी में यहां तक कि कैदियों के खाने-पीने की चीजों में भी रिश्वत का बोलबाला है। गरीब कैदियों से बीड़ियां व साबुन की टिकियों तक की रिश्वत ली जाती है। जो नहीं देते उन्हें किसी न किसी बहाने से पीट-पीटकर अधमरा कर दिया जाता है।

"किसीको नैतिक शिक्षा तो मिलती ही नहीं। यह इतनी बड़ी जेल है, सैकड़ों कैदी हैं। हममें से कितने ही पढ़े-लिखे हैं, परन्तु पढ़ने के लिए कोई पुस्तक नहीं है। हम कैदियों के सामने न तो किसी जेल अधिकारी का आदर्श जीवन है, न नैतिकता का कोई उपदेश है और न कोई पुस्तक है। क्या इस प्रकार भी कभी अपराधियों का सुधार किया जा सकता है ?"

"परन्तु राजीव, जेल तो आखिर जेल है। यदि यहां सब प्रकार की सुविधाएं दे दी गईं तो दंड देने की भावना ही समाप्त हो जाएगी। फिर तो लोग जानबूझकर अपराध करेंगे और जेल में आकर आनन्द का जीवन व्यतीत करेंगे।" एक सदस्य ने कहा।

राजीव बोला, "नहीं महोदय, ऐसा नहीं है। आप इस जेल के अन्दर के कमरों को मत देखिए, यहां की सुविधा और भोजन की बात भी मत सोचिए। जेल क्या होती है, यह आप अनुभव ही नहीं कर सकते! सुविधाएं तो एक तरफ, आप यदि वेतन देकर लोगों को जेल में रखना चाहेंगे तो भी कोई नहीं आएगा। मनुष्य स्वभाव से एक स्वतन्त्र प्राणी है। जीवन की कुछ चीज़ों के लिए मनुष्य बेईमानी कर सकता है, परन्तु अपनी आज़ादी बेचकर जेल में बन्दी होने के लिए कोई तैयार नहीं होगा।"

राजीव की बातों में रुचि लेते हुए अध्यक्ष ने कहा, "राजीव, जो चोरी करता है, किसीकी हत्या करता है, ऐसे लोगों के साथ अच्छा व्यवहार किया भी क्यों जाए? और यदि जेलों में चोरों और डाकुओं को सुविधाएं दे दी गईं तो समाज में अपराध की संख्या बढ़ नहीं जाएगी?"

"नहीं, ऐसा नहीं होगा, क्योंकि मूल स्वभाव से कोई अपराधी नहीं होता। मनुष्य उस परम पिता प्रभु का एक अंश है, जो प्रभु परम पवित्र और सत्-चित्-आनन्द है। आज तक किसी भी मां ने अपनी कोख से चोर व डाकू को जन्म नहीं दिया। जिस प्रकार शरीर अस्वस्थ हो जाता है उसी प्रकार मन भी अस्वस्थ होता है। शरीर के अस्वस्थ हस्पताल में रखे जाते हैं और मन के अस्वस्थ जेल में रखे जाते हैं। परन्तु हस्पताल में मिलती है दवाई, कोमल हृदय नर्सों का मृदुल व्यवहार, डाक्टरों का उपचार और इन जेलों में मिलती है, पंजाबी में दिल तोड़ भद्दी गालियां, हड्डियां तोड़ डालने वाली मार, घृणा, भ्रष्टाचार से भरा वातावरण और पशुओं जैसा दुर्व्यवहार।

"कोई भी अपराधी जानबूझकर अपराध नहीं करता। बहुत कम ऐसे अपराधी होते हैं, जिन्होंने अपराध की नीयत से अपराध किया हो। कौन जानता है जीवन की किन टेढ़ी-मेढ़ी, पेचीदा परिस्थितियों की विकट राहों ने एक भले आदमी को अपराध करने पर विवश किया। महोदय, मैं एक सच्ची बात कह रहा हूं, यदि उन्हीं प्रकार की परिस्थितियों में कभी आप भी फंस

गए होते तो सम्भव है आप भी इसी जेल के कैदी होते। यदि भाग्य हमें उन परिस्थितियों में न ले जाता तो हम भी आपकी तरह एक भले नागरिक होते। अपराध की अधिक जिम्मेदारी उस समाज पर है, जो उन परिस्थितियों को पैदा करता है, जिनमें मजबूर भला इन्सान, अपराध की डगर पर अपने कदम बढ़ाने पर विवश हो जाता है।

"एक सवाल और भी है। क्या जेल में बन्दी हम लोग ही अपराधी हैं? इन दीवारों और सींखचों के बाहर क्या सभी लोग दूध से धुले हैं? यह आकाश-चुम्बी महल, यह आलीशान स्वर्ग के ऐश्वर्य को भी ले जाने वाली हवेलियां, रात के गहरे अन्धेरे में मदमाती व्हिस्की की चुस्कियां, नैतिकता को लजाने वाली रंगीनियां···क्या यह सब कुछ ईमानदारी के पैसों से प्राप्त होता है? जो नेता आज बड़े-बड़े मंचों पर बड़े-बड़े भाषण देते हैं, क्या वह सब ईमानदार हैं? क्या यह सच नहीं कि कल तक के फाकापति एकदम से लखपति हो गए? आज इस समाज में कौन बड़ा नेता, अधिकारी व धनवान है, जो किसी न किसी रूप में चोरी नहीं करता!

"महोदय फर्क यही है कि जेल की इन दीवारों के अन्दर वे अपराधी हैं, जो गरीब हैं, पकड़े गए, अपराधी कहलाए और कैदी बनकर जिन्दगी का बोझ ढो रहे हैं और इन दीवारों के बाहर वे बड़े लोग हैं, जो हमसे भी भयंकर अपराध करने पर भी नेता कहलाए जाते हैं, बड़े लोग कहे जाते हैं और समाज में आदर प्राप्त करते हैं। मैं आपसे इतना ही कहूंगा कि यदि आप समाज को बदलना चाहते हैं तो इन जेलों को बदल डालिए। जब तक ये जेलें अपराधी पैदा करती रहेंगी तब तक समाज में शान्ति नहीं आ सकती।"

राजीव दिल की गहराइयों से बोल रहा था। उसकी बातों में एक टीस थी, एक सच्चाई थी। समिति के सभी सदस्य बड़े ध्यान से उसे सुनते रहे। अपनी कुर्सी से उठते हुए अध्यक्ष ने कहा, "राजीव, हम तुम्हारा और तुम्हारे साथियों का धन्यवाद करना चाहते हैं, जिन्होंने हमें वस्तु-स्थिति को समझने में मदद की है। जेल का कैदी भी एक अच्छा इन्सान हो सकता है, एक सच्ची और अच्छी बात कह सकता है···यह मुझे भी आज ही पता चला। तुम्हारी बातों ने सचमुच हमारी आंखें खोल दी हैं। तुमने जैसे शुरू में कहा था, हम उसके अनुसार जेल के गेट के बाहर लगे 'आदर्श जेल' के नामपट को अपने साथ

नही ले जाएंगे, परन्तु यह विश्वास दिलाते है कि तुम्हारा और अन्य सभी कैदियों का यह संदेश हम सरकार तक अवश्य पहुंचाएंगे। रामलाल की पत्नी को न्याय दिलाने का प्रयत्न करेंगे। मैं व्यक्तिगत रूप से यह विश्वास दिलाता हूं कि जेल में सुधार लाने के लिए सरकार को सलाह ही नही दूंगा, अपितु निरंतर संघर्ष भी करूंगा।"

कुछ दिनों बाद समिति ने सरकार को अपनी रिपोर्ट दे दी। प्रदेश की विधानसभा मे विरोधी दल ने यह मांग की कि रिपोर्ट सभा के पटल पर रखी जाए। सरकार ने इस मांग को रद्द कर दिया। सरकार की ओर से कहा गया कि इसका प्रकाशन जनहित मे नही होगा। इस पर विधानसभा में भावनाएं उत्तेजित हो उठी। विरोधी दल ने विधानसभा में ही इस प्रश्न पर धरना देने की चेतावनी दे दी।

कुछ दिनों के बाद सरकार को झुकना पड़ा और रिपोर्ट सदन के पटल पर रखी गई और फिर सभी समाचार पत्रों मे रोंगटे खड़े कर देने वाली जेल की कहानियां छपी। सरकार को तुरन्त कार्यवाही करनी पड़ी। कुछ अधिकारियों को निलम्बित किया गया, कुछ को उस जेल से बदल दिया गया। रामलाल की पत्नी को उचित मुआवजा दिया गया और रामलाल को इलाज के लिए एक बड़े हस्पताल मे भेजा गया। जेल मे सुधार लाने के लिए सरकार ने एक समिति की स्थापना भी की।

जितने दिन जेल मे जांच समिति के आने की प्रतीक्षा और गवाहियो का क्रम चलता रहा, राजीव का मन उसी तरफ लगा रहा। उसे रेखा व मुन्नो की याद तो आती पर उसके मन व मस्तिष्क को दूसरा विषय घेरे हुए था। अब वह काम समाप्त हुआ तो उसका सारा ध्यान घर की ओर चला गया। वैसे भी अब जेल मे काफी सुख-चैन था। कैदियो के साथ व्यवहार मे भी बहुत अन्तर आ गया था। राजीव तो सारे कैदियो में हीरो बन गया था। अब जेल मे जेल-अधीक्षक का नही, अपितु राजीव का शासन चलता था, परन्तु यह शासन डंडे का न था, प्यार और अच्छे व्यवहार का था।

रेखा के पत्र अब लगभग रस्मी हो गए थे। उसमें प्यार की तड़प तो पहले ही गायब हो चुकी थी। राजीव पत्र पढता तो सोचने लग पड़ता। उसका दिल पत्र पढ़कर कुछ परेशान होता, तभी उसकी बुद्धि उसे समझाने की कोशिश

करती। वह सोचता कि कभी-कभी पत्र लिखा जाए, तो प्यार की बातें लिखी जा सकती है, पर अब जब सारा जीवन ही पत्रों में सिमटकर रह गया है तो रोज़-रोज रेखा लिखती भी क्या रहे! इस तर्क से वह अपने मन को शांत कर लेता। अब रेखा हर मास आती भी नहीं थी। राजीव भी उसे यही लिखता था कि वह इतनी दूर आने का कष्ट न करे, आराम से घर पर सुन्नो की देखभाल करती रहे।

राजीव के बूढ़े माता-पिता को इस घटना का कुछ भी पता न था। राजीव ने उन्हें कुछ भी न बताया था। उसने सोचा था कि इससे उन्हें गहरा दुख होगा और शायद यह उनके दिल तोड़ने का कारण बन जाए। पर जब राजीव को जेल गए काफी समय हो गया तो बात गांव तक पहुंच गई। उन्हें सारी बात पता चल गई। उन्होंने एक सम्बन्धी को राजीव को मिलने भेजा और यह कहलवाया कि जो हो गया है उसे वापस नहीं किया जा सकता। राजीव को धैर्य व ढाढ़स रखने को कहा। उन्होंने यह आग्रह किया था कि ऐसी स्थिति में रेखा और सुन्नो गांव चली आए। इस संदेश से राजीव [illegible] सहारा मिला। रेखा का गांव जाकर मां-बाप के पास रहना रा[illegible] था। वह पहले भी ऐसा ही प्रबन्ध करना चाहता था, पर [illegible] मां-बाप को बताने का साहस न बटोर सका था।

६

रेखा और नीरज अब खूब आनन्द का जीवन व्यतीत कर रहे थे। वे प्रायः इकट्ठे रहते। रेखा अपने घर में बहुत कम खाना बनाती थी। नीरज उसकी सब सुख-सुविधा का ध्यान रखता। यदि कभी रेखा को अपने घर रोटी बनानी भी पड़ती, तो नीरज के घर का नौकर वहां आ जाता था।

जब से नीरज ने रेखा के सौंदर्य की प्रशंसा की थी और उसका मुकाबला हेमामालिनी से किया था, तब से रेखा बिलकुल बदल गई थी। वह अपने में एक नई ताज़गी और एक नई ख्रोज का प्रकाश अनुभव करने लगी थी। नीरज कभी-कभी यह बात फिर दोहरा देता। वह कभी उसकी पतली कमर पर कोई शेर कह देता तो कभी उसके काले बालों की काली घटाओं से तुलना करता। रेखा पहले कुछ शर्माती थी, पर अब उसे यह बहुत अच्छा लगता था। वह ज्यों ही उसे मिलती तो उसकी इच्छा होती कि नीरज उसकी प्रशंसा करे। अब नीरज के बिना अधिक देर रहना भी उसके लिए कठिन हो गया था। कई बार तो नीरज प्रातः उठकर उसके पास आता, उसे जगाता और नौकर से बैड-टी वहीं पर मंगवा लेता। यदि नीरज अधिक देर उससे दूर रहता तो मिलने पर रेखा गिला करती। कई बार नाराज भी हो जाती। नीरज उसे मनाने लगता। सिनेमा तो प्रायः सप्ताह में दो बार वे अवश्य जाते थे। कभी-कभी घूमने भी निकल जाते। कहीं भी पास बैठने का मौका मिलता तो नीरज रेखा के साथ सटकर बैठने की कोशिश करता। किसी चीज को लेते-देते वक्त वह रेखा का हाथ छू देता। रेखा भी छूट दिए जा रही थी और नीरज भी एक-एक कदम आगे बढ़ाता जा रहा था।

जब मुन्नो रेखा की गोद में होती तो नीरज मुन्नो को लेने की अवश्य कोशिश करता। तब वह काफी आगे बढ़ जाता। रेखा की सांसों की परिधि तक उसकी पहुंच हो जाती। रेखा जब हाथ बढ़ा मुन्नो को उसे थमाती तो नीरज की आंखें रेखा को नीचे-ऊपर, जहां-तहां घूरती रहती।

आज दोनों का सिनेमा जाने का कार्यक्रम था। नीरज ठीक समय पर तैयार होकर आ गया। उसका नौकर आया और मुन्नो को अपने घर ले गया।

रेखा भी तैयार हो रही थी। नीरज ने आवाज लगाई, "तो क्या हम वाहर खड़े-खड़े वोर होते रहेंगे?" तभी अन्दर से दौड़ती हुई रेखा वाहर आई, वोली, "क्षमा करना मुझे कुछ देर लगी, पर हां, वाहर क्यों खड़े हैं, अन्दर आओ ना।" उसीके साथ नीरज उसके पीछे-पीछे अन्दर चला गया।

रेखा अपने दोनों हाथ उठाए वाल संवारते वातें करने लगी। नीरज पास खड़े होकर सिगरेट का धुआं उड़ाने लगा। रेखा ने विन्दी लगाई। लिपस्टिक लगाने के लिए कुछ शर्माती-सी नीरज की ओर पीठ करके खड़ी हो गई। शीशे के सामने वह लिपस्टिक से होंठ रंगने लगी। तभी उसके पीछे आकर नीरज खड़ा हो गया और सामने शीशे में देखना शुरू कर दिया। रेखा ने पहले उसे नहीं देखा, ज्यों ही उसकी नजरें उठीं सामने वड़े शीशे में अपने पीछे नीरज को देखकर वह एकदम चौंकी, शरमाई और फिर वलखाते अन्दाज में कह उठी, "आप भी वड़े 'वो' हैं। मैं आपकी तरफ पीठ करके खड़ी हुई और आप हैं कि एकदम शीशे के सामने आ गए।"

"रेखा, क्या करूं? तुम आज वहुत ही सुन्दर लग रही हो। इतनी सुन्दर तुम मुझे पहले कभी नहीं लगी थी।" कहते-कहते नीरज ने उसके कन्धे पर हाथ रखा। रेखा कुछ सम्भली, पर फिर सम्भल न सकी। वह नीरज की ओर मुड़ी, तभी नीरज ने उसकी कमर पर हाथ रखे और फिर क्या हुआ, किसीको कुछ पता नहीं लगा।

कितनी ही देर दोनों एक मेज के पास खड़े आलिंगनवद्ध रहे। ज्यों ही वह मेज हिली, उस मेज पर रखी हुई शीशे में फ्रेम की हुई एक वड़ी फोटो धड़ाम से नीचे गिरी। नीचे गिरते ही फोटो चकनाचूर हो गई। उसकी आवाज से दोनों चौंक पड़े। रेखा अलग हो किनारे खड़ी हो गई।

रेखा के कपड़े अस्त-व्यस्त हो गए थे, होंठों की लाली फीकी पड़ गई थी, माथे की विन्दी मिट-सी गई थी। अव तक सिनेमा का समय वीत चुका था। रेखा मौन थी, उस पर किसी अज्ञात भाव ने काठ-सा मार दिया था। नीरज कुछ देर खड़ा रहा फिर दोनों वैठ गए, कोई कुछ वोला नहीं। मौन तोड़ते हुए नीरज वोला, "रेखा, तुमने आज मुझे जो कुछ दिया है, उसकी मादकता मैं जीवन भर नहीं भूल सकता। मुझे लग रहा है कि मैं अव तुम्हारा ही होकर रह गया हूं।"

रेखा कुछ बोली नहीं, मुस्कराने की कोशिश उसने अवश्य की। नीरज यह कहते हुए बाहर चला गया, "सिनेमा तो अब कल देखेंगे। मैं मुन्नो को भेजता हूं, खाना खाने तुम उधर आ जाना।"

रेखा की स्थिति बहुत अजीब थी। नीरज के जाने पर उसने दरवाजा बन्द किया और मेज की तरफ चली। मेज के साथ टूटी हुई फ्रेम, शीशे के टुकड़े और उन्हीं के बीच एक फोटो पड़ा था। रेखा के कदम डगमगा रहे थे, उसके चेहरे पर कई रंग आकर जा रहे थे। वह मेज के पास जाकर फर्श पर बैठ गई। शीशे के बारीक टुकड़ों को एक कागज में इकट्ठा किया फिर वह फोटो उठाई। यह रेखा और राजीव की विवाह के बाद की इकट्ठी फोटो थी। रेखा कितनी ही देर उसे देखती रही। उसके दिल से एक हूक-सी निकली, 'क्या नीरज के साथ इतनी निकटता राजीव से धोखा नहीं है?' यह चौंककर खड़ी हो गई। उसने दोनों हाथों से अपने वक्ष को कस लिया, कमरे के चारों ओर देखा, फिर दोनों हाथों से सिर पकड़ लिया। उसके दिल में मानो कुछ टूटने लगा। राजीव की याद में वह गीले तौलिये की तरह निचुड़ने लगी। उसकी अन्तरात्मा से कभी कोई पुकार उठती थी और कभी कोई धिक्कार उसे कचोटती।

उसे लगा जैसे दीवारें कुछ बोल रही हैं। उसके कानों में एक आवाज गूंजी, 'किस रास्ते पर बढ़ी जा रही है? राजीव ने तेरे लिए अपने ऊंचे आदर्शों की होली जलाई, तेरी महत्त्वकांक्षाओं को पूरा करने के लिए वह एक भ्रष्ट उच्च अधिकारी 'कैदी' कहलाया और आज घर से दूर एक जेल में यातनाएं भुगत रहा है। और तू क्या कर रही है? नीरज की बाहों में सिमटी जा रही है!'

सोचते-सोचते रेखा विह्वल हो उठी। नीरज के नशीले स्पर्श से भीगी आंखें अब राजीव के लिए बह उठीं। उसकी आंखों के पानी ने फर्श पर गिरे शीशे के टुकड़ों को भिगो दिया। शीशे के टुकड़े उसके आंसुओं से चमक उठे। राजीव और रेखा का फोटो आंसुओं के पानी से भीगने लगा। वहीं बैठी-बैठी वह अकड़-सी गई। तभी बाहर से मुन्नो की आवाज ने उसको चौंका दिया। नीरज का नौकर मुन्नो को छोड़कर यह कहते हुए चला गया कि नीरज खाने पर उसकी प्रतीक्षा कर रहा है।

रेखा हिम्मत करके उठी, बाहर गई और नौकर को आवाज़ दे

"उन्हें कह देना मेरी तबीयत ठीक नहीं है, मैं आज खाना नहीं
...।"

...खा ने दरवाजा बन्द किया। सुन्नो को गोद में लिया और बिस्तर में
...र फूट-फूटकर रोने लगी। बेचारी नन्हीं सुन्नो अपनी मां के इस विचित्र
...हार को देखकर चिल्ला पड़ी। रेखा सम्भली, सुन्नो को सम्भाला, थोड़ी
...देर में सुन्नो सो गई और रेखा विचारों की गहरी, अन्धेरी वादियों में खं...
...ई।

रात भर नींद नहीं आई। उसे लगा नीरज उसे राजीव से अलग करके
...एक भयानक घाटी में लिए जा रहा है। राजीव की याद उसके मन को तोड़ने-
...सी लगी। राजीव की कही बातें उसकी हृत्तन्त्री को गुंजित करने लगी। उसे
याद आया कि जेल जाते समय राजीव ने भरे दिल से कहा था—'रेखा, मैं
जेल जा रहा हूं, मैं तुम्हारे पास अपनी रेखा को अमानत के रूप में रख रहा
हूं। रेखा के लिए ही मैंने सब कुछ किया है। रेखा, तुम मेरी रेखा को सम्भाल
कर रखना, देखना अमानत में ख्यानत न हो'—और याद आते ही रेखा चीख
उठी। चौंककर उठ बैठी, बत्ती जला दी। सामने मेज पर राजीव की फोटो
और टूटी हुई फ्रेम दिखाई दी। उसीके पास एक कागज की पुड़िया में फ्रेम के
शीशे के टूटे हुए टुकड़े देखकर वह सिहर-सी उठी। इसी प्रकार सोते, जागते व
स्वप्न देखते रात का अंधेरा विदा हो गया।

रेखा दो दिन तक नीरज के घर नहीं गई। वह अपने मकान से बाहर ह...
नहीं निकली। एक-दो बार नीरज आया भी पर उसने कोई रुचि नहीं दिखाई...
उसके व्यवहार में कुछ रूखापन आ गया था। नीरज समझ गया। वह भी ...
कुछ समय छोड़ देना चाहता था ताकि रेखा फिर से अपनी पूर्व स्थिति में...
जाए।

नीरज एक धनवान पिता का बिगड़ा हुआ, ऐय्याश पुत्र था। पर उ...
सबसे बड़ी विशेषता यह थी कि उसकी वास्तविक प्रकृति प्राय: छिपी ...
थी। बाहर के व्यवहार में वह सौम्य, निष्कपट व सरल व्यक्ति लगता...
प्रारम्भिक परिचय के दिनों में उसकी असली प्रकृति की झलक भी प्र...
होती थी। उसका असली चेहरा बहुत अन्दर था। वह कभी भी बे-न...

होता था। बातचीत करने व व्यक्तित्व में वह सरलता व शराफत की तसवीर लगता था।

उसका व्यक्तित्व भी बड़ा आकर्षक था। पहली ही मुलाकात में वह अपने प्रभाव की अमिट छाप डाल देता था। जिससे भी उसकी मित्रता होती, वह शुरू में तो उस पर न्योछावर ही हो जाता।

रेखा ने उसके नौकर से उसके सम्बन्ध में इतना तो जान लिया था कि उसकी दो-चार शादी हुई थी। एक पत्नी की मृत्यु हो गई और दूसरी किसी कारण उसे छोड़कर चली गई। यह जानकारी नौकर से बातों-बातों में मिल गई थी। उसके सम्बन्ध में नौकर बात करते भी डरते थे।

नीरज का पिता मर चुका था। लाखों रुपये उसके बैंक में जमा थे। ठगी और धोखा नीरज का धन्धा था। पर उसकी ठगी भी बड़े ऊंचे स्तर की होती थी। वह धनवान मासूम लोगों के हजारों रुपये मार जाता, पर किसीको पता तक न लगता। उसकी जमा पूंजी बढ़ती जाती थी। ब्याज के हजारों रुपये बैंक से उसे आते थे।

पहली पत्नी के मरने के बाद उसने दूसरी शादी की। वह एक धर्म-परायण पतिव्रता स्त्री थी। वह नीरज के अन्य लड़कियों के साथ सम्बन्ध बरदाश्त न कर सकी। उसने नीरज को खूब समझाया, परन्तु वह न समझा। लाचार होकर उसने नीरज को छोड़ दिया और अपने माता-पिता के घर चली गई। तब से नीरज और भी उच्छृंखल हो गया था। नगर की कितनी ही लड़कियों से उसके सम्बन्ध थे। उसके पास लुटाने को धन था और दिखाने को सुन्दर आकर्षक व्यक्तित्व। वह नई-नई कलियों को फुसलाता, मसलता और कभी-कभी कुचल भी देता था। उसकी एक मित्र लड़की की बड़ी संदिग्ध परिस्थितियों में मृत्यु हुई थी। नगर में चर्चा थी कि वह लड़की पहले गर्भवती हुई और उसने नीरज को विवाह करने को कहा। नीरज हर लड़की को शुरू में शादी का विश्वास देकर ही अपनी बांहों में जकड़ता था। वह उसे भी कुछ दिन टालता रहा था। दिन बीतते गए तो लड़की चिन्तित हुई। उसने नीरज को धमकी दी कि या तो वह उसके साथ विवाह करे, नहीं तो वह खुलेआम कह देगी। कुछ ही दिनों के बाद वह लड़की कहीं मरी पाई गई। नगर में चर्चा रही, नीरज पर संदेह व्यक्त किया जाता रहा पर पुलिस नीरज पर हाथ न

की । कोई स्पष्ट सबूत भी न था और नीरज ने पुलिस को सिक्के का
र और बोतलों की धार से मोहित भी कर लिया था ।
माज के प्रतिष्ठित वर्ग से उसका कोई सम्बन्ध न था, पर नगर के लम्पट
उसके पक्के साथी थे । सभी उससे डरते थे । उसकी पीठ के पीछे कुछ भी
है, पर सामने सभी उसका आदर करते थे ।

रेखा के सामने का नीरज कुछ और ही था । उसका असली चेहरा कभी
उसे दिखाई ही नहीं दिया । उस दिन सिनेमा जाते समय की घटना को अब
एक सप्ताह हो चुका था । रेखा ने कुछ समझौता कर लिया था । उसका मन
हल्का हो गया था । उसने सोचा कि यदि दोष है तो उसीका है । नीरज ने
जबरदस्ती तो कुछ भी नहीं किया । फिर उसने एक इन्सान की तरह प्यार ही
तो किया है । वह जिन परिस्थितियों में है, जिस लाचारी में है, उसमें यदि वह
थोड़े प्यार का सहारा तलाश कर ले, तो हर्ज भी क्या है !

उन दिनों अंतर्राष्ट्रीय महिला वर्ष के उपलक्ष में नारी जाति की स्वतंत्रता
की सब तरफ गूंज थी । रेखा ने कुछ प्रगतिशील महिलाओं के लेख पढ़े थे और
भाषण भी सुने थे । उसने अपने मन को समझा लिया था कि आखिर नारी पर
किसी एक ही व्यक्ति का एकाधिकार भी क्यों हो ! उसने अपने मन से सवाल
किया था कि क्या नारी किसी दुकान की विक्रय करने योग्य वस्तु है कि जिसने
एक बार खरीद लिया उसीकी क्रीतदास हो गई ! वह इसी प्रकार के विचारों
में खोई थी कि उसके अन्तर् में कोई बोल उठा, 'राजीव तेरा पति है, ठीक
इससे इनकार कौन करता है ! पर क्या तू नीरज जैसे एक सुशिक्षित पु
को अपना मित्र बनाकर नहीं रख सकती ? यदि द्रौपदी के पांच पति हो स
हैं तो तेरा एक पति और एक मित्र क्यों नहीं हो सकता ? पुराने रूढ़ि
विचारों में रखा ही क्या है !' इसी प्रकार के तर्कजाल से रेखा ने
भावनाओं की वकालत कर उनके हक में मन ही मन निर्णय ले लिया थ

सात दिन की चुप्पी से निरज काफी तड़पा था । रेखा की उपेक्ष
असह्य हो रही थी । उसने सोचा कि उसने असहाय रेखा की कितनी म
उसको कितना सहारा दिया और एक छोटी-सी घटना से वह यूं मुंह
बैठ गई ! उसे उस पर काफी क्रोध आ रहा था और वह अपने असल
आना चाह रहा था ।

आज जब सात दिन के बाद नीरज आया तो रेगा ने एक मुस्कान के साथ उसका स्वागत किया, पर उतनी खुलकर बात न की। वह एक अज्ञात झेंप-सी महसूस कर रही थी। उसने अपने व नीरज के बीच के एकान्त को भंग करने के लिए दूसरे कमरे से मुन्नो को बुला लिया। वह उसीके बहाने अपनी झेंप उतारना चाहती थी।

नीरज समझ गया कि रेगा उसके साथ एकांत में बैठना नहीं चाहती। वह कुछ सोच से बोला, "रेगा, तुम जानती हो मैंने तुम्हें कितना चाहा है, तुम्हारी कितनी सहायता की है! यहां पास-पड़ोस में लोग तुम्हारा अता-पता जानना चाहते हैं, पर मेरे कारण कोई तुम्हारे बारे में कुछ नहीं कहता। मेरी छत्रछाया न हो, तो तुम सबके लिए एक प्रश्न-चिह्न बन जाओ। परन्तु इन दिनों तुम इतनी रूखी हो गई हो कि मेरी निरंतर उपेक्षा करती जा रही हो। रेगा, याद रखो मैं तुम्हारा कितना बड़ा राज···!"

एक झटके के साथ रेगा अपनी कुर्सी से उठी और अपनी उंगलियां नीरज के मुंह पर रखकर उसे चुप कराने लग पड़ी। अन्तिम वाक्यों से तो वह सुन्न ही रह गई। उसके पास बैठते हुए रेगा बोली, "नीरज, तुमने इतना क्यों सोच लिया? क्या चुप रहने का मतलब तुम्हारा अपमान करना है? मैं तो वैसे ही इन दिनों उदास रही। तुमने मेरी उदासी का कारण तो पूछा नहीं, उल्टे नाराज हो गए। मैं तुम्हारा एहसान कभी नहीं भूल सकती। और अब तो तुमने मेरे दिल को भी जीत लिया है। नीरज, मैं तुम्हें···।"

इस बीच मुन्नो अपने खिलौने को लेकर दूसरे कमरे में खेल में व्यस्त हो गई थी।

"पर नीरज, क्या तुम उस राज की मुझे धमकी दे रहे हो?" कुछ गंभीर होकर रेगा ने पूछा।

नीरज सम्भल गया। उसने सोचा इतनी तीखी दवाई की अभी कोई जरूरत नहीं है। रेगा के हाथ को अपने हाथों में दबाते हुए उसे पास बिठाया और बोला, "बस, इतनी-सी बात पर सच मान लिया। जानेमन, हम तो आपके गुलाम हैं। देखो रेगा, कोई भ्रम अपने मन में मत रखो। तुम राजीव की पत्नी हो, ठीक है। जब राजीव जेल से आएगा तब मैं स्वयं तुम्हें उसके पास सौंप दूंगा। तुम्हें उसके साथ रहते देखना चाहूंगा, पर तब तक हम दोनों

के नाते रहें तो क्या हर्ज है ?"

र फिर कितनी ही देर रेखा नीरज में सिमटती-सी वहीं वैठी रही। वात से वड़ा संतोष हुआ। उसे नीरज के साथ सम्बन्धों में औचित्य लगा। एक सप्ताह से उलझन भरा मन आज हल्का हो गया।

नीरज मेज़ पर रखी विना शीशे व फ्रेम के राजीव के फोटो को उठाकर ा, "मैं इसे वाज़ार से फ्रेम करवाकर लाऊंगा। इसे ठीक से सम्भालकर ना। आगे से इस मेज के किनारे अधिक हलचल भी न करना। राजीव री परम मित्र रेखा का पति है, उससे मेरा भी सम्बन्ध है।"

"फ्रेम करवाने का काम कल होगा नीरज! आज उस दिन का वकाया... यानी सिनेमा...।" नीरज का हाथ पकड़ते हुए रेखा ने फरमाइश की। नीरज तैयार ही था। सुन्नो को नौकर के पास छोड़ दोनों सिनेमा चले गए।

रास्ते में नीरज ने दो दिन पहले की वात शुरू कर दी। नीरज ने उसे अपने घर वुलाया था और वह कोई वहाना वनाकर नहीं आई थी। उसने कहा, "वम्बई से मेरे एक निकट के मित्र श्री मेहरा जी आए थे, वह एक अच्छे फिल्म निर्माता हैं। मैंने उनसे तुम्हारे सौंदर्य व तुम्हारी कला की चर्चा की थी। वे तुमसे मिलना चाहते थे, इसलिए तुम्हें वुलाया था। रेखा, मुझे विश्वास है कि फिल्म की दुनिया में तुम अपना उज्जवल भविष्य वना सकती हो। खैर...।"

"अरे नीरज, तुम मुझे स्वयं आकर वता देते तो मैं अवश्य आ जाती मुझे क्या मालूम था! क्या वही मेहरा जी थे, जिनकी तुम प्रायः वातें कर थे? क्या वे चले गए?" चौंककर रेखा ने पूछा।

"हां, वे चले गए। यहां पर कुछ दिन के लिए आए थे। मैंने उन्हें व आग्रह किया तो वे वोले कि यदि तुम्हारी तवीयत ख़राव न होती तो वे वातचीत कर लेते। जाती वार कह गए थे कि पत्र लिखना और फिल्म काम करने की इच्छा हो तो फोटो भेजना।" नीरज कह ही रहा सिनेमा हाल आ गया। टिकट लेकर वे अन्दर चले गए।

आज रेखा का प्यार मानों उमड़ पड़ा था। वह नीरज के पास वैठी थी। अभी न्यूज़ रील चल रही थी। नीरज के कानों के पास ले जाकर रेखा वोली, "नीरज, तुम आज ही मेहरा जी को पत्र लि

नहीं क्यों अब मेरे दिल में फिल्मों में काम करने की लालसा हो रही है। यह
श्रेय तुम्हें ही है कि तुमने मुझमें यह प्रतिभा देखी है।" नीरज ने उसका हाथ
दबाया और 'हां' भर दी।

चित्रपट पर ज्यों ही हीरोइन किसी प्रभावशाली मुद्रा में आती रेखा का
मन कल्पना के पंख लगाकर कहीं दूर उड़ जाता। वह सोचती उसके सौंदर्य
में क्या कमी है! नीरज ठीक ही तो कहता है। यदि नीरज के कहने से एक
बार मेहरा जी उसे काम करने का मौका दे दें तो एक ही फिल्म में वह चमक
जाएगी। राजीव के जेल से छूटने से पहले-पहले वह एक हीरोइन बन जाएगी।
अपार धन सम्पत्ति उसके कदमों पर होगी। इसी प्रकार की बातें सोचते-
सोचते वह सपनों में खो चुकी थी।

दोनों वापस घर पहुंचे। रेखा अपने घर चली गई। वह अभी दरवाजा
खोलकर अन्दर गई ही थी कि नीरज मुन्नी को उठाए वहां आ पहुंचा। मुन्नी
सो चुकी थी, उसे बिस्तर पर लिटा दिया। नीरज जाने लगा तो रेखा ने
उसका हाथ पकड़कर उसे बिठा दिया। उठते हुए नीरज ने कहा, "मैं कपड़े
बदल कर आता हूं, तब तक तुम भी कपड़े बदल लो।" नीरज बाहर गया
ही था कि पीछे से रेखा ने आवाज लगाई, "नौकर को कहकर भोजन भी यहीं
मंगवा लेना।"

दोनों ने वहीं भोजन किया। फिर रेखा बातों में खो गई। नीरज ने
रेखा के फिल्मी भविष्य की बड़ी ही आकर्षक तस्वीर उसके ख्यालों की दुनिया
में बना दी थी। जब से नीरज ने यह नया विचार दिया था तभी से रेखा
वह पहले वाली रेखा न रही थी। अब वह खूब बन-ठनकर रहती, हर बार
नई साड़ी बदलती, उसकी ब्लाऊज के आधे बाजू भी गुम हो गए थे तथा
कमर से ऊपर की यात्रा भी ब्लाऊज ने काफी पूरी कर ली थी।

बातें करते-करते काफी रात हो गई। आसमान में बादल उमड़ आए थे।
अब कुछ बूंदा-बांदी भी हो रही थी। नीरज जब घर चलने लगता तो रेखा
उसे थोड़ा रुकने को कह देती। नीरज बैठ जाता और बातों में खो जाता।
वह फिर जाने लगता तो रेखा उसे फिर रोक लेती। रात के बारह बज चुके
थे। अलसाई आंखों से देखते हुए नीरज ने अंगड़ाई ली और कहा, "रेखा,
रोकना ही है तो पूरी रात के लिए क्यों नहीं रोकती।"

नीरज वहीं सो गया।
किए न आज ! वाहर वर्षा भी हो रही है।"
छ दिन के वाद रेखा ने नीरज को फिर याद दिलाई कि वह वम्बई
जी को पत्र लिखे। मेहरा जी को भेजने के लिए रेखा का फोटो चाहिए
नीरज रेखा को लेकर एक स्टूडियो में गया। रेखा के कई प्रकार के पोज़
गए। उसके वाद नीरज ने कहा, "हमारे साथ भी एक-दो पोज़ हो जाए।
ल्मी कैरियर के वाद हमारी क्या याद रहेगी !" रेखा मान गई। नीरज के
य सटकर बैठी हुई, हाथ पकड़े हुए, वातें करते हुए कुछ पोज़ खींचे गए।
नमें से कुछ वढ़िया फोटो चुनकर नीरज ने वम्बई में मेहरा जी को भेज
दिए।

अव रेखा पूरी तरह से नीरज के वश में थी। नीरज को उसके पास रखे
धन का भी पता लग गया था। उसने रेखा को फुसलाया कि घर में धन
रखना अच्छा नहीं है। यदि वह एक कम्पनी के हिस्से ख़रीद ले तो उसे हर
मास कमिशन के रूप में कुछ आय हो जाएगी और उसी आय से रेखा के घर का
खर्च चलता रहेगा। रेखा को यह योजना जंच गई। उसने पांच हज़ार रुपये
नीरज को दे दिये। कुछ ही दिन के वाद नीरज ने उसे पांच सौ रुपये ला
दिए और कहा कि उस पांच हजार रुपये की कमिशन आई है। रेखा और
ललचाई, उसने वीस हज़ार रुपये नीरज के पास दे दिए। हर मास नीरज कुछ
सौ रुपये उसे लाकर दे देता था। रेखा समझती थी कि इस प्रकार वह धन
का उचित उपयोग कर रही है।

७

जेल में राजीव के दिन अब अच्छे निकल रहे थे। जेल अधिकारी उ
विशेष सम्मान करते थे। उनसे डरते भी थे। हरगोविन्द तथा दो
वार्डर नौकरी से निकाले जा चुके थे। जेल के हिसाव-किताव की विशे
हो रही थी। कैदियों के प्रति व्यवहार वहुत वदल गया था।

हाईकोर्ट में सूरत की अपील मंजूर हो गई, उसे वरी कर दि
ज्यों ही यह समाचार आया वह खुशी से नाच उठा। अव उसे जे

किया जाना था। राजीव ने सूरत को अपने घर का पता दिया, एक विशेष पत्र रेखा के लिए लिखा। जबानी भी रेखा के लिए उसने बहुत कुछ कहा। सूरत से राजीव को विशेष स्नेह हो गया था, इसलिए उसने यह आग्रह किया कि सूरत उसके घर जाकर सारी कुशल समाचार उसे बताए। सूरत ने उसे विश्वास दिलाया कि वह उसके घर जाकर जिस भी प्रकार सहायता की आवश्यकता होगी, वह पूरी करेगा।

सूरत रिहा हो अपने घर पहुंच गया। कुछ ही दिन के बाद वह राजीव के घर गया। वह ज्यों ही बरामदे के अन्दर आया उसने देखा कि रेखा हाथ में पर्स पकड़े कहीं जाने की तैयारी कर रही है। सूरत भोलाभाला शर्मीली आदत वाला था। वह कितनी ही देर चुपचाप खड़ा रहा। सामने से नीरज का नौकर आया तो उसने उससे बात की। उसने बताया कि वही रेखा है। सूरत आगे बढ़कर रेखा से बात करना ही चाहता था कि दूसरी तरफ से नीरज आया, रेखा नीरज को देखते ही तेज कदमों से उसके साथ बाहर चली गई। सूरत पीछे दौड़ा उसने बात करनी चाही, पर नीरज ने कहा कि वह सिनेमा जा रहे हैं अभी बात करने का समय नहीं है।

सूरत हतप्रभ-सा वहीं खड़ा रहा। वह उन दोनों को जाते हुए निहारता रहा। उसे समझ नहीं आया कि रेखा के साथ वह पुरुष कौन है! उसने सोचा कि राजीव तो इसी बात पर आंसू बहाता रहता था कि रेखा अकेली सूनेपन में तड़पती होगी, पर यहां तो वह एक तितली की तरह उड़ती जा रही है। उसे अपनी आंखों पर विश्वास नहीं हुआ। उसने इधर-उधर देखा, सोचा कि कहीं वह गलत पते पर तो नहीं आ गया।

मकान के बरामदे में नीरज का नौकर मुन्नी को खिलौनों से खिला रहा था। सूरत उसके पास जाकर बातें करने लगा। नौकर ने एकांत देखकर सूरत से सब कुछ कह दिया। सूरत कितनी ही देर बैठ उस नौकर से रेखा की बातें सुनता रहा। मुन्नी कमरे के अन्दर जाकर खेल रही थी। तभी मुन्नी अन्दर के कमरे में खेलते-खेलते एक किताब लेकर बाहर आई। उस नौकर ने मुन्नी के हाथ से किताब लेनी चाही। मुन्नी रो पड़ी, किताब धरती पर गिर गई। गिरते ही उसमें से कुछ फोटो फर्श पर बिखर गए। ये फोटो वही थे, जो उस दिन स्टूडियो में रेखा ने नीरज के साथ खिंचवाए

फोटो देखकर सहम गया। उसने आंख बचाकर कुछ फोटो अपने
ल लिए कुछ देर इधर-उधर की बातें करके वह वहां से चला

८

नीरज ने रेखा को इस बार पिछले धन के हिस्सों का बहुत अधिक कमिशन लवाया। उसे यह भी बताया कि एक नई कम्पनी बन रही है। उसके हिस्से रीदने के लिए बड़ा रश है। नीरज ने कहा कि वह स्वयं ५० हजार रुपये के हस्से खरीदने के लिए दिल्ली जा रहा है। नीरज ने रेखा को बातों ही बातों में विश्वास दिलाया कि उस कम्पनी में लगे धन की बहुत अधिक कमिशन मिलने वाली है, इसलिए उसके हिस्सों की होड़ लगी है। नीरज दिल्ली जाने की तैयारी करने लगा।

दूसरे दिन नीरज को बुलाकर रेखा ने कहा, "तुम नई कम्पनी के हिस्से खरीदने दिल्ली जा रहे हो। मैं सोचती हूं, क्यों न मेरे लिए भी तुम हिस्सों का प्रबन्ध कर दो।"

"बिलकुल ठीक है। यदि तुम लेना चाहो तो मैं तुम्हारे लिए भी पूरी कोशिश करूंगा। पर मुझे दिल्ली जल्दी जाना पड़ेगा। अभी टेलीफोन आया है कि बहुत लोग उस कम्पनी के हिस्से खरीदना चाह रहे हैं, कहीं ऐसा न हो मेरे जाने से पहले ही सारे हिस्से बिक जाएं। पर हां, तुम कितने हिस्से लेना चाहोगी।"

"जैसा तुम ठीक समझो।"

"रेखा, वैसे तो यहां पर सब सुरक्षित है तो भी आजकल घर में अधि धन रखना बुद्धिमता की बात नहीं क्योंकि वह धन तो जीवन के लिए ख खतरा बन सकता है। तुम कुछ धन यहीं बैंक में अपने खर्च के लिए रख बाकी के हिस्से खरीद लो। दिल्ली में मेरे एक प्रभावशाली मित्र हैं, उ सिफारिश से मैं तुम्हारे लिए अधिक से अधिक हिस्से खरीदने की क करूंगा।"

रेखा को बात समझ में आ गई। वह स्वयं भी अधिक धन घर में रखने से चिन्तित रहती थी। नीरज के साथ रेखा बैंक में गई। वहां रेखा के नाम से १० हजार रुपये जमा करा दिए। वापस आकर रेखा ने बाकी ६० हजार रुपये नीरज को दे दिए और उसका हाथ पकड़कर कहा, "नीरज, जानते हो तुम पर मेरा कितना भरोसा है! मैंने अपना सब कुछ तुम्हें समर्पित कर दिया है। यह धन मेरे पास उनकी अमानत है। सम्भलकर जाना और इस धन के पूरे हिस्से खरीदकर लाना। मुझे अपने से भी अधिक तुम पर भरोसा है नीरज!"

रेखा का हाथ दबाते हुए नीरज ने उसे विश्वास दिलाया। वह रुपया ब्रीफकेस में डालकर नीरज चला गया। लगभग एक सप्ताह के बाद वह वापस आया। रेखा के नाम से शेयर सर्टीफिकेट्स तथा ६० हजार रुपये की रसीद भी नीरज ले आया था। रेखा आश्वस्त हो गई।

सायंकाल का समय था। नीरज दौड़ता हुआ रेखा के कमरे में आया, "रेखा बधाई हो।"

"कैसी बधाई?" हैरानी से रेखा ने पूछा।

"यह तो स्वयं ही पढ़ लो।" नीरज ने एक पत्र रेखा के सामने रख दिया। वह पत्र बम्बई से मेहरा जी का था। उन्होंने लिखा था कि यदि रेखा फिल्मों में काम करना चाहती है तो वह प्रारम्भिक इन्टरव्यू के लिए बम्बई आए। यह भी लिखा था कि रेखा के फोटो देखकर वे बड़े प्रभावित हुए हैं। उसके फोटो से उन्हें विश्वास हो गया है कि उसमें एक सफल कलाकार की महान सम्भावनाएं निहित हैं। विशेषकर उसकी काली आंखों की नीलाहट लिए गहराई से तो वे बड़े ही प्रभावित हुए हैं। पत्र में और भी बहुत कुछ लिखा था।

एक फिल्म निर्माता के पत्र में अपनी प्रशंसा पढ़कर रेखा के पैर जमीन पर न रहे, वह आसमान में उड़ने लगी। उसकी आंखों के सामने अपना उज्ज्वल फिल्मी भविष्य नाचने लगा। उसने पत्र पढ़ा, दोनों हाथों से बन्द किया दोनों हथेलियों की बीच पत्र को लेकर नीरज के पास जाकर खड़ी हो गई और कहने लगी, "नीरज मैं किन शब्दों में तुम्हारा धन्यवाद करूं। यदि तुम्हारे जैसा पारखी न मिलता तो मेरी प्रतिभा इसी प्रकार नष्ट-भ्रष्ट जाती। अब तुम्हारे कारण मुझे अपना एक नया भविष्य दिखाई दे रहा है।" नीरज ने एक हाथ रेखा के कन्धे पर रखा और दूसरे हाथ से उसके कपोल थपथपा दिए।

सप्ताह बीतते गए। रेखा और नीरज बहुत आगे निकल गए थे। दिखावे की थोड़ी बहुत मर्यादाएं भी मिट चुकी थी। रेखा और नीरज भग एक पति-पत्नी की तरह का जीवन व्यतीत करते थे। रेखा के लिए बीते युग की एक धुन्धली स्मृति की बारीक लकीर मात्र रह गया था। याद आती थी, पर जैसे आती थी वैसे ही चली जाती थी। वह याद न से तड़पाती थी और न ही रूलाती थी। उसके जीवन की रिक्तता अब तरह नीरज ने भर दी थी। इतना ही नहीं उसके व्यक्तित्व में अंतर्निहित ान कला व प्रतिभा का पारखी नीरज अब पूरी तरह उसके तन-मन को पने में जकड़े हुए था। रेखा एक कोमल लता की तरह अपने निकट के नीरज रूपी वृक्ष से पूरी तरह लिपट चुकी थी। वह यह भूल चुकी थी कि उस लता को अंकुरित करने के लिए राजीव अपने सर्वस्व की बाजी लगाकर जेल में दिन काट रहा है।

सूरत कुछ दिन घर के काम में उलझ गया। परन्तु जब उसे राजीव की याद आती तो वह रेखा के बदले जीवन की बात सोचकर चौंक जाता। पहले सूरत ने सोचा कि राजीव को कुछ न बताया जाए। वह जानता था कि सच्चाई का पता लगने पर राजीव पागल हो उठेगा। परन्तु बहुत सोचने के बाद उसने निर्णय किया कि एक सच्चे मित्र के नाते उसका यह कर्तव्य है कि राजीव को सारी बात बता दे। शायद अपने किसी सम्बन्धी को बीच में डालकर राजीव अब भी अपनी लुटती दुनिया को सम्भाल सके।

सूरत ने राजीव को पत्र लिखा कि वह उसके घर पर गया था। स कुशल है पर पूरा समाचार वह स्वयं आकर कहेगा। राजीव ने पत्र पढ़ा उसे कुछ संदेह हुआ कि ऐसी क्या बात है, जिसे सूरत पत्र में नहीं लिख सक राजीव चिन्तित रहने लगा और घर की याद उसे पहले से ज़्यादा सताने ल

राजीव सोचता कि रेखा अब उसे उस उत्सुकता से मिलने नहीं अ अपने हाथ से पकाकर उस तरह मीठे पकवान नहीं लाती, उसके पत्र पहले की तरह प्यार की गर्मी नहीं है। कितनी ही आशंकाएं उसके मस्तिष्क को घेरने लग पड़ती। जैसे-तैसे वह अपने मन को समझ कोशिश करता। उसने एक दिन सूरत को पत्र लिखा कि वह आ

सम्बन्ध में बड़ा चिन्तित है। उसने सूरत से आग्रह किया कि वे जेल में आकर उससे मिले और वापसी बार उसके घर होकर आए।

सूरत फिर राजीव के घर गया, पर उस समय भी घर में उससे बात करने के लिए किसी के पास समय न था। रेखा नीरज के साथ बम्बई जाने की तैयारी में लगी हुई थी। सामान बांधा जा रहा था। रेखा अपने घर का आवश्यक सामान बंधवाकर नीरज के घर भेज रही थी। मुन्नी को नीरज के घर पर ही छोड़ना था। गाड़ी छूटने का समय हो रहा था। रेखा अपने कपड़े बदलने अन्दर चली गई।

सूरत को सामने वही नौकर दिखाई दिया। नौकर ने पूछा कि वह रेखा से मिलना चाहता है, तो सूरत ने इनकार कर दिया। उसे सन्देह था कि यदि वह बात करने का यत्न भी करेगा तो रेखा इतनी व्यस्तता में उससे बात नहीं करेगी। सूरत वहां से चला गया। कुछ देर इधर-उधर घूमने के बाद वह फिर वापस आया। तब तक रेखा व नीरज जा चुके थे। रेखा के मकान में ताला लगा था। सामने नीरज के मकान के बरामदे में मुन्नी नौकर के साथ खेल रही थी। पास में ही नीरज की बूढ़ी मां बैठी कुछ पढ़ रही थी।

सूरत उस तरफ चला गया। पहले कुछ झिझका, फिर उस बुढ़िया से उसने अपना परिचय दिया। राजीव की बात कह सुनाई। बुढ़िया उत्सुक हो गई। सूरत को पास बिठाया चाय पिलाई और राजीव के सम्बन्ध में उससे जानकारी लेने लगी।

सब सुनने के बाद बुढ़िया ठंडी आह भरकर बोली, 'बेटा, क्या बताऊं, नीरज है तो मेरा पुत्र, पर है कुलघाती! उसने परिवार की सारी परम्परा को मिट्टी में मिला दिया। कितनी ही लड़कियों के जीवन उसने नष्ट किए। मुझे रेखा के बारे में कुछ सन्देह था। एक-दो बार रेखा से मैंने पूछा तो उसने कुछ नहीं बताया। नीरज को तो मैं कुछ पूछ ही नहीं सकती थी। मेरे द्वारा उससे कोई बात पूछने पर वह मुझे मारने तक को तैयार हो जाता है। मैं क्या करती, मेरी कौन सुनता था! अच्छे भले परिवार में दो बार उसका विवाह किया था। पर शायद हमारे परिवार का नीरज से ही अन्त होना था। नीरज के पिता एक हरे भरे सम्मानित परिवार को छोड़ गए थे। एक ही पुत्र था। कहते थे नीरज मेरा मान है। चार चांद लगाएगा मेरे परिवार को। क्या था,

ए, पर मुझे छोड़ गए इस कलंकी की करतूतें देख घुट-घुट दम तोड़ने
हाय भगवान ! बेचारा राजीव जेल से छूटकर क्या देखेगा !" कहते-
वुढ़िया की आंखों में आंसू आ गए ।

सूरत वोला, "मां जी, राजीव तो देवता है। अपनी पत्नी की इच्छा पूरी
ने के लिए ही उसने गवन किया। अव वह जेल में और पत्नी वम्वई की सैर
र। वड़ा अन्याय हो गया। मैं राजीव को जाकर यह सव कुछ कैसे
ताऊंगा !"

वुढ़िया ने सूरत को समझाया कि राजीव अन्धेरे में न रहे, इसलिए सारी
वात उसे वता देनी चाहिए। वुढ़िया ने रेखा के सम्वन्ध में सारी वातें उसे वता
दीं। यह भी वता दिया कि रेखा का सारा धन किसी न किसी वहाने से नीरज
ने उड़ा लिया है और वम्वई भी उसे धोखे से ले गया है।

९

जेल की ओर वढ़ते हुए सूरत के कदम डगमगा रहे थे। राजीव कितनी
आशाएं लगाकर उसकी प्रतीक्षा कर रहा होगा। परन्तु उसे क्या कुछ वताना
पड़ेगा ! वह सोचता कि राजीव को यह सव कुछ न वताए तो भी अच्छा है
शायद राजीव इस आघात को न सह सके। सूरत चलता-चलता रुक जा
और पीछे मुड़ने लग पड़ता। तभी उसे यह विचार आता कि अपने मित्र
अन्धेरे में रखकर वह उसके साथ द्रोह तो नहीं कर रहा। उसका मन क
कि वह और कुछ तो नहीं कर सकता, पर राजीव को समय रहते सारी
तो वता सकता है।

वड़े गेट के आर-पार राजीव और सूरत खड़े थे। राजीव का हृदय
पत्नी रेखा व सुन्नो के सम्वन्ध में सूरत के मुंह से कुछ सुनने के लिए ल
था। वह सूरत के हाथ की ओर देख रहा था। उसने सूरत के हाथ
पत्र दिया था और उस पत्र के उत्तर में वह रेखा के पत्र की प्रतीक्ष

जेल से लिखे पत्र पढ़कर भेजे जाते हैं, इसलिए किसी भी पति
पत्नी के लिए पत्र लिखना कठिन होता है। पत्र पढ़ा जाएगा, इसी

पत्र लिखने का सारा उन्माद, उमड़ा हुआ प्यार, गुदगुदाते हृदय का स्पन्दन पानी के बुलबुले की तरह बैठ जाते हैं। जिन्हें वर्षों जेल में रहना होता है, उनका प्यार भी कैद होकर रह जाता है। इस बात से राजीव को बड़ी खीझ होती थी। पति-पत्नी का सम्बन्ध ऐसा है, जो लोगों की नजरों को सहन नहीं कर सकता। पिछले दिनों को याद करके राजीव कितना कुछ रेखा को लिखना चाहता था पर जेल में उसकी भी इजाजत नहीं थी। राजीव सोचता कि अपराध तो उसने किया है, पर दंड उसका प्यार भी भोग रहा है।

राजीव जब से जेल में आया था पहली बार उसने दिल खोलकर रेखा को पत्र लिखा और सूरत के हाथ उसे भेजा था। वह पत्र किसीकी नजरों से नहीं गुजरना था, इसलिए उसने उस पत्र में सब कुछ लिखा था। पूरे चार दिन लगाए थे पत्र लिखने में। कठिनाई से कागज लिए थे, बारीक-बारीक लिखा था। अपने हृदय के प्यार की सारी गहराईयों को शब्दों में उतार दिया था। प्रेम के विशाल आकाश को शब्दों की सीमा में बांध दिया था। कितने ही बीते मादक क्षणों की याद दिलाई थी। जेल में आने के बाद तीन वर्षों में पहली बार उसे अपनी रेखा से उस कागज के माध्यम से मिलने का यह मौका मिला था। उसने सोचा, फिर शायद कभी पत्र ले जाने के लिए कोई सूरत न मिले, इसलिए उसने अपना पूरा हृदय कागज पर अंकित कर दिया था।

राजीव सूरत की ओर देख रहा था। सूरत का चेहरा मायूस था। राजीव उसकी मायूसी को देखकर एकदम चौंक गया। सूरत ने मौन तोड़ा। पर इधर-उधर की बातों में उलझ गया। उससे सच बात कही नहीं जा रही थी। जब राजीव ने आग्रह किया कि उसके पत्र के उत्तर में रेखा ने पत्र दिया है या नहीं तो सूरत आंखें झुकाए चुप खड़ा रहा।

"भाई राजीव, मुझे क्षमा करना, मुझसे कुछ नहीं कहा जा रहा।" यह कहते हुए सूरत ने एक पत्र राजीव के हाथ में थमा दिया। राजीव पहले खुश हुआ, परन्तु ज्यों ही उसकी दृष्टि पत्र पर पड़ी, उसने चौंककर पूछा, "अरे यह तो मेरा ही पत्र है! तो क्या रेखा वहां पर नहीं थी?"

"थी तो वहीं, पर मुझसे बात न हो सकी।"

"क्या तुमने बताया नहीं कि तुम मेरा सन्देश लेकर आए हो?"

सूरत चुप था।

सूरत, तुम बोलते क्यों नहीं ?"

सूरत दोनों हाथों से सलाखों को पकड़कर धरती की तरफ देख रहा

"सूरत, मुझे यह पहेली समझ नहीं आ रही। तुम मेरे घर गए, रेखा वहीं थी, फिर मेरा यह पत्र दिए बिना तुम क्यों चले आए ?" राजीव की आंखें आंसुओं में डूबने लगी थीं। सूरत ने अपने को सम्भाला, साहस बटोरा और सारी बात राजीव को कह सुनाई। सूरत सारी बात सुनाए चला जा रहा था और राजीव दोनों हाथों में सिर थामकर रो रहा था। पर जब उसने यह सुना कि रेखा नीरज के साथ फिल्मी कैरियर के लिए बम्बई चली गई है और उसका सारा धन नीरज ने उड़ा लिया है तो उसके आंसू पथरा-से गए और आंखों से पानी भी बन्द हो गया।

सूरत ने अपनी जेब से एक फोटो निकाला और राजीव के हाथ में दिया। राजीव ने ज्यों ही उसको देखा उसकी रही सही चेतना भी पत्थर हो गई।

राजीव पत्थर की मूर्ति की तरह गेट के साथ सटकर बैठ गया। सूरत कुछ कहता, तो राजीव न उसे सुनता था और न उत्तर देता था। सूरत ने अपने हाथ से उसे एक-दो बार हिलाकर बात करनी चाही पर राजीव जैसे वहां था ही नहीं।

"राजीव, मैं समझता हूं तुम्हारे लिए यह बहुत बड़ा आघात है। पर देखो, अभी भी बहुत कुछ सम्भल सकता है। मैं पूरी कोशिश करूंगा, तुम दिल मत तोड़ो।" सूरत ने बड़ी दिलासा दिया।

बड़ी कठिनाई से राजीव ने अपने आपको सम्भाला, आंखें नीचे कीं और बोला, "सूरत, मैं तुम्हारा यह एहसान जीवन भर नहीं भूल सकता। मैं बिलकुल अन्धेरे में था। हे भगवान, यह क्या से क्या हो गया ! मुझे भिजवाकर रेखा यह सब कुछ क्या कर रही है ! अच्छा सूरत, भगवान सुखी रखे। मैंने तो जीवन जी लिया, अब तो एक क्षण भी जीवित रहने की मेरी इच्छा नहीं।" इन शब्दों के साथ वह उठा और डगमगाते कदमों से कोठरी की ओर चल दिया।

राजीव की दुनिया मानों भाप बनकर उड़ी जा रही थी। उसकी त की बगिया को किसीने क्रूर हाथों से रौंद डाला था। सूरत ने उसे

दिया था। समझाने की कोशिश की थी। पर वह भी क्या करता ! कुछ कहने की भी बात न थी। सहानुभूति की रस्म पूरी कर दी उसने। राजीव धैर्य धरे या साहस करे तो किस बात पर ! उसका तो सब कुछ लुट चुका था।

राजीव अपनी बैरक में पड़ा रहा। उसने किसीसे बात न की। एक-दो बार उसने रेखा को अपना लिखा वह पत्र पढ़ा। वह पत्र रेखा तक पहुंच ही नहीं पाया था। सूरज का दिया वह फोटो भी देखने की कोशिश की। बड़ा साहस बटोरना पड़ा उसे। जिस अन्दाज में रेखा नीरज के हाथ पकड़े खड़ी थी, वह अन्दाज एक विषैले सांप की तरह उसे काटने लगा। वह बार-बार अपनी आंखें मलने लगा। उसे विश्वास ही नहीं होता था। वह सोचता, सूरज की बात गलत भी हो सकती है, पर यह फोटो...यह गलत कैसे हो सकता है ! कैदियों ने बार-बार पूछा तो सिर दर्द कहकर कम्बल सिर पर लिए राजीव लेटा रहा।

रात के पहर पर पहर बीतने गए। घड़ियाल की आवाज होती तो उसे लगता कोई उसकी छाती पर चोट कर रहा है। 'सब भाई...सब अच्छा' की गूंज गूंजती तो वह सोचता उसकी लुटी दुनिया का उपहास उड़ाया जा रहा है। सेंद के खोदने की 'घर-घर' की ध्वनि आती तो उसे लगता उसके अरमानों की कब्र खोदी जा रही है। बैरक के बाहर जल रही ट्यूब के प्रकाश पर दृष्टि जाती तो उसे लगता कि उसके संजोए सुनहरे सपनों की चिता जल रही है।

वह रात भर सो न सका। करवटें बदलता रहा। करवटें तो वह पहले भी कई बार बदलता रहता था, नींद तो पहले भी उसे नहीं आती थी, पर तब वह रेखा के रंगीन सपनों में व उसके प्यार के नशे में खोया रहता था। वह स्मृतियों की दुनिया में कल्पना के पंख लगाकर उड़ता था, अपनी रेखा से मिलता था, उससे प्यार की मनुहारें करता, बीते दिनों की यादों को दोहराता और अपने भविष्य का सुनहरा ताना-बाना बुनता था ! पर आज नींद न आने की बात ही कुछ और थी।

समय किसीकी प्रतीक्षा नहीं करता। राजीव की प्रतीक्षा भी नहीं की उसने। प्रातः हुई, शाम हुई और दिन बीतने गए। पर अब राजीव वह राजीव न रहा था। वह अन्दर से टूट रहा था। छीज रहा था। उसका जीवन नैरा-

ां से पिघलते बर्फ की तरह बहा जा रहा था । वह घण्टों चुपचाप बैठा
। उसकी स्मरणशक्ति खोने लगी, उसे अब कुछ याद नहीं रहता था ।
उसे जेल के साथ, जेल प्रशासन के साथ, कैदियों के जीवन सुधारने के
कोई रुचि न रही थी । खोया-खोया, लुटा-लुटा-सा राजीव अब लुटे-
जीवन के भार को घसीटे जा रहा था । वह बीमार रहने लगा । डाक्टर
देखा, दवाई भी दी, पर उसका असली रोग न कोई जानता था और न
सी के पास उसकी दवाई थी ।

१०

नीरज रेखा को लेकर बम्बई पहुंच गया । नीरज भांप गया था कि रेखा काफी धन लेकर आई है । दोनों एक बढ़िया होटल में ठहर गए । नीरज ने फोन किया तो पता लगा कि मेहरा जी किसी काम से बाहर गए हैं व एक सप्ताह के बाद आने वाले हैं । एक सप्ताह तक रेखा के सम्बन्ध में कोई बात नहीं हो सकती थी । रेखा व नीरज बम्बई की सैर करने लगे । नीरज को धन व सौंदर्य दोनों मिल गए थे, जिन्हें वह दोनों हाथों से लुटा रहा था और रेखा अपने उज्ज्वल फिल्मी भविष्य के सपनों में खोई आंखें मूंद कर उसके साथ थी । इसी प्रकार एक सप्ताह बीत गया ।

नीरज ने पता किया । मेहरा जी लौट आए थे । उसने टेलीफोन
बात की और समय निश्चित किया । दूसरे दिन प्रातः नीरज और रे
मेहरा जी के पास मिलने गए । उनका घर कहीं और था, कार्यालय भी
और था, पर वह मुलाकात एक बड़े होटल में रखी गई थी ।

मेहरा जी की उमर ढलती-सी थी, पर शरीर स्वस्थ और सुडौल, रंग
और व्यक्तित्व बहुत प्रभावी था । नीरज की उनसे गहरी मित्रता थी
तपाक से मिले, बिठाया, कुशल समाचार, चाय आदि हुई । इधर-उ
बातों के बाद मेहराजी ने अपनी फिल्मों की बात शुरू की, "नीरज, तु
हो आजकल फिल्मों में एक्टिंग के लिए कितना रश है । बड़ा संघ
पड़ता है इसके लिए । स्वयं अपनी प्रतिभा व परिश्रम से अपनी जग

पड़ती है। जिस नई फिल्म के लिए मैंने रेखा के बारे में सोचा है, इसके लिए दो-तीन नाम और भी हैं। निर्देशक को अपने मत का बनाना होगा।"

"देखिए मेहरा जी, मैं कुछ नहीं जानता, जैसे भी हो रेखा जी की प्रतिभा को भी आपको ही उचित स्थान दिलाना है। मैं तो और किसीको जानता नहीं और आप पर मेरा पूरा भरोसा है। आप हैं फिल्म निर्माता और रेखा जी हैं एक कलाकार। दोनों की मुलाकात करवा दी है, अब मेरा कोई विशेष काम नहीं।"

"क्या मतलब ?"

"मुझे वैसे भी एक मित्र के यहां जाना है, आप दोनों बात करें, मैं हो आता हूं।" नीरज ने रेखा से आज्ञा ली। रेखा ने सहर्ष स्वीकार कर लिया। नीरज चला गया।

मेहरा काफी देर रेखा से इधर-उधर की बात करता रहा। उसने रेखा को खड़े होने के लिए कहा। उसके शरीर की बनावट, कमर का पतलापन तथा कद आदि का निरीक्षण करता रहा। रेखा ने बड़ी नम्रता से कहा, "मेहरा साहब, फिल्मों में काम करने की मेरी तीव्र इच्छा है। कितने ही दिनों से यह अरमान मैंने अपने मन में संजोया है। मेरी तो आप जैसे फिल्म निर्माता तक क्या पहुंच होती, यह तो नीरज जी ने मुझपर कृपा की है कि मैं आप तक पहुंच गई। अब यदि आप भी मुझपर कृपा करेंगे तो मैं अपनी मनोकामना पूरी कर सकूंगी। मेहरा जी, देखिए मुझे निराश न करना।"

"रेखा जी, आपने प्रथम मिलन में ही अपने व्यक्तित्व की मुझपर छाप डाल दी है। सोचता हूं इतनी बड़ी प्रतिभा आज तक क्यों छिपी रही! नीरज सचमुच पारखी है। मैं इतना प्रभावित हुआ हूं कि आपको सचमुच चाहने लग पड़ा हूं।" धीरे से निकट सरकते हुए मेहरा ने कहा।

रेखा अब आसमान पर थी। नीरज को तो उसने जीता ही था, पर मेहरा पर भी उसका जादू चल गया। वह मन ही मन प्रसन्न हो रही थी। उसने सोचा, यदि मेहरा सचमुच उसे चाहने लग पड़े तब तो उसका फिल्मी भविष्य हिमालय की तरह अटल है। रेखा फिल्मी जीवन के लिए व्याकुल-सी हो चुकी थी। उसे उसीके स्वप्न आते थे।

मेहरा उसके और निकट आ गया। वह पहले ही कह चुका था कि वह
चाहने लगा है। रेखा ने पहले कुछ झिझक-सी प्रकट की, फिर उसी प्रकार
झौता कर लिया, जैसे नीरज के साथ किया था।

रात के नौ बज चुके थे, अब फिर मेहरा ने फिल्मों की बात शुरू की।
तने में नीरज आ गया। मेहरा ने कहा, उसने रेखा को देख लिया है, वह
उसके बारे में फिल्म निर्देशक से बात करेगा। रेखा व नीरज चले गए।

रात अपने होटल में पहुंचकर रेखा ने नीरज से शाम को मेहरा के साथ
हुई घटना की चर्चा की तो नीरज बोला, "रेखा, क्या बिना मूल्य दिए भी
संसार में कोई बड़ी चीज़ प्राप्त होती है? फिर जितनी महान प्राप्ति, उतनी
ही अधिक मूल्य भी चुकाना पड़ता है। देखो रेखा, बिना बलिदान के कोई भी
महान कार्य सम्पन्न नहीं होता। त्याग और बलिदान तो जीवन की महान
सफलता की कुंजी है। कल्पना करो, जब तुम फिल्म हीरोइन बन जाओगी,
अखबारों में तुम्हारे फोटो छपेंगे, तुम्हारा इंटरव्यू लेने के लिए बड़े-बड़े पत्र-
कार तड़पा करेंगे, सब ओर तुम्हारी चर्चा होगी, तुम लाखों दिलों की धड़कन
बन जाओगी, तुम्हारे कदमों की थिरकन पर लाखों आंखें बिछ जाएंगी। रेखा,
सोचो तो सही वह कितनी बड़ी उपलब्धी होगी। अच्छा, एक बात बताओ,
उस समय तुम्हें क्या इस बात की याद रहेगी कि ज़िन्दगी के सफर में कभी
नीरज भी तुम्हें मिला था? तब मैं तुम्हें मिलने के लिए तुम्हारे सेक्रेटरी
समय लेने बाहर खड़ा रहा करूंगा।"

और दोनों खिलखिलाकर हंस पड़े। नीरज ने रेखा को धरती पर टि
नहीं दिया। उसने प्रशंसा भरे शब्दों से उसे एकदम सातवें आसमान
पहुंचा दिया, जहां से रेखा को सारी दुनिया बिलकुल छोटी-सी दिख रही

बम्बई में लगभग एक मास तक रेखा को कई जगह इंटरव्यू देने
मेहरा के अतिरिक्त दो और फिल्म निर्माता नीरज के परिचित थे।
भी रेखा से मिलाया गया। उस मिलन का भी उसे वही मूल्य चुकाना
कभी-कभी उसे शक भी होने लगता, पर नीरज पर उसका विश्वास
और नीरज अपनी कुशल बुद्धि से उसे समझा भी देता था। उस ए
उसका विश्वास कई बार हिला, पर नीरज ने उसे सम्भाल लिया।
जेल में बन्दी राजीव की याद आंधी की तरह आई, पर रेखा ने

उन्हें उसे वापस कर दिया।

रेखा अब पूर्ण आधुनिका बन गई थी। नीरज ने उसे समझा दिया था कि बम्बई तो ऐश्वर्य की नगरी है ही, पर फिल्मी दुनिया तो सौंदर्य का एक अलग संसार है। रेखा को अपना व्यक्तित्व निखारकर रखना होगा ताकि निर्माता और निर्देशक उससे प्रभावित हों। उसने उसे बताया था कि स्क्रीन पर उसी लड़की को लाया जा सकता है, जो चेहरे की एक ही झलक में, कमर की एक ही लचक में लाखों दिलों को तड़पा दे। धन तो रेखा के पास था ही, उसने नये-नये कपड़े बनवाए, ब्यूटी सैलूनों में गई, सौंदर्य प्रसाधन खरीदे, हर प्रातः घण्टों वह शृंगार करती। वह नीरज को दिखाती। नीरज उसकी प्रशंसा करता।

नीरज के मित्र व निर्माता उन्हें पार्टियों में बुलाते। वहां शराब के दौर भी चलते थे। नीरज ने उसे समझाया था कि एक आधुनिका के लिए यह भी आवश्यक है कि वह शराब के जाम पिए भी और पिलाए भी। जब पार्टी में नहीं जाना होता तो नीरज कमरे में ही शराब ले आता और दोनों घुलकर पीते।

रेखा जितना धन लाई थी वह धीरे-धीरे समाप्त होने लगा। अब उसके पास वापस पहुंचने तक का किराया ही बचा था। वह चिन्तित हुई। एक शाम उसने कुछ गुस्से से नीरज को कहा, "नीरज, मैंने तुम पर कितना भरोसा किया है, तुम्हें अपना सब कुछ दे दिया। अपना राज भी बताया, पर देखो, एक मास बीत गया, बीस हजार रुपये खर्च हो गए, पर कोई निर्माता फिल्म का काम देने का नाम तक नहीं लेता। कितने इंटरव्यू दे चुकी हूं। बेचारी गुन्नो भी अकेली क्या सोचती होगी!" गुन्नो की याद ने रेखा के दिल की ममता को छेड़ दिया, वह रो पड़ी। नीरज कुर्सी पर आराम से बैठा सिगरेट का धुआं छोड़ रहा था।

"नीरज, कहीं तुम मुझसे धोखा तो नहीं कर रहे, सच बताओ? मैं तुम्हें मित्र समझकर कितना विश्वास करती हूं!" कहते-कहते रेखा फूट-फूट-कर बिलख पड़ी।

"वाह रेखा, मुझे तुमसे यह आशा नहीं थी। हर बड़े काम में असफलता के क्षण भी आते हैं। याद रखो, हर ठोकर आदमी को आगे बढ़ने का संदेश,

। सफलता की मंज़िल असफलताओं के कितने ही पड़ाव पार करने के
ाती है । घबराओ मत रेखा, मुझ पर विश्वास रखो, तुम्हारा उज्ज्वल
व्य मुझे नज़र आ रहा है । हर बात में समय लगता है । तुम रसोई
ाय बनाने जाती हो । चाय के एक कप को बनाकर अपने होंठों तक
ाने में भी समय लगता है, फिर इतने महान भविष्य को क्या कुछ क्षणों
बनाया जा सकता है ! देखो रेखा, तुमने बीज बो दिया है, वह अंकुरित
हो रहा है । मेहरा जी अपनी दो फिल्मों के निर्देशकों से तुम्हारे नाम की
सिफारिश कर चुके हैं । तुम्हारा नाम एक फिल्म में हीरोइन के लिए और
दूसरी में सह-हीरोइन के लिए विचाराधीन है । उस छोटे से मकान से निकल-
कर आज रेखा का नाम एक हीरोइन के लिए विचाराधीन है, क्या यह कम
उपलब्धी है ? इतने थोड़े से समय में जो कुछ हमने प्राप्त कर लिया वह वर्षों
लगाकर अन्य लोग प्राप्त नहीं कर पाते । और फिर मेहरा जी तुमसे इतने
प्रसन्न हैं व तुमसे इतना प्यार करते हैं कि मुझे भी कभी-कभी इर्ष्या होने
लगती है ।"

कहते-कहते नीरज ने उसे अपनी बाहों में भर लिया और खिलखिला कर हंस पड़ा । अब तक रेखा का संदेह हवा हो गया था । नीरज पर उसके विश्वास के उखड़ते पत्थर उसकी बातों के सीमेंट से फिर से जुड़ गए थे । रेखा फिर उसी मस्ती में शराब के जाम पीने व पिलाने लगी । सोते समय नीरज ने कहा कि दूसरे दिन वह प्रात:काल ही मेहरा जी से मिलकर दो टू
बात करेगा ।

दूसरे दिन नीरज मेहरा से मिलने गया । रेखा प्रतीक्षा में रही । नी
ने आकर बताया कि मेहरा ने पूरा विश्वास दिलाया है । उसने कहा है
दोनों फिल्मों में से किसी एक में रेखा को अवश्य ही काम मिलेगा । पर कि
कारणों से उन फिल्मों का निर्माण कुछ विलम्ब से होगा । मेहरा ने उसक
लिख लिया है । वह एक मास के भीतर उन्हें सूचना देंगे ।

रेखा के अन्तर् में एक बार फिर संदेह के धुएं की रेखा उभरी, पर
के विश्वास दिलाने पर वह फिर आश्वस्त हो गई । दोनों बम्बई से
चले आए । नीरज दिल्ली में उतर गया । उसने कहा कि वह एक
से मिलकर दो दिन बाद आएगा । रेखा अम्बाला आ गई ।

रेखा जब घर पहुंची, तो जेल के अधीक्षक का तार उसकी प्रतीक्षा कर रहा था। तार में लिखा था कि राजीव कई दिन बिमार रहा, फिर मानसिक रोग से पीड़ित रहा और अब पागल हो गया है। उसे पागलखाने भेज दिया गया है।

रेखा की रगों का लहू एक बार रुक गया। आसमान पर उड़ती चिड़िया मानों एक ही झटके में धरती पर गिर पड़ी। बम्बई की सारी रंगीनियां मायूसियों में बदल गईं। वह इतने दिनों में छोटी मुन्नी को अभी मां का प्यार भी न दे पाई थी... कि यह वज्र-सा समाचार उसे सुनने को मिला।

इतने में उसका भाई विनोद आ पहुंचा। विनोद रेखा को मिलने इस बीच दो बार आ चुका था। राजीव के पागल होने का समाचार जेल के अधिकारियों ने राजीव के माता-पिता व उसके ससुराल के घर भी भेज दिया था। विनोद छुट्टी पर आया तो वह रेखा के पास भी आया। उसे नीरज की मां से रेखा के बम्बई जाने का समाचार मिला, तब वह राजीव को भी मिल आया था।

अचानक अपने भाई को देख रेखा को सहारा-सा अनुभव हुआ। विनोद को रेखा के बारे सब मालूम हो गया था।

"विनोद, यह देखो जेल से तार आया है। यह तो मुझ पर वज्र ही गिर पड़ा है।" रेखा ने विनोद को तार दिखाते हुए कहा।

"रेखा, मुझे क्या दिखाती हो! मैं तो राजीव को दो-बार मिल आया हूं। मुझे तुम्हारे बारे में भी सब पता चल गया है। तुम्हें पता है तुम्हारे बारे में सब पता लगने के कारण ही राजीव पागल हुआ। उसका एक साथी कैदी सूरत रिहा होकर आया था। राजीव ने सूरत के पास तुम्हारे लिए एक लम्बा पत्र दिया था। सूरत यहां आया, तुम नीरज के साथ सिनेमा जाने में व्यस्त थी। वह तुम्हें न मिल सका। वह पत्र देने के लिए दोबारा आया तो तुम सामान बांधकर बम्बई जा रही थी। तुम्हारा व नीरज का फोटो उसके हाथ लग गया। सूरत ने सब कुछ राजीव को बता दिया, वह फोटो भी दे दिया और तभी से राजीव वह राजीव न रहा। रेखा, क्या कर डाला तूने यह सब?" विनोद कहते-कहते तिलमिला उठा। रेखा पत्थर की तरह खड़ी थी। अब वह

। सफलता की मंज़िल असफलताओं के कितने ही पड़ाव पार करने के
ाती है । घबराओ मत रेखा, मुझ पर विश्वास रखो, तुम्हारा उज्ज्वल
य मुझे नज़र आ रहा है । हर बात में समय लगता है । तुम रसोई
य बनाने जाती हो । चाय के एक कप को बनाकर अपने होंठों तक
ाने में भी समय लगता है, फिर इतने महान भविष्य को क्या कुछ क्षणों
वनाया जा सकता है ! देखो रेखा, तुमने बीज बो दिया है, वह अंकुरित
हो रहा है । मेहरा जी अपनी दो फिल्मों के निर्देशकों से तुम्हारे नाम की
फारिश कर चुके हैं । तुम्हारा नाम एक फिल्म में हीरोइन के लिए और
ूसरी में सह-हीरोइन के लिए विचाराधीन है । उस छोटे से मकान से निकल-
कर आज रेखा का नाम एक हीरोइन के लिए विचारधीन है, क्या यह कम
उपलब्धी है ? इतने थोड़े से समय में जो कुछ हमने प्राप्त कर लिया वह वर्षो
लगाकर अन्य लोग प्राप्त नहीं कर पाते । और फिर मेहरा जी तुमसे इतने
प्रसन्न हैं व तुमसे इतना प्यार करते हैं कि मुझे भी कभी-कभी इर्ष्या होने
लगती है ।"

कहते-कहते नीरज ने उसे अपनी बाहों में भर लिया और खिलखिला
कर हंस पड़ा । अब तक रेखा का संदेह हवा हो गया था । नीरज पर उसके
विश्वास के उखड़ते पत्थर उसकी बातों के सीमेंट से फिर से जुड़ गए थे ।
रेखा फिर उसी मस्ती में शराब के जाम पीने व पिलाने लगी । सोते समय
नीरज ने कहा कि दूसरे दिन वह प्रातःकाल ही मेहरा जी से मिलकर दो टूक
बात करेगा ।

दूसरे दिन नीरज मेहरा से मिलने गया । रेखा प्रतीक्षा में रही । नीर
ने आकर बताया कि मेहरा ने पूरा विश्वास दिलाया है । उसने कहा है
दोनों फिल्मों में से किसी एक में रेखा को अवश्य ही काम मिलेगा । पर कि
कारणों से उन फिल्मों का निर्माण कुछ विलम्ब से होगा । मेहरा ने उसका
लिख लिया है । वह एक मास के भीतर उन्हें सूचना देंगे ।

रेखा के अन्तर् में एक बार फिर संदेह के धुएं की रेखा उभरी, पर
के विश्वास दिलाने पर वह फिर आश्वस्त हो गई । दोनों बम्बई से
चले आए । नीरज दिल्ली में उतर गया । उसने कहा कि वह एक
से मिलकर दो दिन बाद आएगा । रेखा अम्बाला आ गई ।

रेखा जब घर पहुंची, तो जेल के अधीक्षक का तार उसकी प्रतीक्षा कर रहा था। तार में लिखा था कि राजीव कई दिन बिमार रहा, फिर मानसिक रोग से पीड़ित रहा और अब पागल हो गया है। उसे पागलखाने भेज दिया गया है।

रेखा की रगों का लहू एक बार रुक गया। आसमान पर उड़ती चिड़िया मानो एक ही झटके से धरती पर गिर पड़ी। बम्बई की सारी रंगीनियां मायूसियों में बदल गई। वह इतने दिनों में छोटी मुन्नी को अभी मां का प्यार भी न दे पाई थी···कि यह वज्र-सा समाचार उसे सुनने को मिला।

इतने में उसका भाई विनोद आ पहुंचा। विनोद रेखा को मिलने इस बीच दो बार आ चुका था। राजीव के पागल होने का समाचार जेल के अधिकारियों ने राजीव के माता-पिता व उसके ससुराल के घर भी भेज दिया था। विनोद छुट्टी पर आया तो वह रेखा के पास भी आया। उसे नीरज की मां से रेखा के बम्बई जाने का समाचार मिला, तब वह राजीव को भी मिल आया था।

अचानक अपने भाई को देख रेखा को सहारा-सा अनुभव हुआ। विनोद को रेखा के बारे सब मालूम हो गया था।

"विनोद, यह देखो जेल से तार आया है। यह तो मुझ पर वज्र ही गिर पड़ा है।" रेखा ने विनोद को तार दिखाते हुए कहा।

"रेखा, मुझे क्या दिखाती हो! मैं तो राजीव को दो-बार मिल आया हूं। मुझे तुम्हारे बारे में भी सब पता चल गया है। तुम्हें पता है तुम्हारे बारे में सब पता लगने के कारण ही राजीव पागल हुआ। उसका एक साथी कैदी सूरत रिहा होकर आया था। राजीव ने सूरत के पास तुम्हारे लिए एक सन्देश भेज दिया था। सूरत यहां आया, तुम नीरज के साथ सिनेमा जाने में व्यस्त थी। वह तुम्हें न मिल सका। वह पत्र देने के लिए दोबारा आया तो तुम सामान बांधकर बम्बई जा रही थी। तुम्हारा व नीरज का फोटो उसके हाथ लग गया। सूरत ने सब कुछ राजीव को बता दिया, वह फोटो भी दे दिया और तभी से राजीव वह राजीव न रहा। रेखा, क्या कर डाला तूने यह सब?" विनोद कहते-कहते तिलमिला उठा। रेखा पत्थर की तरह खड़ी थी। अब वह

र पकड़कर रोने लगी। उसका दिल मानो पिघलकर आंखों के रास्ते बहने
ा।

"रेखा, जबसे राजीव ने वह फोटो देखा और उसे तुम्हारे व नीरज के सम्बन्धों का पता लगा, तभी से उसकी स्मृति खोने लगी थी। कई बार वह रात को रेखा-रेखा पुकारता और चिल्लाने लग पड़ता। कभी-कभी सुन्नो को याद भी करता। रात को उठकर चलने लग पड़ता। दिन में ही भाग पड़ता। सामने शून्य में देख 'रेखा-रेखा' पुकारता और उसे पकड़ने दौड़ पड़ता। वे दिन उसके बहुत बुरे बीते। जेल में सभी कैदी उससे सहानुभूति रखते थे। सभी उसे समझाते, पर वह राजीव ही कहां रहा था। उसके विश्वास की चट्टान के टूटे टुकड़ों के नीचे उसकी चेतना की कली मसली गई थी। और अब वह पागलखाने में एक पागल है।"

विनोद फिर बोला, "रेखा, तुम मेरी बहन हो अन्यथा दिल करता है राजीव सरीखे देवता को गबन करने के लिए मजबूर करके जेल भेजने तथ स्वयं बाहर उसके प्यार के साथ धोखा करने वाली रेखा का गला घोंट दूं क्या तुम्हें उसे जेल भेजकर भी चैन न आया, जो पागलखाने भेजने तक तुम पीछे मुड़कर ही न देखा!"

रेखा अब विनोद के कदमों पर पड़ी फूट-फूटकर रो रही थी। फि दुनिया का सारा नशा उसकी आंखों से गायब हो चुका था, वह बोली, " मुझे बचा लो। यदि तुम मेरा गला घोंट सको, तो सचमुच तुम्हारी बड़ी होगी। मैं अब जीना नहीं चाहती। किसके लिए जीऊंगी? ओह! मैं कितनी दूर निकल गई थी!"

रात को विनोद ने रेखा को समझाया। यह तय हुआ कि कम्पनी में लगाया धन तुरन्त निकलवाया जाए। हिस्से बेचे जाएं और र दिल्ली ले जाकर बढ़िया इलाज करवाया जाए।

दूसरे दिन नीरज का पता किया, पर वह अभी आया नहीं थ बताया कि २० हजार रुपये तो वैसे ही उसने कहीं दिए थे और हिस्से खरीदे थे। रेखा ने शेयर सर्टीफिकेट्स विनोद को दिखाए लेकर दूसरे दिन दिल्ली चला गया। सारी दिल्ली उसने खो नाम की कम्पनी उसे कहीं न मिली। विनोद समझ गया कि नी

हड़प गया है। उसने पुलिस से बात की, पता लगा की उसी नाम से बहुत से लोगों को ठगा गया है। दिल्ली पुलिस के पास पहले ही मामला दर्ज था। खोज शुरू हो गई।

रेखा प्रतीक्षा में थी कि विनोद दिल्ली से धन लेकर आएगा और वे राजीव के पास जाएंगे। वह पिछले तीन दिन से सोई न थी। उसकी आंखें लाल हो सूज गई थीं। शरीर थककर चूर था। थोड़ा-थोड़ा ज्वर भी था। उसने भोजन भी नहीं किया था।

विनोद चार अन्य आदमियों के साथ घर आया। विनोद ने कहा कि वे उसके मित्र हैं और नीरज से मिलना चाहते हैं। रेखा अभी बता ही रही थी कि नीरज अभी आया नहीं है कि सामने से नीरज का नौकर आया और कहने लगा, "मालिक रात बड़ी देर से आए हैं। आपको बुला रहे हैं। कह रहे हैं, जब तक आप नहीं आओगी वह चाय नहीं पिएंगे।"

विनोद ने उस नौकर को कहा कि नीरज के कुछ मित्र उन्हें मिलना चाहते हैं। रेखा को वहीं रुकने को कहकर विनोद उन मित्रों के साथ नीरज के घर चला गया। नीरज उनमें से विनोद के सिवा और किसीको नहीं जानता था। नीरज ने उन्हें बिठाया। विनोद ने एक सैनिक की तरह सीधी बात कर दी, कहा, "नीरज, वे ६० हज़ार रुपये के जो सर्टीफिकेट तुमने रेखा को खरीदकर दिए हैं वे तो जाली हैं। मैं दिल्ली हो आया हूं, उस नाम की वहां कोई कम्पनी नहीं है। अब यह बताओ कि जो २० हज़ार रुपये तुमने रेखा से लिए थे वे कहां हैं?"

नीरज सब सुनकर स्तब्ध रह गया। थोड़ा सोचकर उठा और दूसरे कमरे में जाते हुए सबको प्रतीक्षा करने को कहा। तभी विनोद के एक साथी ने उठकर नीरज को हाथ से पकड़ा और कुर्सी पर बिठाते हुए बोला, "नीरज, अब तुम इधर-उधर नहीं जा सकते।"

"तो क्या आप दिन-दहाड़े डाका डालने आए हैं?" नीरज ने क्रोध से कहा।

"डाका डालने नहीं एक धोखेबाज डाकू को देखने आए हैं।" विनोद ने कहा।

नीरज बोला, "विनोद, मैंने यदि धन लिया है तो तुमसे नहीं । तुम मुझसे
का हिसाब नहीं पूछ सकते ।"

विनोद अपने साथियों को वहीं बिठाकर रेखा को लेकर आ गया । उसने
स्ते में रेखा को सारी बात बता दी थी ।

रेखा तिलमिलाकर बोली, "नीरज, तुमने कितना बड़ा धोखा किया ।
सचमुच वह ६० हज़ार के सर्टीफिकेट झूठे हैं । और वे २० हज़ार रुपये तुमने
किसको दिए ? तुमने मेरे विश्वास को इस प्रकार तिरस्कृत किया ! तुमने मुझे
बड़ा धोखा दिया । नीरज, मेरा पति पागलखाने पहुंच गया है, भगवान के लिए
लिए अब तो मुझ पर रहम करो ! मेरा धन मुझे लौटाओ ताकि मैं अपने पति
का इलाज करा सकूं ।"

रेखा बिलख रही थी । नीरज की बूढ़ी मां कमरे के बाहर आकर सुन रही
थी । नौकर भी चौकन्ना हो गया था । नीरज समझ गया कि अब वह गुप्त
रहस्य सबको पता चल गया है । उसे कुछ समझ नहीं आ रहा था कि वह क्या
कहे ! वह कुछ देर चुप रहा, जब विनोद ने उसे बार-बार पूछा तो बोला,
"मुझे कुछ मालूम नहीं ।"

"अच्छा उठो, चलो तुम हमारी हिरासत में हो ।" एक व्यक्ति ने कहा ।

"और यह रहा तुम्हारी गिरफ्तारी का वारंट !" दूसरे ने एक कागज
उसके मुंह के आगे रख दिया । अब नीरज समझा कि सादी वरदी में वे
पुलिस के आदमी थे ।

कुछ ही देर में नीरज को हथकड़ियां पहनाई गईं । विनोद के साथ आ
पुलिस के लोग नीरज को लेकर चले गए । विनोद रेखा के साथ उसके घ
चला आया ।

रेखा खिड़की के पास चुपचाप खड़ी थी । उसकी आंखों में आंसू न
थे । सुन्नो पास खड़ी कुछ कहती रही, पर रेखा ने कुछ सुना ही नहीं विन
चुपचाप कुर्सी पर बैठा था । कितनी ही देर बीत गई । विनोद उठा
रेखा को अन्दर ले आया । रेखा कुछ लड़खड़ाई, फिर गिर पड़ी । विनो
उसे उठाकर बिस्तर पर लिटा दिया ।

उसे समझाते हुए विनोद बोला, "रेखा, मैं तो सोच भी नहीं सकत
कि तुम इस प्रकार कर सकती हो । इतना धन भी गंवाया और राजी

भी कहां भिजवा दिया ! राजीव के इलाज के लिए बहुत धन चाहिए। खैर,. अब सोचने से कुछ नहीं होगा।"

रेखा कुछ बोली नहीं, चुपचाप पड़ी रही। उसकी आंखों से एक पर्दा बिलकुल हट गया था और पश्चाताप की आग उसे जलाए जा रही थी। उसका अन्तर् टूट रहा था। उसके जीवन, सौंदर्य व धन की लुटी दुनिया के खंडहर उसका उपहास उड़ा रहे थे। बिस्तर पर लेटी हुई आखें बन्द किए वह कभी-कभी सोचने की कोशिश करती—'राजीव क्या सोचता होगा ? उसके माता-पिता और सब क्या कहेंगे ?' तभी रेखा को राजीव के वे शब्द याद आ गए जो उसने जेल जाते समय कहे थे, 'रेखा, मैं अपनी रेखा तुम्हारे पास अमानत के रूप में रख रहा हूं, इसे सम्भाल कर रखना, देखना अमानत में ख्यानत न हो…' इन शब्दों को याद करते ही वह जोर की चीख मारकर बिस्तर से उठ बैठी। विनोद दौड़कर उसके पास आया और उसे जाकर बिस्तर पर लिटा दिया।

"रेखा, जो लुट गया उसे तुम वापस नहीं ला सकती, जो बचा है उसे सम्भालो। तुम्हें मुन्नो के लिए जिन्दा रहना है। चिन्ता मत करो, मुझसे जो भी बन पड़ेगा मैं तुम्हारी सहायता करूंगा।" शायद ये विनोद के ये शब्द रेखा के कानों तक नहीं पहुंचे। वह सामने की दीवार पर पथराई आखों से देख रही थी।

विनोद रेखा व मुन्नो को लेकर अपने घर चला आया। रेखा सम्भली नहीं। उसकी हालत दिन प्रतिदिन खराब होती गई। मुन्नो अब अपने नाना के साथ ही रहती थी।

और एक दिन; विनोद रेखा को लेकर उसी पागलखाने में आया। जिस कमरे में राजीव बन्द था; उसके साथ के दूसरे कमरे में रेखा को भी बन्द कर दिया गया; क्योंकि रेखा भी अब पागल हो चुकी थी।